# शंका-समाधान

(भाग-4)

लेखक-संपादक

परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

# शंका-समाधान
## भाग-4

◆ लेखक-संपादक ◆

परम शासन प्रभावक-जैन शासन के महान् ज्योतिर्धर
पूज्यपाद *आचार्यदेव श्रीमद् विजय रामचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.* के
तेजस्वी शिष्यरत्न, बीसवीं सदी के महान् योगी,
निःस्पृह शिरोमणि पूज्यपाद पंन्यासप्रवर
**श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य**
के कृपापात्र चरम शिष्यरत्न मरुधररत्न, गोड़वाड़ के गौरव,
प्रवचन-प्रभावक, परम पूज्य आचार्यदेव
**श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.**

**210**

प्रकाशक

**दिव्य संदेश प्रकाशन**

C/o. सुरेन्द्र जैन, 205, सोना चेंबर्स,
507-509, जे.अेस.अेस. रोड, चीरा बाजार,
सोनापुर गली के सामने, मरीन लाईंस (E),
मुंबई-400 002. **Tel. 022-2203 45 29**
**Mobile : 9892069330**

आवृत्ति : • मूल्य : 60/- रुपये • विमोचन : दि. 7-2-2020
प्रतियाँ : 3250 • स्थल : आराधना भवन, चैन्नाई, (तामिलनाडु)

## आजीवन सदस्य योजना

आजीवन सदस्यता शुल्क - 3000/- रु.

- आप जैनधर्म के रहस्य-जैन इतिहास-जैन तत्त्वज्ञान-जैन आचार मार्ग, प्रेरणादायी कथाएँ आदि का अध्ययन करना चाहते हों तो आज ही आप दिव्य संदेश प्रकाशन मुम्बई की आजीवन सदस्यता प्राप्त कर लें। सदस्य बनते ही अध्यात्मयोगी निःस्पृह शिरोमणि स्व. पूज्यपाद पंन्यासप्रवर **श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्यश्री** एवं उन्हीं के चरम शिष्यरत्न प्रवचन प्रभावक परम पूज्य ***आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म. सा.*** द्वारा लिखित उपलब्ध 10 पुस्तकें दी जाएगी और अर्हद् दिव्य संदेश मासिक तथा भविष्य में हिन्दी भाषा में प्रकाशित पुस्तकें घर बैठे प्राप्त होगी। आप आजीवन सदस्यता शुल्क मुंबई या बैंगलोर के पते पर दिव्य संदेश प्रकाशन-मुंबई के नाम से चैक व ड्राफ्ट से भेजें।

## प्राप्ति स्थान

**1. चेतन हसमुखलालजी मेहता**
भायंदर (M.S.)
M. 9867058940

**2. प्रवीण गुरुजी,**
C/o. श्री आत्म कमल लब्धिसूरि जैन पुस्तकालय
श्री आदिनाथ जैन टेंपल,
चिकपेठ, बेंगलोर-560 053.
M. 9036810930

**3. राहुल वैद,**
**C/o. अरिहंत मेटल कं.,**
4403, लोटन जाट गली,
पहाड़ी धीरज, सदर बाजार,
दिल्ली-110 006.
M. 9810353108

**4. चंदन एजेन्सीज**
मुंबई, M. 9820303451

## *आजीवन सदस्यता शुल्क*

***Rs. 3000/- भिजवाने का पता एवं पुस्तक-प्राप्ति-स्थान :***

**(1) दिव्य संदेश प्रकाशन, C/o. सुरेन्द्र जैन,**
205, सोना चेंबर्स, 507-509, जे.ऐस.ऐस. रोड, चीरा बाजार,
सोनापुर गली के सामने, मरीन लाईंस (E), मुंबई-2. **T. 022-40020120**

**(2) प्रकाश बड़ोल्ला,** 52, 3rd Cross, शंकरमाट रोड, शंकरपुरा,
बैंगलोर-560 004. Tel. (O.) 4124 7478 M. 8971230600

# प्रकाशक की कलम से....

मरुधर रत्न, गोड़वाड़ के गौरव, मधुर-प्रवचनकार एवं हिन्दी साहित्यकार **पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** द्वारा हिन्दी भाषा में आलेखित **210वीं पुस्तक 'शंका-समाधान-भाग-4'** का प्रकाशन करते हुए हमें अत्यंत ही हर्ष हो रहा है ।

स्वाध्याय के पाँच प्रकार में दूसरा भेद है–पृच्छना ! पृच्छना अर्थात् अपनी जिज्ञासाओं का समाधान करना । अपने भीतर रही शंकाओं का समाधान हो जाने पर अपना ज्ञान सुदृढ़ हो जाता है ।

प्रवचन में कई श्रोता मूक प्रेक्षक बनकर सिर्फ प्रवचन का श्रवण करते हैं, जबकि कई श्रोता अपने भीतर उठती शंकाओं का प्रश्न पूछकर समाधान प्राप्त करते हैं ।

**मरुधररत्न पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** प्रति वर्ष चातुर्मास दरम्यान सप्ताह में एक दिन 'प्रश्नोत्तरी' प्रवचन भी रखते हैं । उस प्रवचन दरम्यान वे श्रोताओं के दिलो-दिमाग में रही शंकाओं का पूर्ण समाधान भी देते हैं ।

प्रश्नोत्तरी प्रवचन खूब रोचक होते हैं । क्योंकि प्रतिदिन प्रवचन नियत विषय पर होता है; जबकि प्रश्नोत्तरी में विषय की विविधता होती है ।

प्रस्तुत पुस्तक में पूज्यश्री ने आबाल-गोपाल श्रोताओं लोगों के मन-मस्तिष्क में उठती शंकाओं का यथाशक्य समाधान किया है ।

इसके पूर्व पूज्यश्री की शंका-समाधान संबंधी तीन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं ।

हमें पूर्ण विश्वास है कि पूर्व प्रकाशनों की भाँति यह प्रकाशन भी पाठकों को लिए खूब उपयोगी सिद्ध होगा ।

## परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म. सा. का संक्षिप्त परिचय

| | |
|---|---|
| **गृहस्थ नाम** | : राजु (राजमल चोपड़ा) |
| **माता का नाम** | : चंपाबाई |
| **पिता का नाम** | : छगनराजजी गेनमलजी चोपड़ा |
| **जन्मभूमि** | : बाली (राज.) |
| **जन्मतिथि** | : भादों सुद-3, संवत् 2014 दि. 16-9-58 |
| **बचपन में धार्मिक अभ्यास** | : पंच प्रतिक्रमण-नवस्मरण आदि |
| **ब्रह्मचर्यव्रत स्वीकार** | : 18 जून 1974 |
| **व्यावहारिक अभ्यास** | : 1st year B.Com. (पार्श्वनाथ उम्मेद कॉलेज फालना-राज.) |
| **दीक्षादाता** | : पू.पं. श्री हर्षविजयजी गणिवर्य |
| **गुरुदेव** | : अध्यात्मयोगी **पू. पंन्यास श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य** |
| **दीक्षादिवस** | : माघ शुक्ला 13, संवत् 2033 दि. 2-2-1977 |
| **समुदाय** | : शासन प्रभावक पू.आचार्यदेव श्रीमद् विजय **रामचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.** |
| **दीक्षादिवस विशेषता** | : भारत भर में लगभग 50 से अधिक दीक्षाएँ |
| **108 मुमुक्षु वरघोड़ा** | : 9 जनवरी 1977, मुंबई |
| **दीक्षा स्थल** | : न्याति नोहरा-बाली राज. |
| **दीक्षा समय उम्र** | : 18 वर्ष |
| **बड़ी दीक्षा** | : फाल्गुन शुक्ला 12, संवत् 2033 |
| **बड़ी दीक्षा स्थल** | : घाणेराव (राज.) |
| **प्रथम चातुर्मास** | : संवत् 2033 पाटण पू.पं. श्री हर्षविजयजी के सान्निध्य में |

◆ **अभ्यास :** प्रकरण, भाष्य, 6 कर्मग्रंथ, कम्मपयडी, पंचसंग्रह, न्याय, काव्य, कोश, संस्कृत-प्राकृत व्याकरण, संस्कृत-प्राकृत साहित्य वाचन, ज्योतिष, आगम वाचन आदि.

◆ **भाषाबोध :** हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, राजस्थानी, संस्कृत, प्राकृत, मराठी आदि

◆ **प्रथम प्रवचन :** फागुन सुदी 14, संवत् 2034 पाटण (गुजरात)

◆ **चातुर्मासिक प्रवचन प्रारंभ :** बाली संवत् 2038

◆ **चातुर्मासिक प्रवचन :** बाली (दो बार), पाली (दो बार), रतलाम, अहमदाबाद (ज्ञानमंदिर), पाटण, सुरेन्द्रनगर, रानीगाँव, पिंडवाड़ा, उदयपुर, जामनगर, अहमदाबाद (गिरधरनगर), थाणा, कल्याण, दादर (मुंबई), सायन (मुंबई), धूलिया, कराड़, चिंचवड़, भायंदर, पूना, येरवड़ा, दीपक ज्योति टॉवर, श्रीपाल नगर, कर्जत, भिवंडी (दो बार), कल्याण (दो बार), रोहा, भायंदर (दो बार), पालीताणा (दो बार), नासिक, बेंगलोर, मैसूर, कोयम्बतूर ।

◆ **विहार क्षेत्र :** राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्णाटक, तामिलनाडु आदि

◆ **पाद विहार :** आजतक लगभग 40,000 K.M.

◆ **छ'री पालक निश्रादाता :** उदयपुर से केशरियाजी, गिरधरनगर से शंखेश्वर, धूलिया से नेर, कराड़ से कुंभोज, सोलापुर से बार्शी, भिवंडी से महावीर धाम, कर्जत से मानस मंदिर, हस्तगिरि से शत्रुंजय-गिरनार, शत्रुंजय बारह गाऊ, बेंगलोर से सुशीलधाम, कोयम्बत्तूर से अव्वलपुंदरी ।

◆ **प्रथम पुस्तक आलेखन : वात्सल्य के महासागर** संवत् 2038

◆ **अद्यावधि प्रकाशित पुस्तकें :** (212) लगभग

◆ **संस्कृत साहित्य संपादन-सह संपादन :** सिद्ध हैमशब्दानुशासनम्-बृहद्वृत्ति लघु न्यास सह, पांडवचरित्र आदि

◆ **शिष्य-प्रशिष्य : स्व. मु. श्री उदयरत्नविजयजी, मुनि केवलरत्नविजयजी, स्व.मुनि कीर्तिरत्नविजयजी, मुनि प्रशांतरत्नविजयजी, मुनि शालिभद्रविजयजी, मुनि स्थूलभद्रविजयजी, स्व. मुनि यशोभद्रविजयजी ।**

◆ **उपधान निश्रा दाता :** कुर्ला, धुले, येरवडा, आदीश्वर धाम (दो), कर्जत, विक्रोली, मोहना, पालीताणा (दो बार), सेसली, कीर्तिस्तंभ (घाणेराव) नासिक, सुशीलधाम (बेंगलोर), मैसूर ।

◆ **गणि पदवी :** वैशाख वदी-6, संवत् 2055, दि.7-5-1999 चिंचवड गाँव, पूना ।

◆ **पंन्यास पदवी :** कार्तिक वदी-5, संवत् 2061, दि.2-12-2004 श्रीपालनगर, मुंबई ।

◆ **आचार्य पदवी :** पौष वदी-1, संवत् 2067, दि.20-1-2011 थाणा ।

गोडवाड के गौरव एवं मरुभूमि के रत्न

# प.पू.आ.श्री विजयरत्नसेनसूरीश्वरजी म.का

## संक्षिप्त परिचय

**बाल्यकाल और संस्करण :-** विक्रम संवत 2014, भादो सुदी 3, दिनांक 16-9-1958 का मंगल प्रभात उदित हुआ और धर्मप्रेमी छगनराजजी गेनमलजी चोपडा की धर्मपत्नी चंपाबाई ने एक तेजस्वी पुत्ररत्न को जन्म दिया । बालक का नाम रखा गया राजमल चोपड़ा । परंतु उसे **'राजु'** के नाम से ही पुकारा जाता था । उस समय किसे कल्पना होगी कि यह बालक, चोपड़ा कुलदीपक, बाली नगर की शान, गोड़वाड़ के गौरव और मरुधर रत्न के रुप में सर्वत्र ख्याति प्राप्त कर लेगा ।

और माता-पिता की छठी संतान के रुप में पैदा हुआ यह बालक अपने त्याग, तप एवं स्वाध्याय की साधना के द्वाता इतनी प्रसिद्धि पा लेगा, इसकी तो शायद ही किसी ने कल्पना नहीं की होगी ।

राजु का जन्म महाराष्ट्र में पाचोरा (जिला-जलगाँव) के पास आए छोटे से घोसला गाँव में हुआ था, परंतु उसका बचपन तो अपने पूर्वजों की जन्मभूमि बाली में ही व्यतीत हुआ था ।

तीव्र क्षयोपशम एवं जन्म-जन्मांतर की निर्मल साधना के फलस्वरुप राजु का बचपन अत्यंत ही सादगी व संस्कार भरे वातावरण में व्यतीत हुआ ।

अपने, विशिष्ट क्षयोपशम के कारण व्यावहारिक शिक्षण में राजु स्कूल में हमेशा पहली क्लास से प्रथम स्थान पर रहता था । हाईस्कूल में जितने सेक्शन होते थे, उन सब में राजु प्रथन स्थान रहता था ।

**सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी :** ई.सन् 1975 में राजकीय उच्च माध्यामिक विद्यालय बाली में लगभग 600 विद्यार्थीयों में राजु को **'सर्वश्रेष्ठ-विद्यार्थी'** का पारितोषिक प्राप्त हुआ था ।

राजु जब छठी व सातवीं कक्षा में पढ़ता था तब वह अपने कमजोर साथी मित्रों को पढ़ाता था । स्कूल व कॉलेज जीवन में उसने कभी टयूशन नहीं किया, फिर भी आश्चर्य था कि सभी विद्यार्थिओं में उसका **'सर्वश्रेष्ठ'** स्थाम रहता था ।

बचपन से ही उसे ये संस्कार मिले थे कि कच्चा पानी भी बिना छना हुआ हो तो नहीं पीना चाहिए । बाली हाईस्कूल में छठी से नौंवी कक्षा के अध्ययन दरम्यान राजु ने कभी स्कूल में पानी नहीं पीया था, क्योंकि जो टंकी द्वारा नल से पानी आता था, वह बिना छना होता था । यह थी दृढ़ता राजु में ।

**विशाल सभा में वक्तव्य :** ईस्वी सन् 1974 में राजु हायर सेकंड्री में पढ़ता था, उस समय प्रधानाध्यापक थे सुगनोमलजी कांजानी । उनकी प्रेरणा से राजु ने 26 जनवरी 1974 के दिन बाली की सभी स्कूलों के विद्यार्थी एवं अध्यापकों के बीच, लगभग 2000 लोगों की उपस्थिति में मंच पर से अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया था । इतनी बड़ी सभा में निर्भिकता पूर्ण भाषण देने से राजु का हौसला खूब बढ़ गया था ।

**दृढ़ मनोबल :** उस समय राजु की उम्र मात्र 10 वर्ष की थी, वह राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में छठी कक्षा में पढ़ता था । धार्मिक पाठशाला व गुरु भगवंतों के सत्संग के कारण उसने इस छोटी वय में ही रात्रि भोजन का संपूर्ण त्याग किया था । स्कूल का समय 12 से 5.30 बजे तक का था । जुलाई से से अक्तूबर-नवम्बर तक तो विशेष समस्या नहीं रहती थी, परंतु दिसंबर-जनवरी में 5.45 से 6 बजे के बीच सूर्यास्त हो जाता था... परंतु उन दिनों में राजु अपनी प्रतिज्ञा का दृढ़ता से पालन करता था । 5.30 बजे की छुट्टी की घंटी बजते ही वह तेजी से भागकर अपने घर पहुँच जाता और बहुत ही जल्दी-जल्दी थोड़ा-बहुत खाकर मंजन कर अपना मुँह साफ कर लेता । एक दिन नेहरु-जयंती होनेसे स्कूल में सभा का आयोजन किया था । किसी की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में सभा का आयोजन हो तो उस सभा में राजु को अवश्य बोलना पड़ता था । प्रायमरी स्कूल से ही सभा में बोल ने की हिंमत आ जाने से वह हाईस्कूल में भी नि:संकोच होकर सभा में अपने विचारों को अभिव्यक्त कर देता था ।

नेहरु जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित सभा के विसर्जन में काफी देर हो गई । उस समय राजु दौड़कर घर आया । घड़ी में देखा तो छह बज चुकी थी....और पश्चिम में सूर्य अस्ताचल की गोद में सो चुका था । घर आने पर संध्याकालीन भोजन तैयार था...परंतु उसने कुछ भी लेने से इन्कार कर दिया...वह भूखा ही सो गया, परन्तु उसने अपनी प्रतिज्ञा का दृढ़ता से पालन किया । हाईस्कूल में अध्ययन दरम्यान ऐसे एक नहीं, अनेक प्रसंग आए । खेल-

कूद, सभा व विदाई समारोह आदि के किसी भी प्रसंग में उसने अपनी प्रतिज्ञा का भंग नहीं किया ।

उस समय राजु ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ता था । पाली जिले के चार जोन (विभाग) में से बाली विभाग में आयोजित अंग्रेजी निबंध स्पर्धा में द्वितीय स्थान प्राप्त करने के कारण अब उसे जिलास्तर पर आयोजित निबंध स्पर्धा में भाग लेने के लिए बगड़ी जाना पड़ा । उस समय बाली हाईस्कूल के 20-25 विद्यार्थी भी अन्य-अन्य प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए बगड़ी आये हुए थे । उन विद्यार्थियों में दो विद्यार्थी जैन थे । एक मात्र राजु को छोड़ सभी कंदमूल का भक्षण करते थे । बगड़ी में चार दिन की स्थिरता थी । रसोईया हर सब्जी व दाल में लहसुन डाल देता था । एक मात्र राजु के लहसुन नहीं खाने की प्रतिज्ञा थी । उसने रसोइये को निवेदन किया । वह रसोइया राजु के लिए मसाले (वघार) बिना की फीकी दाल अलग से निकाल देता था । इस प्रकार सिर्फ फीकी दाल व रोटी खाकर भी उसने चार दिन पसार किए...परंतु अपनी प्रतिज्ञा का भंग नहीं किया । ईस्वी सन् 1974 में बाली में उपजिला स्तरीय वक्तृत्व-स्पर्धा में राजु ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया था ।

ईस्वी सन् 1975 में राजु जब एस. पी. यु. कॉलेज फालना में प्रथम वर्ष में पढ़ता था तब भगवान महावीर के 2500 वें निर्वाण कल्याणक के उपलक्ष्य में **निबंध स्पर्धा** का आयोजन किया गया था, इस स्पर्धा में भी राजु ने फालना-कॉलेज में प्रथम स्थान प्राप्त किसा था ।

स्कूल के वेकेशन पिरीयड में राजु प्रतिदिन 5-5 सामायिक करता था । स्कूल लाईफ में वह वेकेशन के समय में अगले वर्ष का संपूर्ण कोर्स स्वत: पढ़ लेता था । क्लास टीचर को पढ़ाने पर कोई बात समझ में न आए तो वह अवश्य प्रश्न करता था ।

**दीक्षा-मनोरथ :–** संवत् 2030 की बात है । बाली में मुमुक्षु कमलाकु-मारी की भागवती दीक्षा का भव्य प्रसंग था । उस प्रसंग की राजु के दिल पर अमीट छाप पड़ी । उसके अन्तर्मन में दीक्षा की तीव्र अभिलाषा उत्पन्न हुई । उसके साथ ही साधु-समागम, सत्साहित्य-वाचन और अकाल मृत्यू की रोमां-चक दु:खद घटनाओं को देखकर राजु के दिल में इस असार संसार के प्रति विरक्ति का भाव पैदा हुआ ।

उसने अपनी दिल की बात **पू. मुनिश्री प्रद्योतनविजयी म.सा.** को

कही । उन्होंने इस संदर्भ में विशेष मार्गदर्शन के लिए अपने परम उपकारी अध्यात्मयोगी पूज्यपादगुरुदेव पंन्यास प्रवर **श्री भद्रकरविजयजी गणिवर्यश्री** के पास घाणेराव भेजा ।

एक दिन अवसर देखकर राजु बाली से घाणेराव पहुँच गया । पूज्यपाद अध्यात्मयोगी पंन्यासप्रवरश्री से उसका कोई परिचय नहीं था । वह उनके पास पहुँचा । विशाल तेजस्वी भाल, मस्तक पर ब्रह्मचर्य का पूर्व तेज, करुणापूर्ण नेत्रों से युक्त उनके विराट् बाह्य व्यक्तित्व से वह अत्यन्त ही प्रभावित हुआ । उसने गुरुदेवश्री के चरणों में वन्दना की और तत्पश्चात् **पू. मुनिश्री प्रद्योतनविजयजी म.** का पत्र उसने गुरुदेवश्री के हाथों में सौंप दिया ।

गुरुदेवश्री ने वह पत्र पढ़ा...परंतु वे गम्भीर रहे... एकदम मौन । तभी एक श्रावक भोजन का समय होने से भोजन का आग्रह करने लगा ।

उस श्रावक के घर भोजन करने के बाद ठीक दो बजे राजु पूज्यपादश्री के पास उपस्थित हुआ । पूज्यश्री ने उसका परिचय पूछा । **'दीक्षा की भावना क्यों हुई ? कैसे हुई ?'** इत्यादि बातें भी पूछी । उस समय राजु हायर सेकन्डरी (ग्यारहवीं कक्षा) में पढ़ता था । पूज्यपादश्री ने उसके धार्मिक व्यावहारादि अभ्यास के संदर्भ में कुछ प्रश्न किए । और वैराग्यपुष्टि के लिए संसार का वास्तविक स्वरुप भी समझाया ।

पूज्यपादश्री के शुभ-सान्निध्य का वह पहला अवसर था... किन्तु उन धन्य पलों में भी जिस आह्लाद आनंद की अनुभूति हुई थी, उसे वे आज भी भूल नहीं सकते है । पूज्यपादश्री के मुखारविंद से निकलते वे शब्द मानो साक्षात् स्नेह और वात्सल्य के झरणे रुप थे । **'संसार के इस विषम वातावरण में से अपने आपको कैसे बचाया जा सके'** इसके लिए पूज्यपादश्री ने बहुत ही सुन्दर मार्गदर्शन दिया । विरक्ति की ज्योति बुझ न जाय और वह अखंडित बनी रहे, उसके लिए अनिवार्य मार्गदर्शन भी पूज्यपादश्री ने बड़े प्रेम से प्रदान किया ।

विदाई के पूर्व पूज्यपादश्री ने कहा, **''तुम देलवाड़ा में आयोजित धार्मिक-शिबिर में जा रहे हो, देलवाड़ा तीर्थ में युगदिदेव आदिनाथ भगवान परमात्मा की भव्य प्रतिमा है । आदिनाथ भगवान के सामने पाँच वर्ष तक ब्रह्मचर्य पालन का संकल्प करना ।''** राजु ने पूज्यपादश्री की आज्ञा शिरोधार्य की। पूज्यपादश्री ने वासक्षेप ड़ाला-मंगलिक सुनाया और उसने वहाँ से विदाई ली ।

पूज्यपादश्री के व्यक्तित्व में ऐसा ही कोई चुम्बकीय आकर्षण था... जीवन में एक बार ही उनके शुभ सानिध्य... उनके वचनामृत का पान करने-

वाला भी उन्हें जीवनभर भूल नहीं सकता था । घाणेराव से विदाई के बाद भी पूज्यपादश्री वचनामृत उसके दिल में मंडराते रहे और उसकी वैराग्य भावना धीरे-धीरे पुष्ट होने लगी ।

वह देलवाड़ा तीर्थ में **प.पू.मुनिश्री जितेन्द्रविजयजी म.** एवं **पू. मुनिश्री गुणरत्नविजयजी म.सा.**के सान्निध्य में आयोजित इस शिविर समाप्ति के बाद वह बाली आया । उसके मन में संसार-त्याग की भावना धीरे धीरे दृढ़ बनने लगी । मन दीक्षा के लिए लालायित था, परंतु मन में भय था कि घर में दीक्षा की बात कैसे की जाय ?

**गुरु आशीर्वाद की शक्ति :** धीरे धीरे समय बीतने लगा । मार्च 1975 का समय था कॉलेज की परीक्षाएँ प्रारंभ हो गई थीं । यद्यपि पहले साल बी.कॉम. में सिर्फ छ विषय थे, किंतु परीक्षा लंबी चल रही थी । परीक्षा के दिनों में राजु के पिताजी भी खानदेश से बाली आए हुए थे । राजु को यह भय सता रहा था कि कॉलेज की परीक्षा पूरी होते ही उसे खानदेश चलने के लिए आग्रह किया जाएगा । जब कि उसकी तनिक भी इच्छा नहीं थी कि मैं पूज्यपादश्री के सान्निध्य से कही दूर चला जाऊँ ।

एक दिन की बात है । उसकी आधी परीक्षाएँ हो चुकी थी । एक दिन पिताजी व माताजी आदि नाकोड़ा तीर्थ की यात्रा के लिए गए हुए थे । योगानुयोग उस दिन परीक्षा नहीं थी । खूब सोच विचार कर सायकल लेकर किसी को पता न चले इस ढंग से बाली से लुणावा चला गया । भावपूर्वक पूज्यपादश्री के पावन चरणों में वन्दना की । उसके बाद अपने दिल की बात प्रस्तुत करते हुए उसने कहा **''साहेबजी ! मुझे क्या करना ? कुछ दिनों बाद परीक्षाएँ पूरी हो जाएगी और पिताजी खानदेश चलने के लिए आग्रह करेंगे, ऐसी स्थिति में मुझे क्या करना चाहिए ?''**

पूज्यपादश्री ने उसकी परीक्षा लेते हुए पूछा **''राजु ! तु दृढ़ है न ?''**

उसने कहा **''हाँ ! जी !''**

**''दीक्षा लेने की पूरी भावना है न ?''**

उसने कहा **''मेरी पूरी-पूरी भावना है, बस, आपका आशीर्वाद चाहिए !''**

उसकी दृढ़ भावना को देखकर पूज्यपादश्री ने कहा, **''जब तुम्हें खानदेश ले जाने की बात करे तब कह देना कि मैं गुरु म.के. पास रहकर धार्मिक अभ्यास करना चाहता हूँ । मेरी वहाँ आने की इच्छा नहीं हैं । दीक्षा**

**आपकी अनुमति बिना नहीं लूँगा, लेकिन अब मुझे संसार में नहीं रहना है ।''**

पूज्यपादश्री ने पुनः उसे संसार की असारता समझाई और मस्तक पर वासक्षेप ड़ालकर आशीर्वाद प्रदान किया और कहा **''देव-गुरु की कृपा से तुम्हारा यह कार्य आसानी से पूरा हो जाएगा ।''** पूज्यपादश्री का आशीर्वाद लेकर वह अपने घर लौट आया । धीरे धीरे परीक्षा के दिन पूरे हो गए ।

एक दिन वह घर के ऊपरी खंड में सामायिक लेकर बैठा हुआ था, तभी उसे आवाज देकर नीचे बुलाया गया ।

सामायिक पूर्ण कर जैसे ही वह नीचे आया उसे पिताजी ने पूछा, **''ऊपर क्या करता है ?''**

उसने कहा **''सामायिक में धार्मिक अभ्यास करता हूँ ।''**

**''अब यह सब छोड़ दे, तुझे खानदेश चलना है । ''**

उसने कहा, **''मेरी खानदेश आने की इच्छा नहीं है ।''**

**''तो क्या करना है ?''**

**''मैं गुरु म. के पास रहकर अभ्यास करना चाहता हूँ ।''**

**''तुझे दीक्षा नहीं लेनी है ।''**

**''मेरी तो दीक्षा लेने की पूरी-पूरी भावना है ।''**

उस समय अनेक तर्क-वितर्क हुए । उसने अपनी मति कल्पना के अमुसार सभी प्रश्नों के जवाब दिए । आखिर पूज्यपाद तारक गुरुदेवश्री के आशीर्वाद फल स्वरुप उसे पूज्यपादश्री के पास रहने की अनुमति मिल गई । उसके बाद वह अपने गुरुदेव के सान्निध्य में 1½ वर्ष रहा ।

## मुमुक्षु जीवन

वि.सं. 2031 में बेडा (राज.) में तथा वि.सं. 2032 में लुणावा (राज.) चातुर्मास बिराजमान अध्यात्मयोगी **पू.पं. श्री भद्रंकरविजयजी म.सा.** तथा **पू.आ. श्री कलापूर्णसूरीश्वरजी म.सा.** आदि के सान्निध्य में रहकर राजु ने संयम जीवन का प्रशिक्षण लिया । प्रथम उपधान, वर्धमान तप का पाया तथा 12 ओली के साथ चार प्रकरण, तीन भाष्य, छह कर्मग्रंथ, योगशास्त्र के चार प्रकाश, वीतराग-स्तोत्र, संस्कृत दो बुक का अभ्यास भी किया ।

छ'री पालक संघ, नवपद ओली, बीस दिवसीय नवकार जाप अनुष्ठान, सम्मेतशिखर आदि कल्याणक भूमियों की यात्रा आदि द्वारा रत्नत्रयी की सुंदर आराधना कर संयम जीवन का प्रशिक्षण लिया ।

दि. 7 जनवरी 1977 के शुभ दिन उनके पिताजी एवं पंडितजी हिम्मतलालजी के साथ राजु **पूज्य गुरुदेवीश्री** के वंदन हेतु लुणावा गया । सभी ने पूज्यपाद तारक गुरुदेव को वंदन किया । तत्पश्चात् गुरुदेवश्री ने राजु के पिताजी को कहा **''राजु तैयार हो गया है...अब इसे कब तक संसार में रखना है ?''** नि:स्वार्थ प्रेम और वात्सल्य की मूर्ति पूज्यापादश्री के मुख से निकले ये शब्द उन शब्दों ने राजु के पिताजी के हृदय पर जादुई असर कर डाला... वे तत्क्षण राजु को दीक्षा दिलाने के लिए तैयार हो गये । उन्होंने कहा **''आपकी आज्ञा मैं शिरोधार्य करता हूँ''** और उसी समय राजु को दीक्षा की **'जय'** बुला दी गई । कुछ देर बाद घर लौटे तब घर में अन्य किसी को भी यह कल्पना नहीं थी कि इतनी जल्दी राजु की दीक्षा का निर्णय हो जाएगा । चंद क्षणों में तो राजु की दीक्षा की बात पूरे नगर में फैल गई ।

**बाली में भव्य दीक्षा महोत्सव:** बाली शहर में से पुरुषों की दीक्षाएँ नहीवत् हुई हैं । वर्षो पूर्व **पू.आ. श्री अमृतसूरिजी म.** के पास दो भाइयों ने दीक्षा ली थी । जिनमें एक थे **पू. खांतिविजयजी म.** तथा दूसरे थे **पू. निरंजनविजयजी म.** (जिनका कालधर्म हो चुका है) । वर्षो बाद बाली में हो रही भागवती दीक्षा महोत्सव में निश्रा प्रदान के लिए पूज्यपाद गुरुदेवनश्री के प्रथम शिष्यरत्न वर्धमान तपोनिधि **पू.पं.श्री हर्षविजयजी म.सा., पू.पं. श्री प्रद्योतनविजयजी म.सा., पू. तपस्वी मुनि श्री चंद्राशुविजयजी म.सा. तथा पू. तपस्वी मुनि श्री जयंतभद्रविजयजी म.सा.** (चारों वर्धमान तप की 100 ओली के तपस्वी) आदि स्वागत सह बाली पधारे थें ।

मुमुक्ष के तौर पर राजु पूज्यपादश्री के पास आया था, तब पूज्यपादश्री ने उसकी अनेकबार परीक्षा की थी । वे कई बार कहते थे, मैं तो वृद्ध हो चुका हूँ, तुझे जो पंसद हो उसके तुम शिष्य बन सकते हो। पूज्यपादश्री की इस बात को सुनकर हर बार राजु का एक ही जवाब था, **'मैंने आपश्री के चरणों में अपना जीवन समर्पित किया है, अब आप जो आज्ञा फरमाएँगे, वह मुझे स्वीकार्य है ।'**

महा सुदी 13 के दिन वर्षीदान का भव्य वरघोड़ा निकला । उसी दिन रात्रि में नगरपालिका बाली एवं जैन संघ बाली की ओर से नागरिक अभिनंदन समारोह रखा गया । दूसरे दिन मंगल प्रभात में महा सुदी 13, संवत 2033, दि. 2-2-1977 के शुभ दिन मुहूर्त में परम पूज्य पंन्यास प्रवर **श्री हर्षविजयजी म.सा.** के वरद हस्तों से राजु की भागवती दीक्षाविधि संपन्न हुई । दीक्षा विधि

के बाद नामकरण विधि हुई और जब उसे परम पूज्य अध्यात्मयोगी पंन्यास-प्रवर **श्री भद्रंकरविजयजी** गणिवर्य के शिष्य के रुप में (मुनि रत्नसेनविजयजी) घोषित किया गया तब सभी के आश्चर्य का पार न रहा ।

**पूज्यश्री का गुण वैभव :**

संसार में व्यक्ति का मूल्यांकन धन के आधार पर होता हैं. जो व्यक्ति धन से समृद्ध हो, वह धनवान कहलाता है, जब कि जैन शासन में व्यक्ति का मूल्यांकन गुणों के आधार पर होता है । साधु का वैभव उसका ज्ञान और उसकी गुण संपदा ही है ।

मरुधररत्न, गोड़वाड के गौरव, प्रवचन-प्रभावक, बाली नगर की शान पूज्य आचार्य प्रवर **श्री रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** का भी अपना एक विशिष्ट व्यक्तित्व है ।

**1. नित्य तप के तपस्वी :** जैन धर्म में दो प्रकार के तप बतलाए हैं- नित्य तप और नैमित्तिक तप ।

जो तप हमेशा किया जाता हैं, वह नित्य तप कहलाता है और जो तप पर्युषण, नवपद ओली आदि निमित्तों को पाकर किया जाता है, वह नित्य तप कहलाता है । साधु जीवन में नित्य तप की खूब महिमा है । पूज्यश्री अपने दीक्षा दिन से नित्य तप एकासने की आराधना तपश्चर्या कर रहे है । 43 वर्षों से पूज्यश्री इस तप की साधना कर रहे है । चाहे जितनी प्रवचन आदि की जवाबदारी हो, लंबे लंबे विहार हो फिर भी पूज्यश्री ने यह तप नहीं छोड़ा । इतने वर्षों में 3-4 बार बड़ी बीमारी (बुखार, ओपरेशन आदि) के अपवादों को छोड़कर वे नियमित एकासना करते है ।

**2. ज्ञानपंचमी तप :** दीक्षा के पहले से ही पूज्यश्री ज्ञानपंचमी की आराधना कर रहे है । 44 वर्षों से उनकी यह आराधना निरतंर जारी है । यद्यपि उपवास व बड़ी तपश्चर्या उनके लिए कठिन हैं, फिर भी वे 44 वर्षों से प्रति मास शुक्ल पंचमी का उपवास करते हैं । इसके सिवाय पूज्यश्रीने वर्धमान तप की 14 ओली, शंखेश्वर पार्श्वनाथ के तीन अट्ठम किए है । गृहस्थ जीवन में 1 उपधान तप की आराधना की थी ।

**3. प्रवचन कुशल :** दीक्षा जीवन के 14 मास बाद ही पूज्यश्री ने सर्व प्रथम प्रवचन फाल्गुन शुक्ला चतुर्दशी विक्रम संवत 2034 के शुभ दिन **पू. पं. श्री हर्षविजयजी म.** की निश्रामें नगीनदास पाटण में दिया था ।

अध्यात्मयोगी पूज्य गुरुदेव पंन्यास प्रवर **श्री भद्रंकर विजयजी म.सा.**पींड-वाडा में बिराजमान थे । पाटण में पूज्यश्री के शिष्य लकवाग्रस्त **पू.मु. श्री धर्मरत्नविजयजी म.** की सेवा के लिए पूज्यश्री ने पंन्यास हर्षविजयजी आदि चार ठाणा को पाटण भेजा । नगीनदास मंडप-पाटण में 5 साधु महात्मा थे, परंतु प्रवचन करनेवाला कोई नहीं था । फाल्गुन सुदी-14 (चौमासी चौदश) नजदीक आ रही थी। संघ के अग्रणियों ने पंन्यासजी म. को प्रवचन हेतु विनंती की । पूज्यश्री ने उन्हें संतोषकारक जवाब दिया ।

5-7 दिन पहले **पू. पं. हर्षविजयजी म.** ने **पू.मु. रत्नसेनविजयजी** को कहा, **'रतन ! इस चौदश को तुझे प्रवचन करना है ।'**

मुनिश्री ने कहा, **'मुझ में यह शक्ति कहाँ ?'**

पूज्य ने कहा, **'रतन ! तूं चिंता मत कर !पूज्य गुरुदेव ने मुझे कहा है 'प्रवचन के लिए जरुर पड़े तो रत्नसेन को बिठा देना ।' अतः प्रवचन तुझे ही करना है ।'**

मुनिश्रीने पूज्यश्री की आज्ञा शिरोधार्य की और चौमासी चौदश के दिन लगभग 400-500 लोगों की उपस्थिति में **'सम्यदर्शन शुद्धं'** श्लोक ऊपर डेढ़ घंटे तक पूज्य पंन्यासजी महाराज की निश्रा में पहला प्रवचन किया । जिसे सुनकर पूज्य पंन्यासजी म. भी खुश हो गए ।

उसके बाद महिने में पांच तिथि, नवपद ओली में पूज्य मुनिश्री के प्रवचन हुए ।

धीरे धीरे प्रवचनकला दूज के चांद की भांति खिलने लगी ।

वि.सं. 2038 में अपनी जन्म भूमि बाली में तपस्वी सम्राट **पू.आ. श्री राजतिलकसूरजी म.** की आज्ञा से उन्हीं की निश्रा में चातुर्मास प्रवचन प्रारंभ किए । जो आज तक निरंतर जारी है। पिछले कई वर्षों से पूज्यश्रीके वर्ष में लगभग 350 दिन निरन्तर दैनिक प्रवचन जारी रहते है । अपने प्रवचनों के माध्यम से उन्होंने अनेक को धर्मबोध दिया है ।

**4. गुरु समर्पणभाव :** पूज्यश्री के दिल में अपने उपकारी स्व. अध्या-त्मयोगी **पू. पं. श्री भद्रंकरविजयजी** गणिवर्य के प्रति अपूर्व समर्पणभाव हैं । चातुर्मास हेतु पूज्य गुरुदेवश्री अथवा गच्छाधिपति भगवंतों की ओर से जो भी आज्ञा हुई, उसे उन्होंने सहर्ष स्वीकारा है ।

गुरु समर्पण भाव तो साधु जीवन का प्राण है । इस समर्पण भाव ने ही

उन्हें इतना ऊँचा उठाया है । **'पूज्यों के आशीर्वाद में जो शक्ति हैं, वह अन्य किसी में नहीं है ।'** इस जिन वचन को लक्ष्य में रखकर वे अपना जीवन जी रहे है ।

**5. सरल सुबोध लेखन शैली :** दीक्षा के चार मास बाद जब नूतन **मुनिश्री रत्नसेनविजयजी म.** ने **पू. पं. श्री हर्षविजयजी म.** के साथ पाटण चातुर्मास हेतु बामणवाडजी से 5 मई 1977 के शुभ दिन शाम को विहार किया । तब विहार के पूर्व मुनिश्री ने अपने गुरुदेव अध्यात्मयोगी **पू. पं. श्री भद्रंकरविजयजी म.सा.** के पास हितशिक्षा की मांग की ।

पूज्यश्रीने श्रमण जीवन के समुचित पालन हेतु हितशिक्षा प्रदान की और साथ में कहा **'रत्नसेन ! पाटण जाने के बाद रोज एक चिंतन लिखना ।'** पाटण पहुँचने के बाद एक शुभ दिन अपने गुरुदेव का स्मरण कर नूतन मुनि ने चिंतन लिखना प्रारंभ किया । प्रारंभ में प्रशमरति आदि के श्लोकों के आधार पर चिंतन लिखा । फिर **'नमो अरिहंताणं'** पद पर थोड़ा चिंतन लिखा ।

पाटण चातुर्मास के बाद मुनिश्री अपने गुरुदेव के चरणों में पिंडवाडा पधारे । एक दिन उन्होंने मुनिश्री के चिंतन की डायरी पढ़ी, उसमें रही भूलों को सुधारा । फिर बोले **'अच्छा लिखता है ।'**

बस, पूज्य उपकारी गुरुदेवश्री के अंत:करण के आशीर्वाद का ही फल है कि वे आज तक 210 से अधिक पुस्तकों का आलेखन, पूज्य गुरुदेवश्री की अनेक पुस्तकों का भावानुवाद और कई ग्रंथो का संपादन कर सके हैं । उनकी लेखनी अत्यंत ही सरल, सुबोध और धारा प्रवाह है, जो पाठकों के दिल को छू लेती है । आज भारत के कोने-कोने में पूज्यश्री का हिन्दी साहित्य बड़े चाव से पढ़ा जा रहा है ।

**6. स्वाध्याय प्रेम :** दीक्षा जीवन में भी वे अपना अधिकांश समय स्वाध्याय में व्यतीत करते है । उन्होंने अपने श्रमण जीवन में अनेक प्रकरण ग्रंथों को कंठस्थ करने के साथ संस्कृत-प्राकृत भाषा में लाखों श्लोक प्रमाण आगम साहित्य, कर्म साहित्य, प्रकरण साहित्य, आध्यात्मिक साहित्य, ज्योतिष, व्याकरण, न्याय आदि का सुंदर अभ्यास किया है । अजैन विद्वानों के भी जनोपयोगी हितकारी साहित्य का पठन किया है ।

**7. समय प्रतिबद्धता :** पूज्यश्री अपने हर कार्य में सदैव नियमित रहते है । किसी भी कार्य के लिए जो समय निश्चित किया हो, वे समय के पूर्व ही तैयार हो जाते है ।

**8. मिलनसार वृत्ति :** विहार आदि दरम्यान साधु जीवन में स्व-पर समुदाय, भिन्न भिन्न गच्छ आदि के महात्माओं का मिलन होता रहता है । पूज्यश्री सभी के साथ पूर्ण औचित्य का पालन करते है । इस प्रकार मिलनसार प्रकृति के कारण वे सर्वत्र आदरणीय बने है ।

**9. गुण ग्राहकता :** अन्य किसी के जीवन में रहे गुणों की वे अवश्य अनुमोदना करते है । गुणवान व्यक्ति को देख उनके गुणों के प्रति पूर्ण आदर भाव व्यक्त करते है । निंदा-ईर्ष्या, निरर्थक चर्चा आदि से वे सदैव दूर रहते है । ऐसे अनेकानेक गुणों को पूज्यश्री ने अपने जीवन में आत्मसात् किया है ।

**10. पदोन्नति:** शासन प्रभावक गच्छाधिपति **पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय महोदयसूरीश्वरजी म.सा.**की आज्ञानुसार दीर्घसंयमी **पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय जयकुंजरसूरीश्वरजी म.सा.**की शुभ निश्रा में चिचंवडगांव पूना में दि. 7-5-1999 के शुभ दिन **पू.मु.श्री रत्नसेनविजयजी म.**को **'गणी'** पर से विभूषित किया गया ।

परम श्रद्धेय **पू. गच्छाधिपति आचार्यदेव श्रीमद् विजय हेमभूषणसूरीश्वरजी म.सा.**की आज्ञा से उन्ही की शुभ निश्रा में श्रीपालनगर मुबंई में दि. 2-12-2004 के शुभ दिन उन्हे पंन्यास पदवी से अलंकृत किया गया ।

समुदाय के ज्येष्ठ पूज्यों के निर्णयानुसार एवं नि:स्पृह शिरोमणि विद्ववर्य **पू. पंन्यासप्रवर श्री वज्रसेनविजयजी गणिवर्य श्री** की आज्ञा एवं आशीर्वाद से कोंकण शत्रुंजय थाणा तीर्थ में पोष वद-1, वि.सं. 2067, दि. 20-1-2011, गुरुवार शुभ दिन गुरु पुष्यामृतसिद्धियोग में आठ दिन के ऐतिहासिक महामहोत्सव के साथ शासन प्रभावक **पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय कनकशेखरसूरीश्वरजी म.सा.**के वरद् हस्तों से **प. पू. मरुधररत्न** गोडवाड के गौरव **पूज्य पंन्यास प्रवर श्री रत्नसेनविजयजी म.सा.** को गुरु गौतम नगरी (शिवाजी मैदान) में हजारों की जनमेदनी के बीच आचार्यपद पर प्रतिष्ठित किया गया, तब से वे **पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** के नाम से जाने पहिचाने लगे ।

आचार्य पदारुढ़ होने के बाद पूज्यश्री के वरद हस्तों से जैन-शासन की सुंदर आराधना-प्रभावनाएँ हो रही है ।

**प्रश्न 1. विजय आदि चार अनुत्तर के देवों के कितने भव और होते हैं ?**

**उत्तर** विजय आदि चार के देव उत्कृष्ट से दो-चार भव करते हैं-सर्वार्थ-सिद्ध विमान का देव दूसरे ही भव में मोक्ष जाता है ।

विजयादि में दो बार जाने वाला चौथे भव में मोक्ष जाता है ।

उदा. विजयादि से च्यवकर मनुष्य बनकर पुनः विजयादि में उत्पन्न होकर पुनः मनुष्यभव पाकर मोक्ष जाता है ।

**प्रश्न 2. देव क्या कर्म-पुद्गलों को देख सकते हैं ?**

**उत्तर** अनुत्तर विमान के देव अवधिज्ञान से कर्म-पुद्गलों को देख सकते हैं, अन्य ग्रैवेयक तक के देव कर्म पुद्गलों को नहीं देख सकते हैं ।

**प्रश्न 3. क्या मणिभद्रजी की आरती हो सकती है ?**

**उत्तर** देवी-देवताओं की स्वतंत्र आरती नहीं होती है ।

**प्रश्न 4. सरस्वती देवी कौन है ?**

**उत्तर** सरस्वती देवी व्यंतर इन्द्र गीतरति की अग्रमहिषी है ।

**प्रश्न 5. पद्मावती देवी धरणेन्द्र की पत्नी है या अपरिगृहीता देवी ?**

**उत्तर** पद्मावती देवी धरणेन्द्र की अग्र पट्टरानी है, अपरिगृहीता देवी नहीं है ।

**प्रश्न 6. लव समय देव कौन कहलाते हैं ?**

**उत्तर** सात लव प्रमाण आयुष्य कम होने से जो मनुष्य मरकर सर्वार्थ-सिद्ध विमान में पैदा होते हैं ।

7 लव जितना आयुष्य और होता तो वे छट्ठ तप से होनेवाली कर्मनिर्जरा कर 7 लव में मोक्ष चले जाते !

**प्रश्न 7. क्या देवलोक में चींटी मक्खी आदि जीव होते हैं ?**

**उत्तर** देवलोक में विकलेन्द्रिय जीव नहीं होते हैं ।

एकेन्द्रिय जीव चौदह राजलोक में हैं ।

विकलेन्द्रिय जीव सिर्फ तिर्च्छालोक में हैं ।

पृथ्वी, पानी व वनस्पति जीव बारह देवलोक व सातों पृथ्वियों में है ।

बादर अग्नि सिर्फ मनुष्यलोक में है ।

**प्रश्न 8. क्या देवी, देवता के भंडार आदि की आय साधारण खाते में ले जा सकते हैं ?**

**उत्तर** जिनमंदिर में देव-देवी हो और उनकी देहरी का निर्माण साधारण खाते में से हुआ हो, देहरी की जमीन भी साधारण द्रव्य से खरीदी हो या श्रावक ने अपनी ओर से भेंट की हो तो देव-देवी भण्डार की आय साधारण खाते व सात क्षेत्रों में जा सकती है ।

सात में से प्रथम पंच क्षेत्रों में उपयोग करने में तो कोई प्रश्न नहीं है ।

परंतु छठे व सातवें श्रावक-श्राविका में उपयोग करना हो तो थोड़ा विवेक रखना चाहिए ।

वह द्रव्य गरीब व कमजोर श्रावक-श्राविकाओं की भक्ति में खर्च करना चाहिए न कि संघ-स्वामी वात्सल्य में एवं प्रभावना आदि में, क्योंकि स्वामीवात्सल्य व प्रभावना में तो गरीब-अमीर सभी आते हैं, जब कि मदद कमजोर की होती है-अतः कमजोर श्रावकों की भक्ति में एवं उपाश्रय-निर्माण आदि में उपयोग कर सकते हैं ।

**प्रश्न 9. क्या माता-पिता की संपत्ति का उपयोग पुत्र कर सकता है ?**

**उत्तर** माता-पिता की संपत्ति उन्हीं के नाम से सत्कार्य में खर्च कर देनी चाहिए ।

उनकी संपत्ति के उपभोग से उनकी मृत्यु की अनुमोदना का दोष लगता है ।

**प्रश्न 10. क्या अभव्य आत्मा तीर्थंकर के हाथों से दीक्षा लेती है ?**

**उत्तर** नहीं ! अभव्य आत्मा न तो तीर्थंकर के हाथ से दान लेती है, न तीर्थंकर प्रभु को दान देती है और न ही उनके हाथों से दीक्षा लेती है । यह सब सौभाग्य भव्यात्माओं को ही होता है । हाँ, अभव्य आत्मा तीर्थंकर की देशना सुन सकते हैं ।

**प्रश्न 11. तीर्थंकर को आहार दान देते समय दाता के घर देवता कौन से पंच दिव्य प्रगट करते हैं ?**

**उत्तर** तीर्थंकर परमात्मा का जब आहार होता है, तब देवता पाँच दिव्य प्रकट करते हैं–

(1) सुगंधित जल की वृष्टि (2) सुगंधित पुष्पों की वृष्टि

(3) वस्त्र की वृष्टि (4) धन की वृष्टि

(5) आकाश में देवदुंदुभि के नादपूर्वक `अहो दानं, अहो दानं' की घोषणा ।

**प्रश्न 12. सूर्य-चंद्र असंख्य हैं तो उनके इन्द्र कितने ?**

**उत्तर** हर सूर्य चंद्र विमान का अधिपति होने से सूर्य-चंद्र के असंख्य इन्द्र होते हैं ।

**प्रश्न 13. सिद्ध भगवंतों के गुण 8 होते हैं या 31 ?**
**नवपद में 8 व बीस स्थानक में 31 बतलाए हैं ।**

**उत्तर** आठ कर्मों के क्षय से प्राप्त गुणों की अपेक्षा सिद्धों के 8 गुण भी हैं और वर्ण आदि के अभाव की अपेक्षा सिद्धों के 31 गुण भी हैं । नवपद और बीस स्थानक में विवक्षा भेद से 8 व 31 गुण बतलाए हैं । अपेक्षा से दोनों सही हैं ।

**प्रश्न 14. पंचेन्द्रिय प्राणी के वध से नरक गति मिलती है तो 1141 की हत्या करनेवाले अर्जुनमाली का मोक्ष कैसे हुआ ?**

**उत्तर** सद्गति, दुर्गति या परमगति मोक्ष की प्राप्ति में क्रिया के बदले भाव की प्रधानता है ।

तीव्र रौद्र परिणाम से एक जीव की हत्या से भी नरक गति हो सकती है उसी प्रकार संयम के उत्कृष्ट परिणाम से अन्तर्मुहूर्त में ही सभी कर्मों का क्षय हो सकता है ।

अर्जुनमाली ने जब हिंसाएँ कीं तब आयुष्य का बंध नहीं हुआ था और संयम लेने के उत्कृष्ट भावों में चढ़ गया तो हिंसाजन्य सभी पापकर्मों का भी क्षय कर दिया ।

**प्रश्न 15. द्रव्यस्तव और भावस्तव के अधिकारी कौन हैं ?**

**उत्तर** श्रावक के लिए द्रव्यस्तव प्रधान है । श्रावक के द्रव्य की मूर्च्छा है, अतः उसकी ममता उतारने श्रावक के लिए द्रव्यपूजा हेतु के लिए करना खूब जरूरी है । हाँ ! द्रव्यपूजा के बाद भावपूजा भी अवश्य करनी चाहिए ।

साधु के लिए भावस्तव, भावपूजा प्रधान है । परंतु वे भी श्रावकों को द्रव्यपूजा का उपदेश दे सकते हैं और श्रावक की द्रव्यपूजा की (आंगी आदि की) अनुमोदना भी कर सकते हैं ।

**प्रश्न 16. अष्टापद के पट्ट में रावण के दस मस्तक बताए जाते हैं, क्या यह उचित है ?**

**उत्तर** रावण के दस मस्तक नहीं थे, जन्म के बाद उसने देवता अधिष्ठित नौ रत्नों का हार अपने गले में डाल लिया था, उसका मस्तक नौ रत्नों में प्रतिबिंबित होने से उसका नाम दशानन या दशमुख हो गया । वास्तव में, रावण एक मस्तकधारी विद्याधर मनुष्य था ।

**प्रश्न 17. क्या बॉलपेन आदि में गुरु के फोटो रखे जा सकते हैं ?**

**उत्तर** नहीं ! इसमें गुरु की आशातना ही है । पेन लेकर संडास-बाथरूम में जाना, भोजन करना आदि उचित नहीं हैं ।

पेन को फेंकने, गिराने आदि में गुरु की प्रत्यक्ष आशातना है ।

**प्रश्न 18. क्या आयंबिल एकासना आदि में पाटला हिल जाय तो पच्चक्खाण का भंग होता है ?**

**उत्तर** जमीन पर घूमते हुए त्रस जीवों के रक्षण के लिए गृहस्थों को एकासना आदि करते समय पाटला रखने का विधान है । जमीन पर थाली रखी जाय और थाली में गर्मागर्म वस्तु परोसने पर त्रस जीवों की विराधना की संभावना रहती है-उस विराधना से बचने के लिए ही पाटला रखने का विधान है ।

साधु-साध्वी के पातरे के नीचे रिंग होती है, अतः उसमें रही गर्म

वस्तु से जीव-विराधना नहीं होने से उन्हें वापरते समय पाटला रखने की जरूरत नहीं है ।

पाटला हिलने पर पच्चक्खाण भंग नहीं होता है, परंतु अतिचार दोष लगता है, अतः प्रायश्चित्त से शुद्धि हो जाती है ।

**प्रश्न 19. मोक्ष की प्राप्ति में भाव की प्रधानता है तो केवलज्ञान की प्राप्ति के बाद देवताओं ने भरत चक्री को साधुवेष अर्पण क्यों किया ?**

**उत्तर** केवलज्ञान की प्राप्ति में वेष की नहीं, भावों की ही प्रधानता है, परंतु परमात्मा का शासन व्यवहारनय के आधार पर चलता है, इसी कारण केवली बने चक्रवर्ती भरत को भी इन्द्र ने वंदन नहीं किया । बल्कि उन्हें साधुवेष प्रदान करने के बाद ही वंदन किया ।

केवलज्ञान की प्राप्ति के बाद तुरंत ही मरुदेवा माता का आयुष्य पूरा हो जाने से देवताओं ने उन्हें साधुवेष प्रदान नहीं किया । यदि आयुष्य लंबा होता तो देवता उन्हें भी साध्वीवेष प्रदान करते ।

**प्रश्न 20. बरसात के जल से मस्तक भीगा हो तो सामायिक कर सकते हैं क्या ?**

**उत्तर** नहीं ! सामायिक लेने के पूर्व बालों का सूखना जरूरी है, अन्यथा सचित्त जल के संघट्टे का दोष लगता है ।

**प्रश्न 21. गुरुमूर्ति की अंजनशलाका होती है या पाँच अभिषेक ?**

**उत्तर** गणधर भगवंत गुरु भी कहलाते हैं और सभी मोक्ष गए हैं । उनकी मूर्ति यदि सिद्धावस्था में हो तो अवश्य अंजनशलाका होती है और गुरुमुद्रा में हो तो सिर्फ पाँच अभिषेक होते हैं । अन्य गुरु भगवंतों की गुरुमूर्ति के सिर्फ पाँच अभिषेक होते हैं ।

**प्रश्न 22. कौन से चार मुख्य कारणों से जीव नरक के आयुष्य का बंध करता है ?**

**उत्तर** (1) महा आरंभ (हिंसा) (2) अति परिग्रह (3) मांसाहार और (4) पंचेन्द्रिय वध ।

**प्रश्न 23. कौन से चार मुख्य कारणों से जीव देव आयुष्य का बंध करता है ?**

**उत्तर** (1) सराग संयम (2) देशविरति (3) बालतप और (4) अकाम-निर्जरा ।

**प्रश्न 24. कौन से चार मुख्य कारणों से जीव तिर्यंच गति के आयुष्य का बंध करता है ?**

**उत्तर** (1) माया (2) मन की कुटिलता (3) झूठ (4) झूठे माप-तौल ।

**प्रश्न 25. कौन से चार मुख्य कारणों से जीव मनुष्यगति के आयुष्य का बंध करता है ?**

**उत्तर** (1) सरल स्वभाव (2) नम्र स्वभाव (3) दया (4) मत्सर रहितता ।

**प्रश्न 26. बुद्धि के चार प्रकार कौनसे हैं ?**

**उत्तर** **(1) औत्पातिकी :** पहले न देखा हो, न सुना हो, न सोचा हो फिर भी तत्क्षण जवाब सूझे । उदा. रोहक ।

**(2) वैनयिकी :** गुरु का विनय करने से जो क्षयोपशम होता है ।

**(3) कार्मिकी :** निरंतर काम करते रहने से जो बुद्धि खिलती है ।

**(4) पारिणामिकी :** चिरकाल तक आगे-पीछे का विचार करने से तथा वय की वृद्धि से जो बुद्धि खिलती है ।

**प्रश्न 27. दर्शनावरणीय कर्म के क्षय या क्षयोपशम से होनेवाले चार दर्शन कौनसे हैं ?**

**उत्तर** क्षयोपशम से (1) चक्षुदर्शन (2) अचक्षुदर्शन और (3) अवधिदर्शन । क्षय से (4) केवलदर्शन ।

**प्रश्न 28. उपसर्ग के चार प्रकार कौनसे हैं ?**

**उत्तर** (1) देवता संबंधी (2) मनुष्य संबंधी (3) तिर्यंच संबंधी (4) स्वयं संबंधी (स्वयं सिर पछाड़े) ।

**प्रश्न 29. चारित्र का पालन कौनसे चार प्रकार से होता है ?**

**उत्तर** (1) सिंहवृत्ति से चारित्रग्रहण और सिंहवृत्ति से पालन करना ।

(2) सिंहवृत्ति से ग्रहण और सियाल वृत्ति से पालन करना ।

(3) सियालवृत्ति से चारित्रग्रहण और सियालवृत्ति से पालन करना ।

(4) सियालवृत्ति से चारित्रग्रहण और सिंहवृत्ति से पालन करना ।

**प्रश्न 30. किन चार कारणों से आहार संज्ञा पैदा होती है ?**

**उत्तर** (1) उदर खाली होने से (2) क्षुधा वेदनीय कर्म के उदय से (3) आहारकथा-श्रवण से (4) भोजन का चिंतन करने से ।

**प्रश्न 31. साधु-साध्वी भगवंतों को सुपात्रदान कैसे करना चाहिए ?**

**उत्तर** (1) श्रावक के लिए दान देकर भोजन करने का विधान है, अतः भोजन के पूर्व साधु-साध्वी भगवंत का योग हो तो उन्हें आहार-पानी हेतु अवश्य विनती करनी चाहिए ।

(2) घर के द्वार पर 'धर्मलाभ' की ध्वनि सुनाई देने पर बहुमान-पूर्वक गुरु भगवंत को घर में पधारने के लिए विनती करनी चाहिए और **'मत्थएण वंदामि'** कहना चाहिए।

(3) गुरु भगवंत के आगमन के बाद घर में पंखा-लाइट चालू हो तो बंद नहीं करना चाहिए और बंद हो तो चालू नहीं करना चाहिए ।

(4) दान देने के लिए कच्चे पानी से हाथ नहीं धोने चाहिए ।

(5) वोहराते समय कोई वस्तु जमीन पर न गिरे, इसकी सावधानी रखनी चाहिए ।

(6) जूते चप्पल पहिनकर नहीं वोहराना चाहिए ।

(7) वोहराते समय पहले ठोस पदार्थ, फिर द्रव पदार्थ वोहराने चाहिए ।

(8) गृहस्थ को अधिकतम वस्तु वोहराने का भाव होना चाहिए परंतु उसके लिए साधु-साध्वी पर दबाव नहीं करना चाहिए सिर्फ लाभ देने के लिए हार्दिक विनती की जा सकती है ।

(9) कारणवश साधु-साध्वी गोचरी न वोहरे तो भी उनके प्रति नाराजगी व्यक्त नहीं करनी चाहिए ।

(10) साधु-साध्वी को निर्दोष-भिक्षा वोहरानी चाहिए । रोग-वृद्धावस्था आदि के कारण सिवाय साधु के निमित्त से ही विशेष वस्तु बनाने में लाभ नहीं होता है ।

(11) रोग-अशक्ति आदि के अनिवार्य कारण के सिवाय उपाश्रय में जाकर गोचरी नहीं वोहरानी चाहिए ।

(12) सांसारिक संबंधों को महत्त्व देकर गोचरी नहीं वोहरानी चाहिए बल्कि ये त्याग धर्म के उपासक हैं, अतः इनकी भक्ति अवश्य करनी चाहिए सिर्फ इसी भाव से दान देना चाहिए ।

(13) मंत्र-तंत्र या सांसारिक लाभ पाने की अपेक्षा से गुरु भगवंत को दान नहीं करना चाहिए ।

(14) गुरु भगवंत को चॉकलेट या कोई अभक्ष्य पदार्थ नहीं वोहराना चाहिए ।

**प्रश्न 32. प्रवचन-श्रवण किस प्रकार करना चाहिए ?**

**उत्तर** (1) गुरु भगवंत के आगमन के पूर्व प्रवचनसभा में उपस्थित हो जाना चाहिए ।

(2) गुरु को वंदनकर `वायणा' के तीन आदेश माँगने चाहिए ।

(3) शक्य हो तो पहले सामायिक ले लेनी चाहिए ।

(4) प्रवचन में जूठे मुँह न जाएँ ।

(5) अपने पास Mobile हो तो उसका switch बंद रखें ।

(6) प्रवचन दरम्यान पंखे चालू न करें, क्योंकि उसमें वायुकाय तेउकाय आदि की विराधना है ।

(7) प्रवचन दरम्यान मुख्य points अवश्य Notedown करें ।

(8) प्रवचनश्रवण हेतु समय पर आएँ, देरी से आकर आगे बैठने की कोशिश न करें ।

(9) प्रवचन के समय अपनी दृष्टि गुरु भगवंत पर स्थिर रखें । जिनमंदिर की तरह यहाँ भी त्रिदिश-त्याग का पालन करें ।

(10) श्रोताओं के हावभाव से वक्ता प्रभावित होता है, अतः नींद न लेकर प्रवचन के अनुरूप चेहरे के हावभाव प्रकट करें ।

(11) प्रवचन-श्रवण एकाग्र चित्त से करने से अवश्य ही तत्त्व का बोध होगा ।

(12) प्रवचन-समाप्ति के बाद अवश्य वंदन कर `सर्व मंगल' का आदरपूर्वक श्रवण करें ।

**प्रश्न 33. उपाश्रय में श्रावक का आचरण कैसा होना चाहिए ?**

**उत्तर** (1) जिनमंदिर की तरह उपाश्रय में भी प्रवेश करते समय `निसीहि' बोलनी चाहिए। इससे सांसारिक वार्तालाप व प्रवृत्ति का त्याग किया जाता है ।

(2) गुरुवंदन करते समय उत्तरीय वस्त्र (उत्तरासन) या दुपट्टे से भूमि का तीन बार प्रमार्जन करना चाहिए ।

(3) सर्वप्रथम आचार्य आदि ज्येष्ठ गुरु भगवंत को वंदन करना चाहिए ।

(4) गुरु भगवंत यदि स्वाध्याय या अन्य प्रवृत्ति में व्यस्त हों तो धीरे से वंदन करना चाहिए ।

(5) उपाश्रय में दैनिक पेपर आदि नहीं पढ़ने चाहिए ।

(6) गुरु भगवंत के सामने कुर्सी पर नहीं बैठना चाहिए । शारीरिक प्रतिकूलता के कारण बैठना पड़े तो उनकी अनुमति अवश्य लेनी चाहिए ।

(7) उपाश्रय आराधना का स्थान है, अतः वहाँ आकर पंखे चालू नहीं करना चाहिए ।

(8) उपाश्रय में शरीर या अपने वस्त्र भीगे हों तो गुरु भगवंत का स्पर्श नहीं करना चाहिए ।

(9) उपाश्रय में कलह-झगड़ा नहीं करना चाहिए ।

**प्रश्न 34. श्रावक को कब जगना चाहिए ?**

**उत्तर** श्रावक को ब्रह्म मुहूर्त में अर्थात् सूर्योदय से 96 मिनिट पहले जग

जाना चाहिए । जो ब्रह्म मुहूर्त में सोता रहता है, उसका पुण्य भी सो जाता है ।

**प्रश्न 35. देवगति के देव की पहिचान के क्या चिह्न हैं ?**

**उत्तर** (1) उनके गले में रही फूलों की माला मुरझाती नहीं है ।
(2) आँखों की पलकें झपकती नहीं हैं ।
(3) उनके शरीर में पसीना नहीं होता है ।
(4) जमीन से उनके पाँव चार अंगुल ऊपर रहते हैं ।

**प्रश्न 36. वे कौनसा आहार लेते हैं ?**

**उत्तर** देवता कवलाहार नहीं करते हैं । आहार की इच्छा होते ही आहार के पुद्गल उनके शरीर में प्रवेश कर जाते हैं और उन्हें तृप्ति हो जाती है ।

**प्रश्न 37. क्या क्रोध शरीर को भी प्रभावित करता है ?**

**उत्तर** क्रोध को शास्त्र में आग-विष आदि की उपमाएँ दी हैं । विष व आग तो एक ही जीवन का अंत लाते हैं, जबकि क्रोध से अनेक भव बिगड़ जाते हैं ।

10 मिनिट के क्रोध से पाचन तंत्र इतना खराब हो जाता है कि उसके ठीक होने में 24 घंटे लग जाते हैं ।

क्रोध से ब्लड सर्क्युलेशन खूब बढ़ जाता है अतः उच्च रक्तचाप की बीमारी बढ़ जाती है ।

क्रोध से श्वास की गति बढ़ जाने से फेफड़े भी कमजोर हो जाते हैं ।

एड्रीनल ग्रंथियों का स्राव कम होने से पेट, आँख व मसें की बीमारियाँ भी बढ़ जाती हैं । क्रोध से स्त्री के स्तन में रहा दूध भी जहरीला हो जाता है ।

**प्रश्न 38. आभा मंडल क्या है ?**

**उत्तर** मनुष्य जो भी अच्छे-बुरे विचार करता है, तो उन विचारों के अनुरूप उसके चारों ओर एक वर्तुल खड़ा होता है, जिसे आभा मंडल कहते हैं ।

अच्छे विचारों से अच्छा व खराब विचारों से खराब आभा मंडल बनता है । उस आभा मंडल से वर्तुल के आसपास आनेवाले व्यक्ति भी प्रभावित होते हैं ।

अरिहंत परमात्मा के आभा मंडल में आने से आजन्म वैरी के वैरभाव भी शांत हो जाते हैं ।

आभा मंडल को छह भागों में बाँट सकते है–

1. अतिक्रोध, निर्दयता-क्रूरता से कृष्ण वर्ण का आभा मंडल तैयार होता है ।

2. स्त्रीलंपटता-कामवासना से नील वर्ण का आभा मंडल तैयार होता है ।

3. शोक-कलह व परनिंदा से कबूतरवर्णीय आभा मंडल तैयार होता है ।

4. विद्वान्-परोपकारी व्यक्ति का आभा मंडल दीपक के समान होता हैं ।

5. क्षमाशील, हित-मित-प्रिय भाषी का आभा मंडल पद्म (लाल) वर्ण का तैयार होता है ।

6. साधक आत्मा का आभा मंडल शंख की भाँति श्वेत होता है ।

**प्रश्न 39. जीव का सोना भला या जगना भला ?**

**उत्तर** कुछ जीवों का सोना भला है, कुछ जीवों का जगना भला है । पापी आत्माओं का सोना भला, धर्मी आत्माओं का जगना भला ।

**प्रश्न 40. नरक में सम्यक्त्वप्राप्ति किन कारणों से होती है ?**

**उत्तर** नरक के जीव को जातिस्मरण तथा पूर्व भव के कर्म का विपाक सोचने से सम्यक्त्व की प्राप्ति हो सकती है ।

**प्रश्न 41. 84 आगम कौन-कौनसे हैं ?**

**उत्तर**

| | | |
|---|---|---|
| 1. आचारांग | 29. गणिविद्या | 57. आत्मविशोधि |
| 2. सूत्रकृतांग | 30. गच्छाचार | 58. समुत्थान श्रुत |
| 3. स्थानांग | 31. देवेन्द्रस्तव | 59. वीतराग |
| 4. समवायांग | 32. मरणसमाधि | 60. विहारकल्प |

5. भगवती
6. ज्ञाताधर्मकथा
7. उपासकदशा
8. अंतकृत्दशा
9. अनुत्तरोपपातिक
10. प्रश्न व्याकरण
11. विपाकसूत्र
12. औपपातिक
13. राजप्रश्नीय
14. जीवाभिगम
15. प्रज्ञापना
16. सूर्यप्रज्ञप्ति
17. जंबुद्वीप प्रज्ञप्ति
18. चंद्रप्रज्ञप्ति
19. निरयावलिका
20. कल्पावतंसिका
21. पुष्पिका
22. पुष्पचूलिका
23. वह्निदशा
24. चतुःशरण पयन्ना
25. आतुर प्रत्याख्यान
26. महा प्रत्याख्यान
27. भक्तपरीज्ञा
28. तंदुल वैचारिक
33. संस्तारक
34. दशाश्रुतस्कंध
35. बृहत् कल्प
36. व्यवहार
37. जीतकल्प
38. निशीथ
39. महानिशीथ
40. आवश्यक
41. दशवैकालिक
42. उत्तराध्ययन
43. पिंड निर्युक्ति
44. नंदीसूत्र
45. अनुयोगद्वार
46. कल्पिताकल्पित
47. चूल्लकल्प
48. महाकल्प
49. महाप्रज्ञापना
50. चंद्रवेध्यक
51. प्रमादाप्रमाद
52. पोरिसिमंडल
53. मंडल प्रवेश
54. विद्याचारण विनिश्चय
55. ध्यानविभक्ति
56. नाग परियाकलिका
61. चरणविधि
62. ऋषिभाषित
63. द्वीपसागर प्रज्ञप्ति
64. क्षुल्लिकाविमान
65. महल्लिका विमान
66. अंगचूलिका
67. वर्गचूलिका
68. विवाहचूलिका
69. अरुणोपपात
70. वरुणोपपात
71. गरुडोपपात
72. वैश्रवणोपपात
73. वैलंधरोपपात
74. देवेन्द्रोपपात
75. उत्थानश्रुत
76. बंधदशा
77. द्विगृद्धिदशा
78. दीर्घदशा
79. महास्वप्नभावना
80. चारणस्वप्नभावना
81. तेजोनिःसर्ग
82. आशीविषभावना
83. दृष्टिविषभावना
84. अंगविद्या

**प्रश्न 42. भागवती-दीक्षा की क्या विशेषताएँ हैं ?**

**उत्तर** **(1)** भागवती दीक्षा में पूर्ण धर्म की आराधना है । गृहस्थ चाहे जितना दान-शील व तप आदि करे तो भी उसके पास आंशिक धर्म है । क्योंकि उसके जीवन में पाप के द्वार भी खुले होते हैं, जबकि साधुजीवन में एक भी पाप की छूट नहीं है । संपूर्ण

जीवन निष्पाप होने से साधुजीवन में पूर्ण धर्म है ।

**(2) संपूर्ण अभयदान :** कोई गृहस्थ गौशाला-पांजरापोल आदि खोलकर 2-5 हजार गाय-भैंस-कुत्ते आदि को मौत से बचा सकता है-परंतु जगत् में रहे सभी जीवों को अभयदान देने की ताकत एक मात्र साधुजीवन में ही है-अन्य किसी में नहीं है । साधुजीवन के पहले महाव्रत में जगत् के किसी भी जीव को नही मारने आदि की प्रतिज्ञा है ।

**(3) सामाजिक संबंधों का विसर्जन :** गृहस्थ जीवन के प्रारंभ से ही माता-पिता, भाई-बहन आदि अनेक संबंध होते हैं, उन संबंधों के व्यवहार को निभाने में ही जिंदगी पूरी हो जाती है । जबकि भागवती दीक्षा के स्वीकार के साथ ही उन सभी संबंधों का विसर्जन हो जाता है और एक मात्र, आत्मा के हितैषी पंच परमेष्ठी के साथ संबंध जुड़ता है । जगत् के सभी जीवों के साथ भी आत्म-हित का ही संबंध रहता है ।

**3. सामाजिक व्यवहारों से मुक्ति :** गृहस्थ-जीवन में हर व्यक्ति को जन्म, मृत्यु, लग्न आदि के प्रसंगों में उपस्थित रहना ही पड़ता है । उपस्थित न रहे तो जीवन के संबंध बिगड़ने-टूटने की संभावना रहती है, जबकि संयमजीवन के स्वीकार के साथ ही उन सभी व्यवहारों पर विराम लग जाता है ।

साधुजीवन का स्वीकार अर्थात् सामाजिक मृत्यु Civil-death. साधु को किसी भी सांसारिक व्यवहार में उपस्थित रहना नहीं पड़ता है ।

**4. संयम-साधक उपकरण सिवाय अन्य का त्याग :** आत्म-हित के साधक साधनों को उपकरण कहते हैं और जो आत्मा को संसार में जकड़ कर रखे, उसे अधिकरण कहते हैं ।

संयम जीवन में सिर्फ उपकरणों का स्वीकार होता है, जबकि सभी प्रकार के अधिकरणों का जीवन पर्यंत के लिए त्याग होता है ।

**5. संपूर्ण समर्पण :** संयमजीवन-स्वीकार के साथ ही अपने मन-वचन और काया के समस्त योगों का गुरुचरणों में संपूर्ण समर्पण होता है ।

गृहस्थ भी देव-गुरु की आज्ञा का पालन करता है, परंतु उसका समर्पण आंशिक होता है, जबकि साधुजीवन में संपूर्ण समर्पण होता है ।

**6. संपूर्ण ममत्व-त्याग :** संयमजीवन के स्वीकार के साथ ममत्व में कारणभूत धन-धान्य, मकान-दुकान, जमीन-जायदाद, पति / पत्नी, पिता तथा पुत्र आदि का तो त्याग किया ही जाता है, परंतु अपने देह के ममत्व का भी त्याग किया जाता है ।

धन आदि का त्याग आसान है, परंतु देह के ममत्व का त्याग अत्यंत ही कठिन है ।

विहार, केशलुंचन, गोचरी, विविध तप आदि अनुष्ठान देह के ममत्व को तोड़ने के लिए ही हैं ।

**प्रश्न 43. दीक्षा वर्षीदान में धन (रुपए) क्यों उछाले जाते हैं ?**

**उत्तर** वीतराग परमात्मा का यह संदेश कि `धन में सुख नहीं है, धन के त्याग में सुख है ।' प्रभु का यह संदेश जगत् को बताने के लिए वर्षीदान में धन का त्याग किया जाता है ।

**प्रश्न 44. प्रभुप्रतिमा पर मुकुट होता है तो गुरुमूर्ति पर मुकुट क्यों नहीं हो सकता है ?**

**उत्तर** अरिहंत परमात्मा जन्म से ही (च्यवन से ही) महान् हैं, उनकी हर अवस्था आदरणीय-पूजनीय और वेदनीय है ।

प्रभु जब राज्य का स्वीकार करते हैं, तब भी वे अत्यंत अलिप्त होते हैं ।

लग्न जीवन व राज्य का स्वीकार करने पर भी वे कर्मबंध के बजाय कर्मनिर्जरा ही करते हैं ।

प्रभु प्रतिमा पर मुकुट यह प्रभु की राज्य अवस्था का सूचक है । गुरु की महानता का प्रारंभ उनके संयमजीवन के स्वीकार से है । दीक्षाजीवन में संयम ही पर्याप्त गिना जाता है ।

साधु का संयमजीवन त्याग का प्रतीक है, अतः गुरु प्रतिमा पर मुकुट उचित नहीं है ।

साधु की प्रतिमा तो त्याग का आदर्श है । उनके हाथ में, रजोहरण है, जो संसारत्याग का सूचक है ।

**प्रश्न 45. क्या श्मशान यात्रा में 'जय जिनेन्द्र' बोल सकते हैं ?**

**उत्तर** नहीं । प्रभु का नाम भी अच्छी जगह में लेना चाहिए । मृत देह अशुद्ध है, अतः श्मशान यात्रा में प्रभु का नाम नहीं बोलना चाहिए ।

मृत देह के पास नवकार मंत्र का जोर से उच्चारण नहीं करना चाहिए ।

**प्रश्न 46. साधु-साध्वी की पालखी (अंतिम यात्रा) में 'जय जय नंदा-जय-जय भद्दा' क्यों बोला जाता है ?**

**उत्तर** समाधिपूर्वक साधु-साध्वी कालधर्म प्राप्त कर प्रायःकर वैमानिक देव गति प्राप्त करते हैं ।

वैमानिक देवलोक में किसी उत्तम आत्मा का जन्म होता है, जब अन्य देव आनंद के प्रसंग में `जय जय नंदा-जय-जय भद्दा' बोलते हैं । इसका अर्थ है-`जय हो-जय हो' आनंद हो, कल्याण हो ।

**प्रश्न 47. क्या आयुष्य बढ़ सकता है ?**

**उत्तर** आयुष्य को बढ़ाने की ताकत देवता, इन्द्र और तीर्थंकरों में भी नहीं है ।

पूर्व भव में जो आयुष्य बँधा है, वह आयुष्य बढ नहीं सकता है, परंतु घट सकता है ।

अपने आयुष्य पर कोई उपक्रम (प्रहार) लगे तो वह आयुष्य अवश्य घट सकता है ।

समय पर Treatment होने पर व्यक्ति बच जाता है । उस समय व्यवहार से कहा जाता है कि डॉक्टर ने उसे बचा दिया । वास्तव में तो आयुष्य का Balance हो तो ही व्यक्ति बच सकता है । आयुष्य कर्म पूरा हो गया हो तो दुनिया की कोई ताकत उसे बचा नहीं सकती है ।

**प्रश्न 48. क्या स्त्री और पुरुष के समान अधिकार होने चाहिए ?**

**उत्तर** आत्म द्रव्य की दृष्टि से पुरुष और स्त्री की आत्मा में कोई भेद नहीं है । परंतु संसार में कर्म के उदय से स्त्री और पुरुष की शारीरिक रचना, पुण्य, प्रभाव, बल आदि में फर्क है ही ।

पुण्य के उदय से पुरुषदेह व पाप के उदय से स्त्रीदेह प्राप्त होता है ।

माया-वक्रता-क्षुद्रता-कपट-ईर्ष्या आदि के कारण आत्मा स्त्रीवेद का बंध करती है ।

उदारता, सरलता, सहिष्णुता आदि के कारण आत्मा पुरुषवेद का बंध करती है ।

पुरुष में गंभीरता-शूरवीरता, पराक्रम आदि गुण सहज होते हैं, जबकि स्त्री में घबराहट, ईर्ष्या, कायरता-क्षुद्रता आदि दोष सहज होते हैं और कोमलता, प्रेम, रागभाव, सहनशीलता आदि गुण सहज होते हैं ।

जैनशासन में स्त्री को नेतृत्व के अधिकार नहीं दिए हैं ।

पंच परमेष्ठी में स्त्री को दो ही पदों साध्वी व सिद्ध पद का ही अधिकार है ।

अरिहंत, आचार्य, उपाध्याय, चक्रवर्ती, वासुदेव, बलदेव आदि पद स्त्री को प्राप्त नहीं होते हैं ।

स्त्री को दीक्षाप्रदान करने, प्रायश्चित्तप्रदान करने आदि के भी अधिकार नहीं हैं ।

वर्तमान में पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से स्त्री-पुरुष को समान अधिकार देने की बातें होती हैं-परंतु उसमें स्त्री को ही भयंकर नुकसान है ।

पुरुष के व्यापार-नौकरी क्षेत्रों में स्त्री के प्रवेश करने के साथ उसके शील पर संकट ही बढ़ा है ।

स्त्री के लिए शील ही सर्वस्व है । उसने अपने शील को खो दिया तो सब कुछ खो दिया है ।

**प्रश्न 49. क्या सम्यक्त्व की प्राप्ति के बाद भी तीर्थंकर-प्रकृति धारक जीव नरक में जाते हैं ?**

**उत्तर** सम्यक्त्व की प्राप्ति के बाद तीर्थंकर प्रकृतिधारक आत्मा प्रायः नरक में नहीं जाती है ।

सम्यक्त्व की उपस्थिति में मनुष्य देव आयुष्य का ही बंध करता है ।

सम्यक्त्व की प्राप्ति के पूर्व नरक आयुष्य का बंध कर लिया हो तो वह आत्मा नरक में भी जाती है-उदा. श्रेणिक महाराजा ।

श्रेणिक महाराजा-जो आगामी चौबीसी में पहले तीर्थंकर होंगे उन्होंने सम्यक्त्वप्राप्ति के पूर्व ही गर्भवती हरिणी के शिकार द्वारा नरक का आयुष्य बाँध लिया था अतः उन्हें नरक में जाना पड़ा ।

सम्यक्त्व से भ्रष्ट हो गए हों तो भावी भवों में होनेवाले तीर्थंकर की आत्मा भी मरकर उस भव में नरक में चली जाती है । जैसे त्रिपृष्ठ वासुदेव के भव में सम्यक्त्व से भ्रष्ट होकर भगवान महावीर की आत्मा उस पर्याय से 7वीं नरक में चली गई थी ।

**प्रश्न 50. हिंसा का पाप ज्यादा भयंकर है या मिथ्यात्व का ?**

**उत्तर** हिंसा से भी मिथ्यात्व का पाप ज्यादा खतरनाक है ।

एक ओर हिंसादि 17 पाप हों और दूसरी ओर सिर्फ मिथ्यात्व हो तो भी मिथ्यात्व का पाप बढ़ जाता है ।

मिथ्यात्व बलवान होता है तो 17 पाप भी पुष्ट बनते हैं और जब मिथ्यात्व कमजोर हो जाता है तो 17 पाप भी कमजोर हो जाते हैं ।

मिथ्यात्व अर्थात् उन्मार्ग पर चलना और दूसरों को भी उन्मार्ग बताना । किसी की हिंसा करनेवाला एक ही बार किसी के द्रव्य प्राणों का नाश करता है, जबकि किसी को उन्मार्ग बतानेवाला तो उसको भवोभव में मारता है ।

**प्रश्न 51. साधुजीवन में पादविहार क्यों है ?**

**उत्तर** 1. पैदल चलने से मार्ग में आने वाले जीवों की रक्षा होती है अर्थात् पहले महाव्रत का पालन होता है ।

2. साधु यदि वाहन में जाएगा तो उसे टिकिट भाड़ा आदि के लिए धन की जरूरत रहेगी । साधु यदि धन रखे तो उसके पाँचवें महाव्रत का भंग होता है ।

3. एक ही स्थान पर अधिक समय तक रहने से लोगों का अति परिचय होगा, जिससे लोग अनुकूल होंगे तो राग भाव का पोषण होगा अतः ठीक ही कहा है-

***'बहता पानी निर्मला, पड़े सो गंदा होय ।***
***साधु तो चलता भला, दाग न लागे कोय ।।***

4. पादविहार से आरोग्य का भी रक्षण होता है । चलने से शरीर के सभी अवयव Active होते हैं, जब कि एक ही जगह बैठे रहने से शरीर के अवयव जड़ हो जाते हैं ।

5. कई लोग आरोग्य के लिए Morning walk करते हैं, पाद-विहार में सहज ही walking हो जाता है ।

6. पादविहार से छोटे-छोटे गाँवों से भी गुजरना होता है, अतः उन गाँव वालों को भी धर्मोपदेश श्रवण का लाभ मिलता है ।

**प्रश्न 52. साधु को केशलुंचन करना क्यों आवश्यक बताया है ?**

**उत्तर** 1. साधुजीवन स्वाधीन जीवन है, मुंडन तथा दाढ़ी बनाने में हजाम की गुलामी रहती है ।

2. जटा रखने से जूँ आदि की संभावना रहती हैं, उसको धोने आदि में भी विराधना होती है ।

3. बाल भी मस्तक की शोभा रूप हैं, अतः कोई भी गृहस्थ घर से बाहर निकलते समय अपने बालों को सँवारता है ।

4. ब्रह्मचारी को शरीर का सौंदर्य आत्मघाती है । मुंडित मस्तकवाली स्त्री का सौंदर्य भी समाप्त हो जाता है । अतः केशलोच वैराग्य भाव का भी पोषक है ।

5. केशलोच यह शरीर के ममत्व भाव को तोड़ने का प्रबल साधन है ।

6. सिर के बाल खींचने से ज्ञानतंतु की सभी नाड़ियाँ जागृत हो जाती हैं । दिमाग में रक्तप्रवाह भी तेज हो जाता है ।

7. केशलुंचन यह आत्मा में रहे कषायों के लुंचन का प्रतीक है- केशलुंचन के साथ कषायों का भी लुंचन होना चाहिए ।

8. परमज्ञानी तीर्थंकर परमात्मा भी दीक्षा लेते समय दाढ़ी-मूँछ व सिर के केशों का पंचमुष्टि से लुंचन कर जगत् को भी एक आदर्श बतलाते हैं ।

9. मुक्ति की साधना कष्टप्रद है, अतः कष्ट सहे बिना मुक्ति नहीं मिलती है ।

**प्रश्न 53. साधु का वर्ण काला क्यों है ?**

**उत्तर** 1. काले रंग पर दूसरा रंग नहीं चढता है । साधु के वैराग्य का रंग इतना प्रबल है कि उस पर संसार के राग का रंग नहीं चढ़ता है । ठीक कहा है-

**कबीरदास की काली चदरिया, चढ़े न दूजो रंग ।**

2. उष्ण आदि परिषह को सहन करने के कारण भी शरीर का वर्ण श्याम हो जाता है, अतः साधु का श्याम वर्ण है ।

3. श्याम शरीरवाले शारीरिक दृष्टि से खूब मजबूत होते हैं, अतः साधु का श्याम वर्ण है ।

**प्रश्न 54. घर में घर-मंदिर कहाँ बनाना चाहिए ?**

**उत्तर** घर में प्रवेश करते समय बाएँ हाथ की ओर शल्यरहित भूमि पर, जमीन से ढाई हाथ ऊँचा घर मंदिर बनाना चाहिए ।

**प्रश्न 55. कच्चे पानी में चूना डालने के बाद वह पानी कितने समय तक अचित्त रहता है ?**

**उत्तर** कच्चे पानी में चूना डालने के बाद वह पानी 48 मिनिट बाद अचित्त हो जाता है, फिर वह पानी 72 घंटे तक अचित्त रहता है ।

**प्रश्न 56. अनशन और आत्महत्या में क्या फर्क है ?**

**उत्तर** 1. अनशन में आत्मा को पाप से भय है ।
आत्महत्या में आत्मा को दुःख से भय है।

2. अनशन में अशुभ कर्मों का क्षय होता है ।
आत्महत्या में संक्लेश है ।

3. अनशन में समाधि है ।
आत्महत्या में असमाधि है ।
4. आत्महत्या में दुर्गति है ।
अनशन में सद्गति है ।
5. अनशन में जिनाज्ञा पालन है ।
आत्महत्या में जिनाज्ञा भंग है ।
6. अनशन में बहादुरी है ।
आत्महत्या में पलायनवृत्ति है ।
7. अनशन में पराक्रम है ।
आत्महत्या में कायरता है ।

**प्रश्न 57. पच्चक्खाण लेते समय अंत में क्या बोलना चाहिए ?**

**उत्तर** खुद पच्चक्खाण लेते हों तो पच्चक्खामि, वोसिरामि तथा दूसरे को पच्चक्खाण देना हो तो पच्चक्खाइ-वोसिरइ बोलें !

**प्रश्न 58. शाश्वत प्रतिमाएँ कौनसी हैं ?**

**उत्तर** ऋषभ, चंद्रानन, वारिषेण, वर्धमान ।

**प्रश्न 59. जैन साधु को एकांत भिक्षा विधान क्यों है ?**

**उत्तर** जिस प्रकार जैन साधु के लिए मधुकरी वृत्ति से भिक्षा ग्रहण, करने का विधान है, उसी प्रकार गोचरी वापरने की क्रिया (आहार लेना) भी एकांत में ही करने का विधान है ।

सामान्य गृहस्थों की तरह लोगों के सामने बैठकर भोजन करने का सर्वथा निषेध है । उसके पीछे निम्न लिखित कारण हैं–

(1) मुनि यदि जाहिर में भोजन करे और उस समय कोई भिखारी याचक आ जाय और भीख माँगे और अनुकंपा दया से प्रेरित होकर मुनि उसे भिक्षा दे तो उसे पुण्यकर्म का बंध होता है, जबकि मुनि के लिए पुण्यबंध की क्रिया का निषेध है ।

मुनि की साधना मुख्यतया मोक्ष के लिए होती है और मोक्ष की प्राप्ति पुण्य और पाप उभय के क्षय से होती है ।

(2) जाहिर में भोजन करे और उस समय भीख मांगने वाले

भिखारी को भोजन न दे तो भिखारी के मन में जैन मुनि के प्रति दुर्भाव पैदा होगा । ``अहो ! ये कितने निर्दय हैं, मैं भूखा हूँ, भूख से दुःखी हूँ फिर भी मुझे भोजन नहीं देते हैं और स्वयं मजेसे भोजन कर रहे हैं ।''

अतः याचक के मन में किसी प्रकार का दुर्भाव पैदा न हो, इसलिए जैन मुनि को एकांत में ही भिक्षा वापरने का विधान है । साधु के पात्र में यदि अच्छी वस्तुएँ हों तो उन्हें देखकर किसी को यह भाव आ सकता है ``ये माल-मिष्टान्न ही खाते हैं, अतः ये त्यागी कैसे ?''

साधु के पात्र में नीरस आहार देखकर किसी को यह भाव आ सकता है कि ``साधु को तो लूखा-सूखा ही मिलता है, अतः मैं दीक्षा नहीं लूंगा ।''

किसी की दृष्टि खराब हो तो अपचा, उदरशूल आदि की बीमारी भी हो सकती है ।

साधु को भोजन करते देख कोई भिखारी आ जाय और उसे न दे तो साधु दयाहीन कहलाएगा और भिखारी को दे तो भिक्षा देनेवाले के साथ विश्वासघात का दोष लगता है ।

**प्रश्न 60. आम कब तक अभक्ष्य हैं ?**

**उत्तर** आर्द्रा नक्षत्र से कार्तिक पूनम तक ।

**प्रश्न 61. क्या फूलगोभी खा सकते हैं ?**

**उत्तर** यह हमेशा अभक्ष्य है ।

**प्रश्न 62. तिल कब तक चलते हैं ?**

**उत्तर** फा. चातु के पहले उबले हुए गर्म पानी में धोकर सुखाए हों तो 12 मास चलते हैं ?

**प्रश्न 63. दही का काल कितना ?**

**उत्तर** सुबह जमाए तो सोलह प्रहर-शाम को जमाए तो 12 प्रहर । जामन डालने के बाद दो रात बीतनी नहीं चाहिए ।

उदा. सोमवार को सुबह जमाया हो तो बुधवार को सूर्योदय के पहले तक चलता है ।

**प्रश्न 64. चार समाधि के 16 भेद कौनसे हैं ?**

**उत्तर** **1. विनय समाधि :**

(1) अर्थी बनकर गुरु की आज्ञा को सुनने की इच्छा करे ।

(2) गुरु के आदेशानुसार उस कार्य को आदरपूर्वक स्वीकार करे ।

(3) स्वीकृत कार्य का अच्छी तरह आचरण करे ।

(4) कार्य करने के बाद अपनी प्रशंसा की इच्छा न करे ।

**2. श्रुत समाधि :**

(1) ज्ञानप्राप्ति के लिए श्रुत पढ़े-परंतु अभिमान के पोषण के लिए नहीं ।

(2) चित्त की एकाग्रता के लिए पढ़े ।

(3) धर्मतत्त्व का ज्ञाता बनकर शुद्ध धर्म में आत्मा को स्थापित करने के लिए पढ़े ।

(4) अध्ययन के फलस्वरूप स्वयं शुद्ध धर्म में रहकर दूसरों को भी शुद्ध धर्म में स्थापित करने के लिए पढ़े ।

**3. तप समाधि :**

(1) इस लोक की लब्धि पाने के लिए तप न करे ।

(2) परलोक में भोग आदि की प्राप्ति के लिए तप न करे ।

(3) चारों दिशाओं में कीर्ति व एक दिशा में प्रसिद्धि पाने के लिए तप न करे ।

(4) सिर्फ कर्मनिर्जरा के लिए तप करे ।

**4. आचार समाधि :**

(1) इस लोक के सुख पाने के लिए आचार-पालन न करे ।

(2) परलोक के वैषयिक सुख पाने के लिए आचार-पालन न करे ।

(3) प्रसिद्धि पाने के ध्येय से आचार-पालन न करे ।

(4) सिर्फ मोक्ष के ध्येय से आचार-पालन करे ।

**प्रश्न 65. सिद्धों के 31 गुण कौनसे हैं ?**

**उत्तर** सिद्धों के ये सभी गुण अभाव स्वरूप है ।

5 गुण - 5 संस्थान (गोल, चौरस, लंबचौरस, त्रिकोण और वलयाकार का अभाव)

5 गुण - 5 वर्ण (शुक्ल, कृष्ण, हरा, लाल, पीले रंग का अभाव)
2 गुण - 2 गंध (सुरभि और दुरभि गंध का अभाव)
5 गुण - 5 रस (मधुर, तिक्त, कटु, अम्ल, कषाय रस का अभाव)
8 गुण - 8 स्पर्श (शीत-उष्ण, गुरु-लघु, कठोर-कोमल, चिकना-रूखा का अभाव)
3 गुण - 3 वेद (पुरुष वेद, स्त्रीवेद तथा नपुंसक वेद का अभाव ।)
1 गुण - शरीर का अभाव ।
1 गुण - कर्म के संग का अभाव ।
1 गुण - जन्म का अभाव ।

**प्रश्न 66. 21 प्रकार की जिन-पूजाएँ कौनसी हैं ?**

**उत्तर** **1. स्नात्र पूजा :** प्रभु का पंचामृत से प्रक्षालन करना ।
**2. विलेपन पूजा :** प्रभु के देह पर बरास से विलेपन करना ।
**3. आभूषण पूजा :** प्रभु के देह पर अलंकार चढ़ाना ।
**4. पुष्प पूजा :** प्रभु की सुंदर पुष्पों से पूजा करना ।
**5. पुष्पमाला पूजा :** प्रभु को सुगंधित फूलों का हार पहिनाना ।
**6. धूप पूजा :** प्रभु को सुगंधित धूप करना ।
**7. दीपक पूजा :** प्रभु के आगे दीपक रखना ।
**8. फल पूजा :** प्रभु के आगे कीमती फल रखना ।
**9. अक्षत पूजा :** अखंड चावल से स्वस्तिक आदि बनाना ।
**10. पत्र पूजा :** नागरवेल आदि के पत्तों से प्रभु को सजाना ।
**11. सुपारी पूजा :** प्रभु की हथेली में सुपारी रखना ।
**12. नैवेद्य पूजा :** प्रभु के आगे मूल्यवान नैवेद्य रखना ।
**13. जल पूजा :** प्रभु के आगे जल से भरे कलश रखना ।
**14. वस्त्र पूजा :** प्रभु के शरीर पर कीमती वस्त्र रखना अथवा चंदरवा, छोड़ आदि बाँधना ।
**15. चामर पूजा :** प्रभु के आगे चामर वींजना ।
**16. छत्र पूजा :** प्रभु के मस्तक पर तीन छत्र रखना ।
**17. वाद्ययंत्र पूजा :** सुमधुर वाद्ययंत्र बजाना ।

**18. गीत पूजा :** प्रभु के आगे गीत गाना ।

**19. नृत्य पूजा :** प्रभु के आगे नृत्य करना ।

**20. स्तुति पूजा :** प्रभु की स्तुति करना ।

**21. द्रव्य पूजा :** प्रभु के भंडार में रोकड रुपए आदि डालना ।

**प्रश्न 67. सिद्धों के 31 गुण कौन से हैं ?**

**उत्तर** ज्ञानावरणीय के 5 भेदों का अभाव
दर्शनावरणीय के 9 भेदों का अभाव
वेदनीय के 2 भेदों का अभाव
मोहनीय के 2 भेदों का अभाव
आयुष्य के 4 भेदों का अभाव
नामकर्म के 2 भेदों का अभाव
गोत्रकर्म के 2 भेदों का अभाव
अंतरायकर्म के 5 भेदों का अभाव
आठ कर्मों के 31 भेदों के अभाव रूप सिद्धों के 31 गुण हैं ।

**प्रश्न 68.** 24 **तीर्थंकरों के कुल साधु कितने थे ?**

**उत्तर** 28,48,000

**प्रश्न 69. 24 तीर्थंकरों के कुल साध्वियाँ कितनी थीं ?**

**उत्तर** 48,70,800

**प्रश्न 70. चक्रवर्ती की समृद्धि कौनसी होती है ?**

**उत्तर** 1. 32,000 देशों व राजाओं का मालिक ।
2. 9 निधान व 14 रत्नों का स्वामी ।
3. 84,000 हाथी-घोड़े व स्थ का मालिक ।
4. 64,000 स्त्रियों का पति ।

**प्रश्न 71. बलदेव की विशेषताएँ लिखें ?**

**उत्तर** बलदेव और वासुदेव दोनों बड़े-छोटे भाई होते हैं-उनके पिता एक व माता अलग-अलग होती है ।
बलदेव को वासुदेव पर गाढ़ राग होता है । बलदेव, वासुदेव की

मृत्यु के बाद भी छह मास तक वासुदेव के देह को नहीं छोड़ता है ।

दीक्षा लेकर मोक्ष में या देवलोक में जाते हैं ।

**प्रश्न 72. चक्रवर्ती की भावी गति कौनसी होती है ?**

**उत्तर** अगर दीक्षा लेते हैं तो मरकर मोक्ष या देवलोक में और दीक्षा न लें तो नरक में जाते हैं । भव्यात्मा होने से अवश्य मोक्षगामी होते हैं ।

**प्रश्न 73. वासुदेव-प्रतिवासुदेव की भावी गति कौनसी ?**

**उत्तर** दोनों भव्यात्मा होते हैं, परंतु पूर्व भव में नियाणा करके आए होने से मरकर नरक में जाते हैं । प्रतिवासुदेव तीन खंड का अधिपति बनता है, फिर उसे मारकर वासुदेव तीन खंड का अधिपति बनता है ।

**प्रश्न 74. सिद्धों की अवगाहना कितनी होती है ?**

**उत्तर** सिद्धों की जघन्य अवगाहना एक हाथ 8 अंगुल व उत्कृष्ट अवगाहना 303 धनुष 1 हाथ 8 अंगुल होती है ।

**प्रश्न 75. साधु को स्नान का निषेध क्यों ?**

**उत्तर** स्नान से देहशुद्धि होती है अतः शरीर के राग भाव का पोषण होता है । स्नान भी एक शणगार है, अतः अन्य के राग में भी निमित्त बनता है ।

**प्रश्न 76. साधु डंडा क्यों रखते हैं ?**

**उत्तर** साधु के पास रहा डंडा, लाठी-चार्ज करने या किसी को मारने के लिए नहीं है ।

परंतु डंडा हाथ में होने से आत्म-रक्षा का साधन बनता है । विहार में कई बार कुत्ते भोंकते हैं परंतु डंडा देखकर नजदीक नहीं आते हैं अर्थात् काटते नहीं हैं ।

विहार दरम्यान कहीं नदी आ जाय तो डंडे से पानी की गहराई मापी जा सकती है ।

वृद्धावस्था में पाँव को सहारा मिलता है ।

**प्रश्न 77. साधु भगवंत ऊनी कामली क्यों रखते हैं ?**

**उत्तर** जैनागम के अनुसार रात्रि में तो ऋतुअनुसार सूर्योदय के बाद भी थोड़े समय तक तथा सूर्यास्त के थोड़े समय पूर्व भी सूक्ष्म अप्काय जीवों की वृष्टि होती है, उन जीवों को अपने शरीर की गर्मी से पीड़ा न हो इसके लिए कामली काल में कामली ओढ़ी जाती है ।

असाढ़ी चातुर्मास में सूर्योदय के बाद व सूर्यास्तपूर्व छह घड़ी, कार्तिक चातुर्मास में चार घड़ी व फाल्गुण चातुर्मास में दो घड़ी तथा बारहमास रात्रि में कामली काल माना जाता है, अतः उस समय खुले आकाश में जाना हो तो, कामली का उपयोग किया जाता है ।

**प्रश्न 78. कच्चे पानी को उबालते हैं तो पानी के जीव मर जाते हैं तो तपश्चर्या में गर्म पानी क्यों पीते हैं ?**

**उत्तर** जैनधर्म की मान्यतानुसार पानी की एक बूंद में अप्काय के असंख्य जीव होते हैं । उन जीवों का आयुष्य बहुत ही छोटा होता है, प्रति समय असंख्य जीव पैदा होते हैं और मरते हैं । पानी को एक बार अच्छी तरह से उबाल देने से उसकी योनि मर्यादित समय के लिए समाप्त हो जाती है । एक बार पानी को उबाल देने से चातुर्मास में तीन प्रहर तक, सर्दी में चार प्रहर तक एवं गर्मी में पाँच प्रहर तक वह पानी अचित्त रहता है । अतः तुलनात्मक दृष्टि से विचार किया जाय तो पानी को उबालने में कम हिंसा है और न उबालने में ज्यादा हिंसा है ।

(1) सचित्त जल के उपयोग में मन के परिणाम अधिक कठोर बनते हैं, जबकि अचित्त जल के पान में मन के परिणाम कोमल रहते हैं ।

(2) सचित्त वस्तु व सचित्त जल कामवर्धक है । अचित्त जल से कामविकार शांत हो जाते हैं ।

(3) आरोग्य की दृष्टि से भी उबाला हुआ अचित्त जल आरोग्य-वर्धक और रोगनाशक कहा गया है ।

**प्रश्न 79. एक ओर जिनशासन के सभी अनुष्ठान और दूसरी ओर एक साधर्मिक भक्ति, यह कैसे ?**

**उत्तर** जिनशासन में जितने अनुष्ठान बताए हैं, वे सभी अनुष्ठान करने की ताकत किसी एक में नहीं होती है । आयुष्य, संयोग, बल आदि को ध्यान में रखकर अनुष्ठान किया जा सकता है ।

जिनशासन को प्राप्त अलग-अलग साधर्मिक अलग-अलग अनुष्ठान में जुड़े होते हैं, अतः उनकी भक्ति करने से उनके सभी अनुष्ठानों की अनुमोदना का लाभ प्राप्त कर सकते हैं, इसलिए एक अपेक्षा से कहा गया है कि साधर्मिक भक्ति द्वारा सभी अनुष्ठानों का लाभ मिलता है ।

साधर्मिक भक्ति के केन्द्र में उसकी गुण-गरिमा देखने की है, न कि वह गरीब है या अमीर ।

गरीबी को देखकर भक्ति नहीं होती है, वहां तो होगी अनुकंपा ।

**प्रश्न 80. साधर्मिक कौन ?**

**उत्तर** जो आत्महितैषी हो, प्रभुशासन का रागी हो और जिसे संसार से छूटने की भावना हो, वह साधर्मिक है । आचार-पालन में शिथिल हो सकता है, परंतु विचार तो उसके प्रभु के मार्ग के अनुकूल ही होने चाहिए ।

**प्रश्न 81. नवकार मंत्र में शब्दों के संयोजन का क्या महत्त्व है ?**

**उत्तर** 1. नवकार के 68 अक्षर 68 तीर्थ स्वरूप हैं ।

2. नवकार के 24 गुरु अक्षर 24 तीर्थंकरों के प्रतीक हैं ।

3. नवकार के 11 ह्रस्व अक्षर 11 गणधर के प्रतीक हैं ।

4. नवकार में 4 बार `अ' अक्षर चार कषाय रूपी आस्त्रवरोध के प्रतीक हैं ।

5. नवकार में तीन `र'-रत्नत्रयी के प्रतीक हैं ।

6. नवकार में आठ बार `स' आठ सिद्धि के प्रतीक हैं ।

7. नवकार में नौ बार `म' 5 महाव्रत व 4 मंगल के प्रतीक हैं ।

8. नवकार में तीन बार `य' तीन योग के प्रतीक हैं ।

**प्रश्न 82. छह आवश्यक को कौनसी उपमा दे सकते हैं ?**

**उत्तर** सामायिक = हॉस्पिटल है ।
चउविसत्थो = मुख्य डॉक्टर ।
वंदन = सहायक डॉक्टर ।
प्रतिक्रमण = ऑपरेशन
कायोत्सर्ग = ड्रेसिंग
प्रत्याख्यान = प्रिस्क्रीप्शन

**प्रश्न 83. सूत्र कंठस्थ करते समय कौनसी सावधानी रखनी चाहिए ?**

**उत्तर** 1. पुस्तक जमीन पर न रखकर ठवणी पर रखें ।
2. गुरु को वंदन कर सूत्र याद करें ।
3. पुस्तक पर थूक न लगे-मुहपत्ति का प्रयोग करें ।
4. सूत्र का स्पष्ट उच्चारण करें ।

**प्रश्न 84. सामायिक में चार प्रकार के धर्मों की आराधना कैसे ?**

**उत्तर** 1. पाप क्रियाओं का त्याग होने से सभी जीवों को अभयदान अर्थात् दान धर्म की आराधना ।
2. स्त्री के स्पर्श आदि का त्याग होने से शील धर्म की आराधना ।
3. चार आहार का त्याग होने से तप धर्म की आराधना ।
4. धर्म ध्यान की आराधना होने से `भाव' धर्म की आराधना ।

**प्रश्न 85. किस कारण देवता मनुष्य-लोक में नहीं आते हैं ?**

**उत्तर** 1. देवलोक में उत्पन्न होने के बाद देवता वहाँ रही सुंदर देवांगनाओं के प्रेम में मुग्ध हो जाते हैं । उन देवियों के मनोहर शब्द, रूप, रस, गंध और स्पर्श के सुख में अत्यंत आसक्त बन जाते हैं ।
2. वहाँ पैदा होने के बाद नवीन विषयसुखों के भोग के कारण वे देव असमाप्त कर्त्तव्यवाले ही होते हैं । जैसे स्नान करके तैयार होने के साथ नाटक देखने में मग्न हो जाते हैं । नाटक पूरा होते ही अन्य सुख में तल्लीन बन जाते हैं ।
3. मनुष्य-लोक में रहे मनुष्यों व तिर्यंचों के मृत-कलेवर, मल-मूत्र आदि की दुर्गंध 400 से 500 योजन तक ऊपर जाती है ।

उस दुर्गंधित वातावरण के कारण भी देवताओं को यहाँ आने का मन नहीं होता है ।

**प्रश्न 86. सामायिक का काल कब से कब तक गिनना चाहिए ?**

**उत्तर** `करेमि भंते' की प्रतिज्ञा उच्चरने से सामायिक का काल प्रारंभ होता है । 48 मिनिट पूर्ण होने के बाद सामायिक पारने की क्रिया प्रारंभ करनी चाहिए ।

**प्रश्न 87. क्या गुरुमूर्ति की अष्ट प्रकारी पूजा रोज जरूरी है ?**

**उत्तर** गुरुमूर्ति की प्रतिष्ठा के बाद 10 दिन तक प्रतिदिन अष्ट प्रकारी पूजा करनी चाहिए, उसके बाद अष्ट प्रकारी पूजा जरूरी नहीं है । वासक्षेप व धूप-दीप से भी चल सकता है ।

**प्रश्न 88. जिनशासन की प्रभावना हो ऐसी प्रवृत्ति करने से क्या फायदा होता है ?**

**उत्तर** प्रभावना करनेवाले का सम्यग्दर्शन निर्मल बनता है ।

**प्रश्न 89. `अष्टह्निक-महोत्सव' सही है या `अष्टाह्निका महोत्सव'?**

**उत्तर** महोत्सव शब्द पुल्लिंग होने से अष्टाह्निक-महोत्सव प्रयोग सही है ।

**प्रश्न 90. इडा, पिंगला और सुषुम्ना नाड़ी किसे कहते हैं ?**

**उत्तर** बाईं नासिका के स्वर को चंद्र स्वर कहते हैं । उसे इडा नाड़ी भी कहते हैं ।

दाईं नासिका के स्वर को सूर्य स्वर कहते हैं उसे पिंगला नाड़ी भी कहते हैं ।

दोनों नासिका से जब स्वर चलता हो उसे सुषुम्ना नाड़ी कहते हैं ।

**प्रश्न 91. 400 बार अरिहंत पद का जाप करने से क्या फल होता है ?**

**उत्तर** कलिकालसर्वज्ञ हेमचंद्राचार्यजी ने योगशास्त्र के आठवें प्रकाश में कहा है-`अरिहंत' इन चार अक्षरों को जपनेवाला योगी उपवास का फल पाता है । `चत्वारि चतुरक्षरं जपन् योगी, चतुर्थफल-मश्नुते ।'

**प्रश्न 92. मंदिरजी में कौन कौन से देव-देवी की प्रतिष्ठा हो सकती है ?**

**उत्तर** शास्त्रीय मर्यादानुसार मंदिर में जो मूलनायक भगवान हो, उन्ही के यक्ष-यक्षिणी की प्रतिष्ठा हो सकती है । अन्य देवी-देवताओं की प्रतिष्ठा उचित नहीं है ।

यदि मूलनायक प्रभु की प्रतिष्ठा परिकर सहित अर्थात् अरिहंत अवस्था में हो तो उनकी गादी के नीचे ही यक्ष-यक्षिणी आ जाते हैं, ऐसी स्थिति में अलग से प्रतिष्ठा न करे तो भी चलता है ।

**प्रश्न 93. देव-देवी की प्रतिष्ठा के चढ़ावे की रकम किस खाते में जाती है ?**

**उत्तर** जिनमंदिर यदि स्व द्रव्य से बना हो अथवा मंदिर की जमीन साधारण खाते से हो तथा देवकुलिका का निर्माण साधारण खाते में से किया हो तो देव-देवी की प्रतिष्ठा की रकम साधारण खाते में ले जा सकते हैं-परंतु उस साधारण की रकम का उपयोग साधर्मिक वात्सल्य (भोजन) या प्रभावना में नहीं होना चाहिए ।

**प्रश्न 94. दीक्षा देते समय रजोहरण की दस्सी किस ओर होनी चाहिए ?**

**उत्तर** दीक्षा देते समय शिष्य के दाहिने हाथ की ओर रजोहरण की दस्सी हो, इस प्रकार रजोहरण देना चाहिए ।

**प्रश्न 95. मंदिर में नवग्रह की स्थापना कहाँ होती है ?**

**उत्तर** परिकर वाली अरिहंताकार प्रतिमा में प्रभुजी की गादी के नीचे नवग्रहों की प्रतिष्ठा होती है ।

**प्रश्न 96. क्या गुरु के सामने गँहुली करते समय सिद्धशिला की रचना कर सकते हैं ?**

**उत्तर** प्रभु के पास जो माँगना है, वो ही गुरु के पास माँगना है, अतः मोक्ष की प्रार्थना रूप सिद्धशिला की रचना गुरु के आगे भी कर सकते हैं ।

**प्रश्न 97. नौ लौकांतिक देवों के कितने भव बाकी होते हैं ?**

**उत्तर** वे एक भवावतारी होते हैं, मतांतर से वे 7-8 भवों में मोक्ष जानेवाले भी कहे जाते हैं ।

**प्रश्न 98. पाँच अनुत्तर देवों के कितने भव होते हैं ?**

**उत्तर** पाँचवें सर्वार्थसिद्ध विमान के देवता एका भवावतारी होते हैं, जबकि चार अनुत्तर के देवों के संख्याता भव हो सकते हैं ।

**प्रश्न 99. क्या दही अभक्ष्य है ?**

**उत्तर** दही अभक्ष्य नहीं है । दो रात्रि बीतने के बाद त्रस जीवों की उत्पत्ति हो जाने से उसे अभक्ष्य कहा है ।

**प्रश्न 100. ध्यान के लिए शरीर में 12 स्थान कौनसे हैं ?**

**उत्तर** 1. नाभि 2. हृदय 3. नासाग्र 4. भाल (ललाट) 5. आज्ञाचक्र 6. तालु 7. बायाँ नेत्र 8. दायाँ नेत्र 9. जिह्वाग्र 10. बायाँ कान 11. दायाँ कान 12. शिखा ।

**प्रश्न 101. चरणसित्तरी व करणसित्तरी में चरण-करण का क्या अर्थ है ?**

**उत्तर** नित्य अनुष्ठान को चरण कहते हैं । विशेष प्रयोजन पर होनेवाली क्रिया को करण कहते हैं ।

**प्रश्न 102. तीर्थंकरों के आहार-निहार की क्रिया को कौन नहीं देख सकता है ?**

**उत्तर** तीर्थंकरों के आहार-निहार को चर्म चक्षुवाले अर्थात् मतिश्रुतज्ञानी नहीं देख सकते हैं । अतीन्द्रिय ज्ञानी अर्थात् अवधि, मनःपर्यव- एवं केवलज्ञानी देख सकते हैं ।

**प्रश्न 103. सोते समय साधु-साध्वी को रजोहरण किस ओर रखना चाहिए ?**

**उत्तर** मस्तक के नीचे दाई ओर रखना चाहिए ।

**प्रश्न 104. रोग पैदा होने के 9 निमित्त कारण कौनसे हैं ?**

**उत्तर** 1. अतिभोजन करने से ।
2. अहित भोजन-अजीर्ण में भोजन करने से ।
3. दिन में ज्यादा सोने से ।
4. रात्रि में ज्यादा जागने से ।
5. मल को रोकने से ।
6. पेशाब रोकने से ।

7. अतिश्रम करने से ।
8. प्रकृति से प्रतिकूल भोजन करने से ।
9. काम में तीव्र आसक्ति से (अमर्यादित काम-विषयसेवन से ।)

**प्रश्न 105. पहले प्रहर में वहोरा हुआ आहार साधु-साध्वी को कब तक कल्पता है ?**

**उत्तर** तीन प्रहर तक कल्पता है । उसके बाद अर्थात् चौथे प्रहर में नहीं कल्पता है ।

**प्रश्न 106. साधु-साध्वी को कितनी दूर के क्षेत्र से लाया हुआ आहार कल्पता है ?**

**उत्तर** दो कोस के मध्य से लाया हुआ आहार कल्पता है ।

**प्रश्न 107. एक भवावतारी देवताओं को आयुष्य के छह मास बाकी रहने पर च्यवन के चिह्न दिखाई देते हैं ?**

**उत्तर** नहीं दिखाई देते हैं ।

**प्रश्न 108. समवसरण में देशना किस मुद्रा से सुनते हैं ?**

**उत्तर** चारों निकाय की देवियाँ तथा साध्वीजी खड़े-खड़े देशना सुनती हैं । चारों निकाय के देवता और नर-नारी तथा साधु बैठकर देशना सुनते हैं ।

**प्रश्न 109. प्रभु की देशना के बाद गणधर भगवंत कहाँ 'बैठकर देशना देते हैं ?'**

**उत्तर** भगवान के पादपीठ पर बैठकर देशना देते हैं ।।

**प्रश्न 110. आचारांग सूत्र 18000 पद प्रमाण है तो एक पद किसे कहते हैं ?**

**उत्तर** 'रत्नसार' ग्रंथ के अनुसार एक पद में 51,08,84621 श्लोक होते हैं ।

**प्रश्न 111. कालिक और उत्कालिक सूत्र किसे कहते हैं ?**

**उत्तर** जो सूत्र दिन और रात्रि के प्रथम व अंतिम प्रहर में ही पढ़े जाते है, वे उत्तराध्ययन आदि कालिक सूत्र कहलाते हैं तथा जो सूत्र कालवेला छोड़कर पढ़े जाते हैं वे उत्कालिक कहलाते हैं ।

**प्रश्न 112. चढ़ावे की रकम कब तक भर देनी चाहिए ?**

**उत्तर** देवद्रव्य-ज्ञानद्रव्य-साधारण द्रव्य आदि किसी भी प्रकार के चढ़ावे की रकम तत्काल भर देनी चाहिए ! क्योंकि–

1. आयुष्य का कोई भरोसा नहीं होता । किस समय आयुष्य पूरा हो जाएगा, कह नहीं सकते हैं ।

चढ़ावा स्वेच्छा से बोला है तो उस रकम को चुका देना अपना कर्तव्य है । देरी करे और मौत हो जाय तो उसका कर्जा सिर पर रह जाता है ।

2. अपनी आर्थिक स्थिति में कभी भी बदलाव आ सकता है । आजकल के कई व्यापार-धंधों में व्यक्ति अचानक ही ऊपर से नीचे आ जाता है । आज चढ़ावा बोले-आज आर्थिक स्थिति अच्छी है, परंतु पापोदय हो जाय तो अपनी स्थिति बिगड़ भी सकती है, अतः विलंब करना ठीक नहीं है ।

3. मन बड़ा चंचल है । मन के परिणाम सदैव एक समान नहीं रहते हैं । आज भाव ऊँचे हैं, कल ऊँचे ही रहेंगे, वैसी गारंटी नहीं है । अतः चढ़ावे बोलते समय आज जो भाव हैं, कल वे भाव उतर भी सकते हैं, अतः विलंब करना ठीक नहीं है ।

**प्रश्न 113. क्या देवी-देवता कवलाहार करते हैं ?**

**उत्तर** नहीं ! आहार की इच्छा मात्र से ही उन्हें तृप्ति हो जाती है ।

**प्रश्न 114. वेशभूषा की स्पर्धा में साधु-साध्वी का वेष धारण कर सकते हैं क्या ?**

**उत्तर** नहीं ! यह पवित्र वेष है, अतः सिर्फ स्पर्धा के लिए यह वेष धारण नहीं कर सकते हैं ।

**प्रश्न 115. बलदेव मरकर कहाँ जाते हैं ?**

**उत्तर** मोक्ष में अथवा देव गति में ।

**प्रश्न 116. क्या सभी बलदेव दीक्षा लेते हैं ?**

**उत्तर** हाँ ! सभी दीक्षा लेते हैं ।

**प्रश्न 117. वासुदेव व बलदेव का क्या संबंध होता है ?**

**उत्तर** वासुदेव-बलदेव एक ही पिता के पुत्र होते हैं, परंतु माता अलग-अलग होती है ।

**प्रश्न 118. नौ बलदेव मरकर कहाँ गए ?**

**उत्तर** आठ बलदेव मोक्ष गए । बलभद्रजी (कृष्ण के भाई) पाँचवें देवलोक में गए ।

**प्रश्न 119. क्या 63 शलाका पुरुष भव्य होते हैं ?**

**उत्तर** हाँ ! भव्य होते हैं ।

**प्रश्न 120. विद्याचारण मुनि ऊपर कहाँ तक जा सकते हैं ?**

**उत्तर** पांडुकवन तक ।

**प्रश्न 121. विद्याचारण मुनि तिर्च्छालोक में कहाँ तक जा सकते हैं ?**

**उत्तर** नंदीश्वर द्वीप तक ।

**प्रश्न 122. जंघाचारण मुनि तिर्च्छालोक में कहाँ तक जा सकते हैं ?**

**उत्तर** रुचकवर द्वीप तक ।

**प्रश्न 123. भरत क्षेत्र के छह खंडों में कुल कितने देश हैं ?**

**उत्तर** 32000 देश हैं ।

**प्रश्न 124. जंबुद्वीप के महाविदेह में कम-से-कम कितने तीर्थंकर होते हैं ?**

**उत्तर** कम-से-कम चार ।

**प्रश्न 125. महाविदेह में मनुष्य का आयुष्य कितना होता है ?**

**उत्तर** एक करोड़पूर्व वर्ष ।

**प्रश्न 126. कूर्मोन्नत योनि किसकी होती है ?**

**उत्तर** तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव की माता की होती है ।

**प्रश्न 127. तेउकाय व वायुकाय के जीव मरकर कहाँ पैदा होते हैं ?**

**उत्तर** वे मरकर मनुष्य नहीं बनते हैं, वे तिर्यंच गति में ही पैदा होते हैं ।

**प्रश्न 128. क्या मोबाइल में देव-गुरु का फोटो रख सकते हैं ?**

**उत्तर** नहीं ! इससे आशातना होती है ।

**प्रश्न 129. क्या गले की कंठी में भगवान या गुरु का फोटो रख सकते हैं ?**

**उत्तर** नहीं ! इससे आशातना होती है ।

**प्रश्न 130. क्या पेन में देव-गुरु के फोटो रख सकते हैं ?**

**उत्तर** नहीं ! इससे आशातना होती है ।

**प्रश्न 131. क्या मंदिर या गर्भगृह में पंखे रख सकते हैं ?**

**उत्तर** नहीं, इससे प्रभु की आशातना होती है ।

**प्रश्न 132. क्या मंदिर में चैत्यवंदन जरूरी है ?**

**उत्तर** मंदिर में द्रव्यपूजा के बाद भावपूजा रूप चैत्यवंदन अवश्य करना चाहिए । चैत्यवंदन के अभाव में पूजा अपूर्ण कहलाती है ।

**प्रश्न 133. क्या पूजा के बाद पूजा की अपनी पेटी मंदिर में रख सकते हैं ?**

**उत्तर** नहीं रखनी चाहिए । मंदिर के बाहर साधारण खाते से बने स्थान में रख सकते हैं ।

**प्रश्न 134. क्या मूल गंभारे में स्त्री-पुरुष साथ में प्रभु का अभिषेक करे तो चलता है ?**

**उत्तर** स्त्री-पुरुष के देह का परस्पर स्पर्श हो, इस प्रकार खड़े रहकर अभिषेक नहीं कर सकते हैं । जगह कम हो तो पुरुष के बाद ही स्त्रियों को गभारे में प्रवेश करना चाहिए, एक साथ नहीं ।

**प्रश्न 135. मंदिर में काजा किससे निकालना चाहिए ?**

**उत्तर** अत्यंत कोमल झाड़ू से अथवा मोरपीछी के दंडासन से ।

**प्रश्न 136. क्या स्त्री-पुरुष आमने-सामने बैठकर पूजा पढ़ा सकते हैं ?**

**उत्तर** नहीं ! इस प्रकार बैठना उचित नहीं है । बहनों का गाना भी उचित नहीं है ।

**प्रश्न 137. क्या पूजा में पुरुषों की उपस्थिति में बहनें पूजा पढ़ा सकती हैं?**

**उत्तर** नहीं ! स्त्री का गाना रागपोषक होने से पुरुषों की उपस्थिति में नृत्य एवं गान नहीं करना चाहिए ।

**प्रश्न 138. चैत्यवंदन करते-करते बीच में प्रक्षाल के लिए जा सकते हैं क्या ?**

**उत्तर** नहीं, इस प्रकार जाना उचित नहीं है ।

**प्रश्न 139. शत्रुंजय की तलहटी पर चैत्यवंदन करने के बाद क्या मंदिरजी में चैत्यवंदन करना जरूरी है ?**

**उत्तर** नहीं ! तलहटी की देहरियों में प्रभुजी के पगले होने से वहाँ किया गया चैत्यवंदन जिनमंदिर का ही चैत्यवंदन कहलाता है ।

**प्रश्न 140. मनुष्य के कितने प्रकार हैं ?**

**उत्तर** दो ! गर्भज और संमूर्च्छिम ।

**प्रश्न 141. क्या देव या नरक का जीव मरकर संमूर्च्छिम मनुष्य के रूप में पैदा होता है ?**

**उत्तर** नहीं ।

**प्रश्न 142. अन्तर्द्वीप में रहनेवाले मनुष्यों का व्यवहार कैसा होता है ?**

**उत्तर** अन्तर्द्वीप में पैदा होने वाले मनुष्य युगलिक जैसे होते हैं । वहाँ भी 10 प्रकार के कल्पवृक्ष होते हैं ।

**प्रश्न 143. वर्तमान में कितने गुणस्थानक तक जा सकते हैं ?**

**उत्तर** सात तक ।

**प्रश्न 144. मनुष्य का उत्कृष्ट आयुष्य कितना होता है ?**

**उत्तर** तीन पल्योपम ।

**प्रश्न 145. युगलिक मनुष्य मरकर कहाँ जाते हैं ?**

**उत्तर** देवलोक में ।

**प्रश्न 146. ढाई द्वीप के बाहर कौन से जीव होते हैं ?**

**उत्तर** तिर्यंच ।

**प्रश्न 147. चक्रवर्ती का वैभव क्या है ?**

**उत्तर** 84 लाख हाथी, 84 लाख घोड़े, 84 लाख रथ, 96 करोड पैदल तथा 1 लाख 92 हजार स्त्रियाँ, 9 निधान तथा 14 रत्न । 32 हजार मुकुटबद्ध राजा आज्ञा में रहते हैं ।

**प्रश्न 148. एक भव से दूसरे भव में जाते समय आत्मा के साथ कितने शरीर होते हैं ?**

**उत्तर** दो शरीर, तैजस और कार्मण ।

**प्रश्न 149. अकर्म भूमि के युगलिकों के कौनसे संघयण एवं संस्थान होते हैं ?**

**उत्तर** पहला वज्रऋषभ नाराच संघयण और पहला समचतुरस्त्र संस्थान ।

**प्रश्न 150. युगलिक मनुष्य आगामी भव के आयुष्य का बंध कब करते हैं ?**

**उत्तर** वे अपने आयुष्य की समाप्ति में छह मास बाकी रहने पर आगामी भव के आयुष्य का बंध करते हैं ।

**प्रश्न 151. क्या अकर्मभूमि में अग्नि होती है ?**

**उत्तर** नहीं ।

**प्रश्न 152. क्या युगलिक मनुष्य दीक्षा ले सकते हैं ?**

**उत्तर** नहीं ।

**प्रश्न 153. वासुदेव मरकर कहाँ जाते हैं ?**

**उत्तर** नरक गति में ।

**प्रश्न 154. वासुदेव भव्य है या अभव्य ?**

**उत्तर** भव्य !

**प्रश्न 155. वासुदेव में कितना बल होता है ?**

**उत्तर** चक्रवर्ती से आधा बल ।

**प्रश्न 156. क्या अनादि मिथ्यादृष्टि जीव सर्वप्रथम बार क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त कर सकता है ?**

**उत्तर** नहीं ।

**प्रश्न 157. क्षायिक सम्यक्त्व की प्राप्ति के लिए कौनसा संघयण चाहिए ?**

**उत्तर** पहला वज्रऋषभ नाराच संघयण !

**प्रश्न 158. किस गति में क्षायिक सम्यक्त्व की प्राप्ति होती है ?**

**उत्तर** मनुष्य गति में ।

**प्रश्न 159. क्या साधु-जीवन समाज के लिए भारभूत है ?**

**उत्तर** नहीं ! जैन साधु-साध्वी दीक्षा अंगीकार करते समय अपनी समस्त धन-संपत्ति, बाह्य वैभव आदि का संपूर्ण त्याग करते हैं और आजीवन त्यागमय जीवन जीते हैं ।

बाह्य संपत्ति के त्याग के साथ जीवन पर्यंत भौतिक सुख-सुविधाओं और मौज-मजा के साधनों का भी संपूर्ण त्याग करते हैं ।
अपने त्याग व तपोमय जीवन के द्वारा वे जगत् के लिए आदर्श होते हैं ।
दुनिया में हो रहे समस्त झगड़े, कलह क्लेश का मूल जो राग-द्वेष की परिणतियाँ हैं, उससे वे कोसों दूर रहकर जगत् के प्राणियों को भी उन दोषों से मुक्त बनने का उपदेश देते हैं ।
दुनिया में उपदेश से भी आचरण की कीमत अत्यधिक है । जैन साधु-साध्वी अपने त्यागमय जीवन के द्वारा और उपदेश के द्वारा अनेक जीवों के जीवन में रही हुई बुराइयों को छुड़ाते हैं ।
दुनिया में हो रहे झगड़े और बीमारियों का मूल इन्द्रियों का असंयम है ।
मांसाहार-शराब व तामसी आहार के फलस्वरूप अनेक रोग पैदा होते हैं । जैन साधु-साध्वी स्वयं तो मांसाहार-शराब आदि के सेवन से मुक्त जीवन जीते ही हैं-परंतु अपने उपदेश द्वारा हजारों को उन दोषों से बचने की प्रेरणा भी देते हैं ।
देश-दुनिया में कोर्ट व वकील बढ़े हैं परंतु आपसी झगड़े शांत नहीं हुए हैं, बल्कि और बढ़े हैं, क्योंकि उन झगड़ों का मूल संग्रह वृत्ति, क्रोध, ईर्ष्या, अभिमान आदि पाप ही हैं ।
साधु अपने आदर्श जीवन व उपदेश द्वारा उन दोषों से स्वयं मुक्त बनते हुए दूसरों को भी बचाने की कोशिश करते हैं ।
किसी को सन्मार्ग की राह दिखाने से बढ़कर इस जगत् में दूसरा बड़ा उपकार नहीं है । यह काम साधु-महात्मा निभाकर जगत् पर महान् उपकार कर रहे हैं ।
ऐसे परमोपकारी को आहार-पानी या वस्त्र-पानी व अस्थायी आवास व्यवस्था का दान देनेवाला कोई उन पर विशेष उपकार नहीं करता है । बल्कि आहार आदि का दान देनेवाला गुरु के द्वारा स्वयं पर हुए उपकारों को याद करता है । साधु-साध्वी समाज से लेते कम हैं और समाज को देते ज्यादा हैं ।

**प्रश्न 160. जैन साधु-साध्वी का पर्यावरण में क्या योगदान है ?**

**उत्तर** एक गृहस्थ प्रतिदिन पेट्रोल के वाहन का उपयोग कर 2 टन (2000 Kg.) कार्बन का प्रदूषण बढ़ाता है । जबकि जैन साधु-साध्वी वाहन का त्यागकर वातावरण को उस प्रदूषण से मुक्त करते हैं ।

साधु अपने जीवन में कभी भी किसी भी शुभ प्रसंग पर फटाके नहीं फोड़ते हैं और अपने सान्निध्य में हो रहे प्रसंगों में फटाके फोड़ने की अनुमति भी नहीं देते हैं । इस प्रकार वे वातावरण को दूषित होने से बचाते हैं ।

लोकव्यवहार में दीपावली, 31st Dec., विवाह, इलेक्शन आदि में जीत आदि के प्रसंगों में Unlimited फटाके फोड़े जाते हैं, जिससे वातावरण-पर्यावरण दूषित होता है ।

साधु-साध्वी गोचरी के माध्यम से प्रतिदिन मर्यादित ही आहार लेते हैं और कभी जूठा नहीं छोड़ते हैं । इस प्रकार अनाज को waste भी नहीं करते हैं । ऐंठाजूठा जहाँ तहाँ फेंकने से कीड़े पैदा होते हैं, जिससे अनेक रोग बढ़ते हैं ।

एक मात्र बेंगलोर शहर में प्रतिवर्ष 500 से भी अधिक Marriage Halls में लगभग 1 लाख लग्न प्रसंगों में भोजन समारोह में जो जूठ न छोड़ी जाता है, उसकी कीमत 300 करोड़ से भी अधिक हो जाती है ।

शादी के सिवाय सैकड़ों हाटलों में भी जूठा छोड़ा जाता है, जिसका कचरा पर्यावरण को खूब दूषित करता है ।

साधुजीवन में भोजन हेतु काष्ठ पात्र का ही उपयोग होता है, जो वर्षों तक चलता है जबकि होटल-हाथलॉरी व रेस्टारेंट रेल्वे व बस स्टेंड पर जो लोग पानीपूरी, पाऊ भाजी व अन्य नमकीन आदि खाते हैं, खाने के बाद प्लास्टिक की प्लेटें, प्लास्टिक की थैलियाँ, कागज आदि जहाँ-तहाँ फेंक दिए जाते हैं-जो भयंकर प्रदूषण फैलाते हैं ।

साधुजीवन में पान, पान पराग, गुटका आदि का त्याग होता है

जहाँ-तहाँ थूकने का निषेध होता हैं अतः उनके द्वारा वह गंदगी भी नहीं होती है ।

गृहस्थ होटल, रेल्वे-स्टेशन, बाजार आदि में पानी-चाय-कॉफी शराब Cold drinks आदि पीकर उसकी प्लास्टिक की बोतलें प्लेटें, थैलियाँ आदि जहाँ-तहाँ फेंककर कचरा करते हैं । जबकि साधुजीवन में उनका सर्वथा त्याग होता है ।

T.V., A.C. फ्रीज, फोन, मोबाइल आदि के त्याग द्वारा Global warming में निमित्त नहीं बनते हैं ।

गृहस्थ अपने स्नान, कपड़े धोने, मकान की स्वच्छता आदि में साबुन आदि का उपयोग कर वातावरण में कीचड़ आदि पैदा करते हैं, जबकि साधु जीवन में स्नान का निषेध है, कपड़ों का भी कई दिनों बाद मर्यादित जल से ही काप निकालना होता है, अतः साधु-साध्वी अपने जीवन द्वारा पर्यावरण को कम-से-कम दूषित करते हैं, जबकि एक गृहस्थ अपनी Luxurious Life द्वारा सारे वातावरण को प्रदूषित करता रहता है ।

**प्रश्न 161. क्या बालदीक्षा उचित है ?**

**उत्तर** दीक्षाधर्म के स्वीकार की मुख्य शर्त उम्र नहीं, किंतु वैराग्य है । कोई जरूरी नहीं है कि 18-20 या 50-60 वर्ष की उम्र हो गई तो उसे संसार या भौतिक सुखों से वैराग्य हो ही जाएगा ।

लोकव्यवहार में भी कई व्यक्ति बड़ी उम्र होने पर भी योग्य नहीं बनते हैं और कई छोटी उम्र में भी बड़ी योग्यता प्राप्त कर लेते हैं ।

पूर्व भव के अच्छे संस्कारों के कारण यदि कोई बाल्य वय में भी बालसहज क्रीड़ाओं का त्याग कर सकता हो और संयमित जीवन जी सकता हो तो वह व्यक्ति बड़ा होकर यौवन के उन्माद अर्थात् कामवासनाओं पर भी नियंत्रण पा सकता है ।

**'पूत के लक्षण पालने में'** कहावत के अनुसार भूतकाल में हुए अनेक महापुरुषों के जीवन पर दृष्टिपात करेंगे तो स्पष्ट ख्याल में आएगा कि उनका आध्यात्मिक व आत्मिक विकास बहुत

छोटी उम्र से ही प्रारंभ हो चुका था ।

16 वर्ष से कम उम्र के बालकों को दीक्षा लेने के पूर्व माता-पिता की अनुमति अनिवार्य मानी गई है ।

यदि समझदार माता-पिता अपनी संतान के आत्महित को ध्यान में रखकर बालक की स्वयं की इच्छा होने पर उसे त्यागमार्ग पर अग्रसर बनाते हैं, तो यह अनुचित भी नहीं है ।

मात्र एक जीवन के भौतिक सुखों के लिए भी अगर माता-पिता अपनी संतान को हॉस्टल आदि में शिक्षक के भरोसे छोड़ सकते हों तो शाश्वत सुख की प्राप्ति के ध्येय से माता-पिता अपनी संतान गुरुचरणों में समर्पित करें तो इसमें कोई बुराई नहीं है ।

**प्रश्न 162. दीक्षा के बजाय गृहस्थ जीवन में रहकर धन आदि से बड़े-बड़े उपकार नहीं कर सकते हैं क्या ?**

**उत्तर** फाँसी की सजा हुए किसी कैदी को कोई अच्छा खाना खिलाए या अच्छे कपड़े या आभूषण पहनाए तो उस कैदी को वह खुशी नहीं होगी जो उसे फाँसी की सजा रद्द होने पर मिलती है ।

कोई धनवान व्यक्ति किसी जीव पर धन-वस्त्र-आहार आदि द्वारा जो उपकार करता है, उससे अनेक गुणा बड़ा उपकार सदा के लिए जीवनदान-अभयदान देनेवाले साधु भगवंत करते हैं ।

भूखे को भोजन, प्यासे को पानी, कपड़े रहित को कपड़ा, मकान रहित को मकान व रोगी को दवाई देने से होने वाला उपकार अस्थायी है, जबकि शाश्वत जीवन के प्रवेशद्वार समान रत्नत्रयी की आराधना स्वरूप साधुजीवन के स्वीकार द्वारा होने वाला उपकार स्थायी उपकार है ।

सदाकाल के लिए आहार-पानी, वस्त्र-पात्र-मकान-धन आदि के साधनों के बिना भी शाश्वत जीवन की प्राप्ति होना व अन्य किसी को उसकी प्राप्ति का उपाय बताना शाश्वत उपकार है ।

दीक्षा लेनेवाला तो इन समस्याओं से सदा के लिए मुक्त होगा ही उसके साथ ही वह ज्ञान प्राप्त कर अनेक साधर्मियों को भी उसका उपाय बताकर हजारों आत्माओं पर महान् उपकार करेगा, यह कितनी बडी बात है !

वाहन व इलेक्ट्रिक Light के उपयोग का जीवन पर्यंत त्याग करनेवाला साधु हजारों-लाखों आत्माओं को अभयदान देने का महान् उपकार करता है ।

**प्रश्न 163. साधु का पच्चक्खाण कितनी कोटि का होता है ?**

**उत्तर** नौ कोटि का, मन-वचन-काया से करण-करावण और अनुमोदन से ।

**प्रश्न 164. पार्श्वप्रभु की ऊँचाई कितनी थी ?**

**उत्तर** नौ हाथ ।

**प्रश्न 165. वस्तुपाल-तेजपाल ने कितने जिनबिंब भराए थे ?**

**उत्तर** 11,000 प्रतिमाएँ ।

**प्रश्न 166. 'चंदेसु निम्मलयरा' तक एक लोगस्स का कायोत्सर्ग करने से क्या फल मिलता है ?**

**उत्तर** 61,35,210 पल्योपम देवायु का बंध होता है ।

**प्रश्न 167. एक पौषध से क्या लाभ होता है ?**

**उत्तर** एक दिन के पौषध से 27, 77, 77, 77, 777 पल्योपम से अधिक देवायु का बंध होता है । (धर्मसंग्रह)

**प्रश्न 168. एक आयंबिल करने से क्या फायदा होता है ?**

**उत्तर** 1,000 करोड़ वर्ष का नारकीय आयुष्य टूटता है ।

**प्रश्न 169. ऊपर उछाले नींबू को नीचे आने में जितना समय लगता है, उतने समय में 9 श्लोक की रचना करनेवाले महर्षि कौन थे ?**

**उत्तर** कलिकालसर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्यजी म.

**प्रश्न 170. पाँचवें आरे के अंत तक कौन से आगम रहेंगे ?**

**उत्तर** आवश्यकसूत्र, दशवैकालिक और अनुयोगद्वार ।

**प्रश्न 171. शाश्वत प्रतिमाओं की ऊँचाई कितनी होती है ?**

**उत्तर** 500 धनुष प्रमाण ।

**प्रश्न 172. सूर्य व चंद्र के विमान यहाँ से कितनी ऊँचाई पर हैं ?**

**उत्तर** सूर्य का विमान पृथ्वी से 800 योजन और चंद्र का विमान 880 योजन ऊँचा है ।

**प्रश्न 173. शुक्ल पक्ष की दूज को चंद्र के दर्शन क्यों करते हैं ?**

**उत्तर** चंद्र विमान में जो शाश्वत प्रतिमाएँ हैं, वे दूज के दिन अपने सन्मुख होती हैं, अतः उनके दर्शन करते हैं ।

**प्रश्न 174. राणकपुर की प्रतिष्ठा किसने कराई ?**

**उत्तर** पू. आचार्य सोमसुंदरसूरिजी म. ने ।

**प्रश्न 175. सूर्य व चंद्रग्रहण कब होता है ?**

**उत्तर** नित्यराहु बीच में आने पर चंद्रग्रहण व अनित्यराहु बीच में आने पर सूर्यग्रहण होता है ।

**प्रश्न 176. कितने दिन नवकारसी करने से एक उपवास का लाभ होता है ?**

**उत्तर** 45 दिन ।

**प्रश्न 177. कितने दिन साढ पोरिसी करने से एक उपवास का लाभ होता है ।**

**उत्तर** 20 दिन ।

**प्रश्न 178. चालू उपधान में रात्रि में स्थंडिल जाए तो क्या उसे दूसरे दिन नए उपधान में प्रवेश करा सकते हैं ?**

**उत्तर** हाँ ! परंतु जिस रात्रि में स्थंडिल गए हों, उस दिन की आलोचना लेनी चाहिए ।

**प्रश्न 179. नींबू का रस दूसरे दिन चलता है ?**

**उत्तर** नींबू के रस में खट्टापन होने से छाछ की भाँति वह भी दूसरे दिन चलता है ।

**प्रश्न 180. उपधान दरम्यान अंतराय के दिनों में पौषध पार सकते हैं ?**

**उत्तर** नहीं ! अंतराय के पिरियड में पौषध नहीं पार सकते हैं । तप भी वो ही चालू रखना पड़ता है ।

उपधान के दिन पूरे हो गए हों तो भी अंतराय दरम्यान उपधान का तप चालू रखना पड़ता है । जैसे छक्कीये चौकीये में अंतराय आ जाय तो अंतराय के दिन पूरे न हों तब तक आयंबिल ही करना पड़ता है, नीवी नहीं कर सकते हैं ।

**प्रश्न 181. उपधान के दिन पूरे होने के बाद आलोचना के पौषध करने हों तो क्या पौषध पारणा ही पड़ता है ?**

**उत्तर** नहीं ! पौषध पारे बिना रोज की तरह पौषध ले सकते हैं और जो तप चलता हो वह तप करे अथवा रोज आयंबिल भी कर सकते हैं ।

**प्रश्न 182. क्या उपधान में बकरी ईद की असज्झाय होती है ?**

**उत्तर** नहीं ।

**प्रश्न 183. क्या वर्षीदान का दान श्रावक ले सकते हैं ?**

**उत्तर** वर्षीदान अनुकंपादान रूप होने से श्रावकों को लेना उचित नहीं है ।

**प्रश्न 184. उपधान में बहनों को पच्चक्खाण पारना हो तो आचारांग तक के योगोद्वहन किये महात्मा के द्वारा पडिलेहन किये भगवान चल सकते हैं ?**

**उत्तर** नहीं ! उपधान की प्रत्येक क्रिया में महानिशीथ योगोद्वहन वाले महात्मा के द्वारा पडिलेहन किये भगवान (स्थापनाचार्य) ही चलते हैं ।

**प्रश्न 185. उपधान में मौन एकादशी के दिन कौनसा तप करना चाहिए ?**

**उत्तर** उपवास, आयंबिल या लूखी नीवी कर सकते हैं ।

**प्रश्न 186. क्या सिंघोड़ा भक्ष्य है ?**

**उत्तर** भक्ष्य है ।

**प्रश्न 187. कालग्रहण आदि की क्रिया में छींक का निषेध क्यों है ?**

**उत्तर** शकुन शास्त्र में छींक अमंगल मानी जाती है, अतः कालग्रहण आदि मंगलक्रिया में उसके श्रवण का निषेध माना गया है ।

**प्रश्न 188. स्नात्र पूजा में आरती-मंगलदीप शांतिकलश कब करना चाहिए ?**

**उत्तर** स्नात्र पूजा पढ़ाने के बाद आरती-मंगलदीप करके शांतिकलश करना चाहिए ।

**प्रश्न 189. क्या पूजा करते समय नवांगी पूजा के दोहे जोर से बोल सकते हैं ?**

**उत्तर** प्रभुपूजा करते समय पूजा के दोहे मन में ही सोचने चाहिए ।

पूजासमय अपने मुख की भी अशुद्धि का प्रभु को स्पर्श न हो, इसके लिए आठ पट से मुखकोश बाँधते हैं तो फिर प्रभु के पास जोर से शब्दोच्चार कैसे किया जाय ?

**प्रश्न 190. प्रभु के प्रक्षाल-जल का विसर्जन कहाँ करना चाहिए ?**

**उत्तर** प्रक्षाल-जल पर अपना पांव न लगे, वैसी सूखी जगह में विसर्जन करना चाहिए ।

**प्रश्न 191. आरती के पैसे किस खाते में जाते हैं ?**

**उत्तर** प्रभु की भक्ति के रूप में रुपयों का अर्पण होने से उसे देवद्रव्य में ले जाना चाहिए ।

**प्रश्न 192. अष्ट प्रकारी पूजा के क्रम में पहली जलपूजा है तो फिर दूध से प्रक्षाल क्यों करते हैं ?**

**उत्तर** प्रभु के जन्म-कल्याणक समय इन्द्र व देवता प्रभु की जिस प्रकार अभिषेक आदि से पूजा आदि करते हैं, उसी के अनुकरण रूप में श्रावक-श्राविकाएँ प्रभु की विविध पूजाएँ करते हैं । इन्द्र व देवता प्रभु का जन्माभिषेक क्षीर-समुद्र के जल से करते हैं । क्षीर-समुद्र से जल लाना शक्य नहीं है, अतः गाय के दूध से मिश्रित जल से अभिषेक करके संतोष माना जाता है ।

**प्रश्न 193. अंजनशलाका को प्राण-प्रतिष्ठा क्यों कहा जाता है ?**

**उत्तर** जैन मत के अनुसार एक बार जिस आत्मा का मोक्ष हो जाता है, वह आत्मा पुनः संसार में आती नहीं है । साक्षात् प्रभु के विरह में अरिहंत परमात्मा की भक्ति करने के लिए जिनप्रतिमा में अरिहंत परमात्मा की प्रतिष्ठा की जाती है ।

प्रतिमा में प्रतिष्ठा की विधि को अंजनशलाका या प्राणप्रतिष्ठा भी कहा जाता है ।

प्राणप्रतिष्ठा द्वारा जिनप्रतिमा में प्राणों का आरोपण (मानसिक कल्पना द्वारा) किया जाता है ।

**प्रश्न 194. जिनमंदिर में पहले कौनसे भगवान की पूजा करनी चाहिए ?**

**उत्तर** अनुकूलता हो तो सर्वप्रथम मूलनायक प्रभु की पूजा करनी

चाहिए । मूलनायक प्रभुजी के प्रक्षाल आदि में चढ़ावे के कारण विलंब होता हो तो अन्य भगवान की भी पूजा की जा सकती है ।

**प्रश्न 195. अनुपयोगी बने पूजा-सामायिक के वस्त्रों का क्या करना चाहिए ?**

**उत्तर** श्रावक अन्य कार्यों में उन वस्त्रों का उपयोग कर सकते हैं ।

**प्रश्न 196. पूजा-पूजन या वरघोड़े में क्या बहनें नृत्य कर सकती हैं ?**

**उत्तर** जहाँ अन्य (पर) पुरुष की उपस्थिति हो वहाँ बहनों का नाचना सर्वथा निषिद्ध है ।

बहनों का नृत्य पुरुषों के लिए कामराग को पुष्ट करनेवाला होता है । जहाँ एक भी पुरुष न हो, वहाँ सिर्फ बहनों की उपस्थिति में प्रभु-भक्ति में बहनें नृत्य कर सकती हैं ।

**प्रश्न 197. गृहमंदिर में प्रभुजी की दिशा आदि का क्या नियम है ?**

**उत्तर** 1. गृहमंदिर में प्रभुजी का मुख दक्षिण सम्मुख या पश्चिम सम्मुख होना चाहिए ।

2. घर में प्रवेश करते समय अपने बाएँ हाथ की ओर मंदिर होना चाहिए ।

3. प्रतिमा परिकर-युक्त होनी चाहिए ।

4. घर के मुख्य व्यक्ति की नामराशि के अनुकूल प्रभुजी की स्थापना करनी चाहिए ।

**प्रश्न 198. प्रभु के परिकर में कौन-कौनसी चीजें आती हैं ?**

**उत्तर** प्रभुजी के दोनों ओर चामरधारी इन्द्र होते हैं । उनके ऊपर वीणा बजानेवाले देव होते हैं । उनके ऊपर मालाधारी देव होते हैं । उनके ऊपर हाथी, उनके ऊपर हरिणगमैषी देव तथा उनके ऊपर दुंदुभिवादक देव होते हैं । उनके ऊपर शंखवादक देव होते हैं ।

नीचे प्रभुजी दाईं ओर यक्ष और बाईं ओर यक्षिणी होती है तथा दो सिंह, दो हाथी और दो चामरधारी इन्द्र होते हैं । मध्य में चक्रधारी देवी होती है ।

चक्रधारी देवी के नीचे धर्मचक्र होता है, उसके दोनों ओर एक-एक हिरण होता है । उसके नीचे नौ ग्रह होते हैं ।

**प्रश्न 199. मूलनायक प्रभु के आगे मंदिर के द्वार पर लकड़ी का बोर्ड क्यों रखते हैं ?**

**उत्तर** प्रभु की दृष्टि में खाने-पीने की वस्तु नहीं ले जाई जाती है । प्रभु के सामने विनय-विवेक पूर्वक बैठना-उठना होता है, अतः उन मर्यादाओं के पालन के लिए पाटिया रखा जाता है ।

पूजा, पूजन संबंधी प्रभावना आदि करनी हो तो प्रभु की दृष्टि न पड़े, उसका विवेक खूब जरूरी है ।

शिल्प शास्त्रानुसार प्रभु की दृष्टि राजमार्ग पर गिरनी चाहिए, परंतु बोर्ड लगाने से उस दृष्टि का अवरोध नहीं होता है ।

**प्रश्न 200. मंदिर की पुरानी ध्वजा का क्या करना चाहिए ?**

**उत्तर** मंदिर की ध्वजा मंगल रूप होने से छह मास तक घर में रख सकते हैं । उसके बाद नदी आदि पवित्र जगह में विसर्जन कर देना चाहिए ।

**प्रश्न 201. कुर्सी पर बैठकर सामायिक-प्रतिक्रमण-चैत्यवंदन-एकासना आयंबिल कर सकते हैं क्या ?**

**उत्तर** रोग आदि के कारण नीचे बैठने की तीव्र-प्रतिकूलता हो तो कुर्सी पर भी बैठकर सामायिक-प्रतिक्रमण चैत्यवंदन एकासना आदि कर सकते हैं ।

**प्रश्न 202. महावीर स्वामी प्रभु के सामने अन्य भगवान का चैत्यवंदन स्तवन आदि बोल सकते हैं क्या ?**

**उत्तर** मूलनायक प्रभु के चैत्यवंदन आदि आते हों तो वे बोलने चाहिए अथवा भावोल्लास में वृद्धि हो वैसा किसी भी भगवान के आगे कोई भी स्तवन बोल सकते हैं ।

नाम से भगवान भिन्न भिन्न हैं, परंतु गुणों से तो सभी भगवान एक समान ही हैं ।

**प्रश्न 203. कमठ के उपसर्ग-निवारण के लिए धरणेन्द्र ने क्या किया था ?**

**उत्तर** धरणेन्द्र ने प्रभु के नीचे लंबी नालवाले स्वर्ण कमल की रचना

की फिर अपनी ही काया से प्रभु की पीठ तथा दोनों ओर की काया को ढककर सात फणों के द्वारा प्रभु के मस्तक पर छत्र धारण कर कमठ के उपसर्ग को दूर किया था ।

**प्रश्न 204. सुपार्श्वनाथ प्रभु के मस्तक पर फण क्यों होते हैं ?**

**उत्तर** सुपार्श्वनाथ प्रभु माँ के गर्भ में थे, माता ने स्वप्न में एक, पाँच और नौ फणवाले सर्प वाली शय्या में अपने आपको सोते हुए देखा । पृथ्वी माता ने स्वप्न में जितना बड़ा सर्प देखा, शक्रेन्द्र ने उतना बड़ा सर्प सुपार्श्वनाथ प्रभु के मस्तक पर छत्र की तरह धारण किया । तब से समवसरण व अन्य स्थलों में सुपार्श्वनाथ प्रभु के मस्तक पर 1, 5 या 9 फणवाले साँप की रचना होती है ।
(सप्तति शतक स्थानक)

**प्रश्न 205. तीर्थंकर बनने की प्रार्थना कर सकते हैं क्या ?**

**उत्तर** तीर्थंकर प्रभु की बाह्य ऋद्धि-सिद्धि, समृद्धि देखकर कोई जीव तीर्थंकर बनने की इच्छा करे तो यह इच्छा औदयिक भाव की होने से उसका निषेध है ।
परंतु जगत् के जीवों के कल्याण की कामना से तीर्थंकर बनकर मोक्ष में जाने की प्रार्थना कर सकते हैं ।

**प्रश्न 206. क्या केवली शिष्य अपने छद्मस्थ गुरु को वंदन करते हैं ?**

**उत्तर** जब तक गुरु को पता न हो कि मेरे शिष्य को केवलज्ञान हो गया है-तब तक केवली शिष्य भी छद्मस्थ गुरु को वंदन करते हैं ।

**प्रश्न 207. चालू दैवसिक प्रतिक्रमण और मांगलिक प्रतिक्रमण में क्या फर्क है ?**

**उत्तर** 1. मांगलिक प्रतिक्रमण में सकल कुशलवल्ली के बाद पार्श्वनाथ प्रभु का ही चैत्यवंदन बोला जाता है ।
2. स्तुति के रूप में `कल्लाणकंदं' की थोय ।
3. स्तवन के रूप में `संतिकरं स्तवन' तथा 4. सज्झाय के रूप में साधु भगवंत `धम्मोमंगल' एवं श्रावक `मन्नहजिणाणं' की सज्झाय बोलते हैं ।

यह मांगलिक प्रतिक्रमण पक्खी, चउमासी तथा संवत्सरी प्रतिक्रमण के एक दिन पहले किया जाता है ।

साधु-साध्वी विहार करके नए स्थान में आए हो तो उस दिन मांगलिक प्रतिक्रमण करते हैं । उसमें `सुअदेवया' स्तुति के स्थान पर `ज्ञानादिगुणयुतानां' की स्तुति बोलते हैं अर्थात् भवन देवता का कायोत्सर्ग करते हैं तथा `क्षेत्र देवता के कायोत्सर्ग में' **'जिसे खित्ते साहु'** के बदले **'यस्याः क्षेत्र'** की स्तुति बोलते हैं ।

**प्रश्न 208. आयरिय उवज्झाए सूत्र कैसे बोला जाता है ?**

**उत्तर** हाथ जोड़कर मस्तक पर अंजलि लगाकर बोलने की विधि है ।

**प्रश्न 209. सुबह प्रतिक्रमण में सीमंधर स्वामी और शत्रुंजय के चैत्यवंदन में कितने खमासमणे देने चाहिए ?**

**उत्तर** कम-से-कम तीन दोहे बोलकर तीन खमासमणे देने चाहिए अर्थात् एक-एक दोहा बोलकर एक-एक खमासमणा दें । तीन से ज्यादा दोहे व खमासमणे भी दे सकते हैं ।

**प्रश्न 210. कायोत्सर्ग में लोगस्स कहाँ तक बोलना चाहिए ?**

**उत्तर** आराधना के कायोत्सर्ग में `चंदेसु निम्मलयरा' तक, उपद्रव-निवारण के कायोत्सर्ग में `सायरवरगंभीरा' तक तथा शांति निमित्त कायोत्सर्ग में संपूर्ण लोगस्स बोलना चाहिए ।

**प्रश्न 211. नींबू के रस, शक्कर तथा चूना आदि डालकर जो कच्चा पानी 48 मिनिट बाद अचित्त होता है, वह कब तक चलता है ?**

**उत्तर** वह पानी गर्म पानी के काल-प्रमाण चलता है ।

**प्रश्न 212. दही बनाने के लिए रात्रिप्रसार होना जरूरी है क्या ?**

**उत्तर** नहीं ! दूध में सुबह जामन डाला हो और वही दही शाम को बराबर जम गया हो तो वह दही चलता है ।

**प्रश्न 213. सचित्त त्यागी कॉलगेट आदि टूथपेस्ट का उपयोग कर सकते हैं क्या ?**

**उत्तर** नहीं ! उसमें कच्चे पानी के अंश की संभावना होने से बासी का दोष लगता है ।

**प्रश्न 214. अंतराय में किया तप गिन सकते हैं क्या ?**

**उत्तर** चालू अंतराय (M.C.) में बहनें नए किसी तप का प्रारंभ नहीं कर सकती हैं, परंतु पूर्व से चालू तप हो तो गिन सकते हैं । तप संबंधी कायोत्सर्ग आदि शुद्धि होने के बाद करने चाहिए ।

**प्रश्न 215. ओली का तप आलोचना में गिन सकते हैं क्या ?**

**उत्तर** चैत्र-आसो मास की ओली के प्रथम तीन दिनों में किये गये तप को भव-आलोचना या आलोचना में नहीं गिन सकते हैं ।

**प्रश्न 216. रात्रिभोजन करनेवाला दूसरे दिन नवकारसी आदि तप कर सकता है क्या ?**

**उत्तर** विवेकी सद्गृहस्थ को रात्रिभोजन नहीं करना चाहिए परंतु किसी ने रात्रिभोजन (मध्यरात्रि तक) किया हो तो भी दूसरे दिन नवकारसी आदि पच्चक्खाण कर सकता है । किसी भी बड़े तप के पूर्व रात्रि में भोजन का त्याग करना, ज्यादा अच्छा है ।

**प्रश्न 217. दीक्षार्थी बहन को गुरु द्वारा रजोहरण प्राप्त होने के बाद क्या उसे भाई उठा सकते हैं ?**

**उत्तर** रजोहरण प्राप्ति के बाद किसी बहन को कोई भी पुरुष उठाए वह उचित नहीं है ।

**प्रश्न 218. क्या माणिभद्र देव सम्यग्दृष्टि हैं ? उनकी आकृति कैसी है ?**

**उत्तर** माणिभद्रजी व्यंतर निकाय के यक्ष जाति के देवों के इन्द्र हैं और सम्यग्दृष्टि हैं । तपागच्छ के अधिष्ठायक हैं ।

उनका वर्ण श्याम है, वराह के मुख जैसी मुख की आकृति है उनकी दाढ़ी में रायण वृक्ष की शाखावाला जिनालय है, जिसमें आदिनाथ प्रभु बिराजमान हैं, मस्तक पर रत्नों का मुकुट है । सात सफेद सूंडवाला ऐरावण हाथी उनका वाहन है । पहली सूंड में अभिषेक करता कलश है । दूसरी सूंडों में लाल कमल हैं । उनके छह हाथ हैं-दाहिने हाथ में गदा एवं बाएँ हाथ में त्रिशूल आदि हैं ।

माणिभद्रजी की पूजा अंगूठे से मस्तक पर तिलक करके कर सकते हैं ।

**प्रश्न 219. बहनें माणिभद्रजी की पूजा कर सकती हैं क्या ?**

**उत्तर** पूजा कर सकती हैं ।

**प्रश्न 220. क्या श्रावक किसी को अपने गुरु बना सकते हैं ?**

**उत्तर** जिन आचार्य आदि गुरु भगवंत से सद्धर्म की प्राप्ति हुई हो, उन्हें अपना व अपने परिवार के गुरु के रूप में स्वीकार कर सकते हैं ।

**प्रश्न 221. क्या जिनशासन समर्पित उत्कृष्ट आराधक श्रावक की गुणानुवाद सभा गुरु भगवंत की निश्रा में हो सकती है ?**

**उत्तर** हाँ ! हो सकती है ।

**प्रश्न 222. मूल आचारांग सूत्र का प्रमाण कितना था ?**

**उत्तर** आचारांग 18,000 पद प्रमाण है । एक पद के 51,08,84,621 श्लोक होते हैं । अतः आचारांग के कुल श्लोक 91, 95, 92, 31, 78000 हैं (रत्नसंचय प्रकरण) ।

**प्रश्न 223. वाणी के चार प्रकार कौनसे हैं ?**

**उत्तर** जोर से बोली जाय उसे वैखरी वाणी कहते हैं । होठ से बोली जाय उसे मध्यमा वाणी कहते हैं । मन में जो जाप हो उसे पश्यंती वाणी कहते हैं । पूर्वाभ्यास के कारण नाभि में होनेवाले जाप को परावाणी कहते हैं ।

**प्रश्न 224. श्रावक कौनसा आगम पढ़ सकता है ?**

**उत्तर** श्रावकों को आगम पढ़ने का निषेध है, सिर्फ दीक्षार्थी को दश वैकालिक के चार अध्ययन सूत्र व अर्थ से व पाँचवाँ अध्ययन अर्थ से पढ़ने का अधिकार है ।

**प्रश्न 225. कालिक सूत्र कब पढ़ सकते हैं ?**

**उत्तर** आचारांग आदि कालिक सूत्र दिन व रात्रि के पहले व चौथे प्रहर में ही पढ़ सकते हैं ।

**प्रश्न 226. अज्ञान का क्या अर्थ होता है ?**

**उत्तर** अज्ञान के दो अर्थ होते हैं –

1. जिसमें ज्ञान का सर्वथा अभाव हो, उसे भी अज्ञान-अज्ञानी कहते हैं ।

2. जो ज्ञान आत्महितकर न हो, उस मिथ्याज्ञान को भी अज्ञान कहते हैं । इस दृष्टि से वर्तमान दुनिया में ज्ञान नहीं बल्कि अज्ञान ही बढ़ रहा है ।

**प्रश्न 227. 'इच्छकारी भगवन् पसाय कर वायणा पसाय करशोजी' का क्या अर्थ होता है ?**

**उत्तर** हे गुरु भगवंत ! आप प्रसन्न होकर अपनी इच्छानुसार मुझे वाचना प्रदान करने की कृपा करे ।

**प्रश्न 228. प्रभु महावीर का निर्वाण कब हुआ ?**

**उत्तर** कार्तिक वदी अमावस्या की रात्रि के अंतिम प्रहर के सर्वार्थसिद्ध मुहूर्त में प्रभु का निर्वाण हुआ । सर्वार्थसिद्ध मुहूर्त रात्रि का डेढ़ घंटा बाकी हो, तब चालू होता है ।

**प्रश्न 229. भाषा समिति और वचन गुप्ति में क्या फर्क है ?**

**उत्तर** स्व-पर-हितकारी, प्रमाणोपेत आदि गुणयुक्त वचन बोलना उसे भाषा समिति कहते हैं ।

मौन रहना अथवा हितकारी आदि बोलना उसे वचन गुप्ति कहते हैं ।

**प्रश्न 230. M.C. वाली स्त्री को दर्शन-पूजन कब करना चाहिए ?**

**उत्तर** M.C. वाली स्त्री M.C. पीरियड के 72 घंटे (24 प्रहर) पूरे होने के बाद प्रभुदर्शन व सामायिक-प्रतिक्रमण, जिनवाणी-श्रवण, नवकार जाप आदि धर्म क्रियाएँ कर सकती है ।

शुद्धि हो तो प्रभु की पूजा 7 दिन बाद कर सकती है ।

**प्रश्न 231. तमस्काय के जीवों का किसमें समावेश होता है ?**

**उत्तर** अप्काय में होता है ।

**प्रश्न 232. शयन समय दिशाओं का क्या फल है ?**

**उत्तर** पूर्व दिशा में मस्तक रखकर सोने से विद्या की प्राप्ति ।
दक्षिण में मस्तक रखकर सोने से धन की प्राप्ति ।
पश्चिम में मस्तक रखकर सोने से चिंता बढ़ती है ।
उत्तर में मस्तक रखकर सोने से मृत्यु होती है ।

**प्रश्न 233. तपागच्छ के पूर्व नाम कौन-कौनसे थे ?**

**उत्तर** प्रभु महावीर की आठ पाट परंपरा तक **निर्ग्रंथ गच्छ ।**
प्रभु महावीर की नौवीं पाट से एक करोड़ बार
मंत्र जाप करने से **कोटि गच्छ ।**
पंद्रहवीं पाट पर चंद्रसूरि से **चंद्र गच्छ ।**
सोलहवीं पाट से **वनवासी गच्छ ।**
छत्तीसवीं पाट से वट वृक्ष के नीचे
सूरिपद देने से **वट गच्छ ।**
चालीसवीं पाट से जगच्चंद्रसूरिजी म. से **तपागच्छ ।**

**प्रश्न 234. सुबह का पच्चक्खाण कब लेना चाहिए ?**

**उत्तर** नवकारसी का पच्चक्खाण सूर्योदय से पहले तथा पोरिसी आदि के पच्चक्खाण पहले प्रहर में ले लेने चाहिए ।

**प्रश्न 235. चैत्यवंदन में बायाँ घुटना व वंदित्तु में दाहिना घुटना ऊंचा करने का विधान क्यों है ?**

**उत्तर** बायाँ घुटना ऊँचा करने से शरीर में वे ग्रंथियां व रस स्त्रावित होते हैं जिनसे विनय गुण की पुष्टि होती है ।
चैत्यवंदन में भक्तिप्रधान सूत्र होने से विनय गुण की पुष्टि के लिए बायाँ घुटना ऊँचा करते हैं ।
वंदित्तुसूत्र में दुष्कृतगर्हा होने से वीर रस को स्त्रावित करने के लिए बायाँ घुटना ऊँचा किया जाता है ।

**प्रश्न 236. उपधान की नीवी में कच्ची विगई का त्याग क्यों ?**

**उत्तर** उपधान में तप के साथ पौषधव्रत भी होता है । पौषध में ब्रह्मचर्य का भी पूर्ण पालन करना होता है । ब्रह्मचर्य के पालन के लिए नौ वाड़ का पालन जरूरी है । नौ वाड़ में दो बाड़ आहार संबंधी

हैं, अर्थात् ब्रह्मचर्य व्रतधारी को रसप्रद गरिष्ठ आहार नहीं लेना चाहिए ।

उपधान की मूल विधि में तो उपवास और आयंबिल ही हैं अर्थात् विगइयों का सर्वथा त्याग है । कठोर तप की शक्ति नहीं है, तो उसे एकासने (नीवी) की भी छूट है ।

विगई विकृतिकारक है अर्थात् विगइयों के अतिप्रमाण में सेवन करने से कामवासना विकार भाव की वृद्धि होती है ।

उस विकृति से बचने के लिए उपधान में कच्ची विगइयों का सर्वथा त्याग होता है। सिर्फ शरीर को टिकाने के लिए दूध आदि विगइ का नीवियाता बनाकर उस विगई की विकारशक्ति को नष्ट किया जाता है । दूध आदि के नीवियाते का भी अल्प प्रमाण में ही सेवन करना होता है । ताकि ब्रह्मचर्य के पालन में कहीं बाधा न आए ।

**प्रश्न 237. मांस भी प्राणी-जन्य है और दूध भी प्राणी-जन्य है ? दूध का निषेध नहीं तो मांस का निषेध क्यों ?**

**उत्तर** पंचेन्द्रिय मादा (स्त्री) प्राणी में अपनी संतान को जन्म देने के बाद स्तनों में दूध पैदा होता है, जो संतान का पोषक होता है । गायें, भैंसें, कुत्तियाँ, भेड़-बकरियाँ आदि जब बच्चों को जन्म देती हैं, तब उन बच्चों का पोषण स्तनपान द्वारा ही होता है । जबकि मांस की प्राप्ति के लिए तो प्राणी को शस्त्रों से मारा जाता है ।

गाय, भैंस आदि का दूध निकालने पर वे मरते नहीं हैं, जबकि मांस के लिए तो गाय-भैंस को मार ही दिया जाता है ।

दूध की प्राप्ति मादा प्राणी से ही होती है, जबकि मांस तो नर व मादा दोनों प्राणी में होता है ।

गाय-भैंस को दोहते समय गाय-भैंस को पीड़ा नहीं होती है । 1-1 गाय 5-10 लीटर या उससे भी अधिक दूध देती है । उसके दूध को न निकाला जाय तो उन्हें पीड़ा होती है ।

मांस के लिए जब पशु की कतल की जाती है, उस समय उसे भयंकर वेदना सहन करनी पड़ती है ।

**प्रश्न 238. भारत में सभी लोग मांसाहार छोड़ देंगे तो क्या सभी को अनाज उपलब्ध हो सकेगा ?**

**उत्तर** मनुष्य को प्रतिदिन अनुमान से 250 gm. अनाज की जरूरत रहती है तो एक वर्ष में 100 kg. अनाज चाहिए । भारत की 125 करोड़ की Public के लिए 12.5 करोड़ टन अनाज की जरूरत रहती है, जबकि भारत में अनाज का उत्पादन 30 करोड़ टन है, उस दृष्टि से सभी अन्नाहार करें तो भी अनाज की कमी नहीं रहेगी ।

यद्यपि किसी भी प्राणी के जीवन का पैसों से मूल्यांकन नहीं कर सकते हैं फिर भी उसका भी गणित करे तो मांसाहार खूब महँगा ही है ।

पशु को घास खिलाने पर दूध का उत्पादन बढ़ता है और अनाज खिलाने पर उसके शरीर में मांस बढ़ता है ।

पशु को 7 से 16 kg. अनाज खिलाने पर उसके शरीर में 1 kg. मांस बढ़ता है ।

मांसाहार करनेवाला परोक्ष रूप से 16 अन्नाहारी का अनाज खा जाता है ।

मांसाहार यह संवेदनहीनता का लक्षण है । सब्जी काटते समय यदि अपनी अंगुली या चमड़ी कट जाती है तो भी कितनी पीड़ा होती है ! तो फिर मांसाहार के लिए पशु को काटा जाएगा तो उसे कितनी भयंकर पीडा होती होगी ? उसका अनुमान करे तो भी व्यक्ति मांस में कभी अपना मुँह नहीं डालेगा ।

**प्रश्न 239. 'जन (मानव) सेवा वह प्रभु सेवा है' क्या यह सूत्र बराबर है ?**

**उत्तर** यह सूत्र सही नहीं है । यह सूत्र अज्ञानता का सूचक है । इस सूत्र के द्वारा हम सर्व-गुण-संपन्न ऐसे परमात्मा का अवमूल्यन De-valuation करते हैं ।

सामान्यतया `जनसेवा' से वे दीन-दुःखी, गरीब, लूले-लंगड़े-अनाथ आदि की सेवा लेते हैं ।

सर्व गुण संपन्न ऐसे परमात्मा तो सबसे महान् हैं और भक्ति के पात्र हैं । उन्हें गुणहीन और पुण्यहीन ऐसे गरीब के बराबर समझना यह तो गुणों का स्पष्ट अनादर ही है ।

`दीन-दुःखी को मदद करना' यह कर्तव्य भी प्रभु ने ही बतलाया है ।

अतः जनसेवा को जिनसेवा कहना अनुचित ही है ।

**प्रश्न 240. सिद्ध भगवंतों को समस्त जगत् दिखाई देता है, तो उन्हें देखने की इच्छा होती है ?**

**उत्तर** मोहनीय कर्म के उदय से शुभ अथवा अशुभ इच्छा पैदा होती है । सिद्ध भगवंत कर्ममुक्त होने से उन्हें कुछ भी देखने की इच्छा नहीं होती है ! परंतु उन्हें सारा जगत् स्वाभाविक रूप से स्वतः दिखाई देता है ।

दर्पण इच्छा नहीं करता है, फिर भी उसमें प्रतिबिंब दिखाई देता है, उसी प्रकार सिद्धों को कुछ भी देखने की इच्छा नहीं होती है । उनकी आत्मा कर्ममुक्त होने से सारे जगत् का प्रतिबिंब उसमें गिरता है ।

**प्रश्न 241. द्विदल किसे कहते हैं ?**

**उत्तर** कच्चे दूध, दही और छाछ के साथ में चना, मूंग, उड़द आदि दलहन से बनी वस्तु का मिश्रण होते ही उसमें असंख्य बेइन्द्रिय जीव पैदा हो जाते हैं, अतः ऐसी वस्तुओं को अभक्ष्य मानकर त्याग करना चाहिए ।

कच्चे दही में बड़े डालने से असंख्य बेइन्द्रिय जीव पैदा हो जाते हैं ।

श्रीखंडके साथ पापड, सेव या उडद या मूंग के ढोकले आदि खाने से द्विदल हो जाता है, अतः उसका त्याग करना चाहिए ।

**प्रश्न 242. दो उपवास को छट्ठ व तीन उपवास को अट्ठम क्यों कहते हैं ?**

**उत्तर** सामान्य से दिन में दो बार भोजन होता है । दो उपवास में चार

टाइम के भोजन का त्याग हो जाता है तो उसके साथ आगे-पीछे भी एकासना करने का विधान है । इस प्रकार उत्तर पारणे व पारणे में एकासना होने से आगे पीछे दो टाइम का आहारत्याग होने से और कुल चार टाइम का आहारत्याग होने से छट्ठ कहलाता है ।

उसी प्रकार अट्ठम में आगे-पीछे दो टाइम व तीन दिनों के छह टाइम के आहार का त्याग होने से अर्थात् कुल आठ टाइम का आहारत्याग होने से अट्ठम कहलाता है ।

**प्रश्न 243. साधु-साध्वी के पात्रे का रंग लाल व सफेद क्यों होता है ?**

**उत्तर** श्वेतांबर मूर्तिपूजक तपागच्छीय परंपरा में साधु-साध्वी के काष्ठ पात्र बाहर से लाल एवं अंदर से सफेद होते हैं तथा पात्रों के बाह्य भाग में काले रंग की पट्टी होती है । अरिहंत परमात्मा का श्वेतवर्ण है । साधु-साध्वी को अपने पात्र में अरिहंत की आज्ञानुसार आहार-पानी वहोरना है इसके प्रतीक में पात्रे के अंदर सफेद वर्ण होता है । सफेद वर्ण में कोई जीव जंतु आ जाय तो स्पष्ट दिखाई देता है ।

साधु का लक्ष्य सिद्ध पद है, अतः इस लक्ष्य को स्मृति में रखने के लिए पात्रे के बाहर लाल वर्ण होता है ।

पात्रे के बाहर श्याम वर्ण की पट्टी साधुपद का प्रतीक है ।

**प्रश्न 244. चौविहार आदि का पच्चक्खाण कब लेना चाहिए ?**

**उत्तर** संध्याकालीन पच्चक्खाण सूर्यास्त के पूर्व ले लेना चाहिए ।

**प्रश्न 245. जातिभव्य और अभव्य में क्या फर्क है ?**

**उत्तर** जाति भव्य अर्थात् जिसमें मोक्षगमन की योग्यता होने पर भी सदा काल अव्यवहार राशि की निगोद में ही रहने के कारण उसका कभी मोक्ष नहीं होता है ।

अभव्य आत्मा में मोक्षगमन की योग्यता का ही अभाव होने से उसका कभी मोक्ष नहीं होता है ।

अभव्य आत्मा को मोक्षगमन के अनुकूल सामग्री प्राप्त होती है, परंतु योग्यता का ही अभाव होने से मोक्ष नहीं होता है ।

अभव्य आत्मा वंध्या स्त्री तुल्य है, जिसे पति का समागम होने पर भी पुत्रप्राप्ति नहीं होती है ।

जाति भव्य आत्मा कुँवारी कन्या या विधवा स्त्री के समान है, जिसमें पुत्र पैदा करने की योग्यता होने पर भी पतिसंयोग का अभाव होने से पुत्र प्राप्त नहीं होता है ।

**प्रश्न 246. कल्पातीत और कल्पोपपन्न देवों में क्या फर्क है ?**

**उत्तर** भवनपति, व्यंतर, ज्योतिष और बारह वैमानिक देवलोक तक के देवता कल्पोपपन्न कहलाते हैं,उन देवलोकों में स्वामी-सेवक का व्यवहार होता है । वे प्रभु के जन्म आदि कल्याणकों में पृथ्वी पर आते हैं जबकि नौ ग्रैवेयक और पाँच अनुत्तर के देवता कल्पातीत कहलाते हैं, वहाँ सभी देव एक समान होते हैं, स्वामी-सेवक का कोई भाव नहीं होता है, वे हमेशा तत्त्व-चिंतन में मग्न होते हैं । प्रभु के जन्म आदि कल्याणक प्रसंगों में भी पृथ्वी पर नहीं आते हैं ।

**प्रश्न 247. पोरिसी और बहुपडिपुन्ना पोरिसी में क्या फर्क है ?**

**उत्तर** पोरिसी अर्थात् दिन का चौथा भाग अर्थात् एक प्रहर !

बहुपडिपुन्ना पोरिसी अर्थात् पोणा प्रहर !

**प्रश्न 248. बहुपडिपुन्ना पोरिसी कब पढ़ाई जाती है ?**

**उत्तर** साधु-साध्वी एवं पौषध व्रतधारी श्रावक-श्राविकाएँ अपने पात्र पड़िलेहन के लिए सूर्योदय से पौना प्रहर बीतने पर यह पोरिसी पढ़ाते हैं अथवा सूर्योदय के बाद छह घड़ी (दो घंटा और चौबीस मिनिट) बीतने पर यह पोरिसी पढ़ाई जाती है । उसके बाद पात्र आदि की पडिलेहना की जाती है ।

उसी प्रकार रात्रि में संथारे पर शयन के पूर्व सूर्यास्त से पोणा प्रहर बीतने पर संथारा पोरिसी पढ़ाई जाती है ।

**प्रश्न 249. दही में बने थेपले दूसरे दिन खा (वापर) सकते क्या हैं ?**

**उत्तर** सिर्फ दही में थेपले बनाए हों तो दूसरे दिन चलते हैं । दही में पानी डाला हो या छाश से बनाए हों तो दूसरे दिन नहीं चलते हैं । दूध में बने हुए थेपले दूसरे दिन बासी होते हैं ।

**प्रश्न 250. सूत्र के उद्देश, समुद्देश और अनुज्ञा का क्या अर्थ है ?**

**उत्तर** 1. सूत्र पढ़ने की अनुमति को शास्त्रीय भाषा में उद्देश कहते हैं अर्थात् `तुम्हें यह सूत्र पढ़ना चाहिए।' अर्थात् सूत्र पढ़ने की आज्ञा।

**2. समुद्देश :** सूत्र को अच्छी तरह से पढ़ने (याद करने) के बाद गुरु आज्ञा करते हैं-`तुम इस सूत्र को आत्मसात् अर्थात् स्थिर करो, उसे समुद्देश कहते हैं।

**3. अनुज्ञा :** सूत्र को आत्मसात् करने के बाद गुरु आज्ञा करते हैं-`तुम इस सूत्र को अच्छी तरह से धारण करो और दूसरों को भी पढ़ाओ, उसे अनुज्ञा कहते हैं।

अनुज्ञा में दूसरों को सूत्र पढ़ाने की अनुमति है।

**प्रश्न 251. कृष्ण महाराजा ने एक ही दिन में 18,000 साधुओं को वंदन कैसे किया होगा ? वंदन में समय तो लगता है ?**

**उत्तर** सेन प्रश्नोत्तरी में इसका समाधान करते हुए कहा है कि कृष्ण महाराजा ने साधुओं के ग्रुप के नायक स्पर्धक पतियों को द्वादशावर्त वंदन किया था। नायक के वंदन में उनके अधीन साधुओं को वंदन आ जाता है। इस दृष्टि से कृष्ण ने 18,000 साधुओं को वंदन किया था।

**प्रश्न 252. चातुर्मास में साधु-साध्वी कितनी दूरी तक जा सकते हैं ?**

**उत्तर** चातुर्मास में जहाँ चातुर्मासिक प्रतिक्रमण किया हो, उसके चारों ओर 8 Km. तक जा सकते हैं, परंतु जहाँ मुहपत्ति पडिलेहन किया हो, वहीं रात्रिविश्राम कर सकते हैं।

**प्रश्न 253. प्रतिक्रमण में कौनसे सूत्र स्त्रियाँ नहीं बोल सकती हैं ? और क्यों ?**

**उत्तर** स्त्रियों को बारहवाँ अंग दृष्टिवाद पढ़ने का अधिकार नहीं है, अतः पूर्वगत सूत्र-नमोऽर्हत्, नमोऽस्तु वर्धमानाय, विशाल लोचन, वरकनक आदि सूत्र स्त्रियाँ नहीं बोल सकती हैं।

**प्रश्न 254. साधु-साध्वी को अचित्त रज का कायोत्सर्ग कब करना होता है?**

**उत्तर** साधु-साध्वी को अचित्त रज उड्डावणी का कायोत्सर्ग वर्ष में

एक ही बार चैत्र सुदी-11, 12 व 13 अथवा 12, 13 व 14 अथवा 13, 14 व 15 को करना होता है ।

कायोत्सर्ग भूल गए हों वे योगोद्वहन नहीं कर सकते हैं और न ही योगोद्वहन करा सकते हैं । पर्युषण में कल्पसूत्र भी नहीं पढ़ सकते हैं ।

**प्रश्न 255. ब्रह्मचारी पुरुष को स्त्री के आसन पर और स्त्री को पुरुष के आसन पर कितने समय तक नहीं बैठना चाहिए ?**

**उत्तर** ब्रह्मचारी पुरुष को स्त्री के आसन पर 48 मिनिट तक और स्त्री को पुरुष के आसन पर तीन प्रहर तक नहीं बैठना चाहिए ।

**प्रश्न 256. सिद्धचक्र यंत्र की पूजा के बाद उसी केसर से प्रभु की पूजा कर सकते हैं क्या ?**

**उत्तर** सिद्धचक्र यंत्र में गुरुपद पर किसी व्यक्ति की पूजा नहीं है परंतु गुरुपद की ही पूजा है । अतः सिद्धचक्र-पूजन के बाद प्रभु की पूजा हो सकती है ।

**प्रश्न 257. किसी पाप का प्रायश्चित्त करने से उस पाप की सजा कम हो जाती है क्या ?**

**उत्तर** सच्चे हृदय से पाप का पश्चाताप किया जाय तो आत्मा पाप की सजा में से अवश्य मुक्त होती है ।

**प्रश्न 258. जैन धर्म कर्मवाद को मानता है तो फिर अच्छे कार्य में मुहूर्त क्यों देखा जाता है ?**

**उत्तर** शुभ-अशुभ कर्म के उदय में द्रव्य-क्षेत्र-काल और भाव भी निमित्त बनते हैं । अतः शुभ मुहूर्त भी अवश्य देखना चाहिए । कर्म तो प्रधान है ही फिर भी जान-बूझकर मुहूर्त की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए ।

**प्रश्न 259. कोई व्यक्ति आत्महत्या करता है, तो क्या उसके वैसे ही कर्म थे ?**

**उत्तर** कहा भी है-`बुद्धिः कर्मानुसारिणी' व्यक्ति का जैसा भावी होता है वैसी ही उसको बुद्धि सूझती है ।

**प्रश्न 260. उपधान घर बैठे कर सकते हैं क्या ?**

**उत्तर** उपधान गुरुनिश्रा में ही करना चाहिए । महानिशीथ सूत्र के

योगोद्वहन किए हुए साधु महात्मा ही उपधान की क्रियाएँ करा सकते हैं ।

**प्रश्न 261. प्रतिक्रमण में 'आड़' लगती है, इसका क्या अर्थ है ? आड़ पड़े तो क्या करना चाहिए ?**

**उत्तर** स्थापनाचार्यजी के सम्मुख क्रिया करते समय अपने व स्थापनाचार्यजी के बीच कोई पंचेन्द्रिय मनुष्य या प्राणी गया हो तो उसे आड़ पड़ी कहते हैं । आड पड़ने पर पुनः 'इरियावहिय' करके आगे की क्रिया वापस करनी चाहिए ।

**प्रश्न 262. परमात्मा तो वीतराग है, सोने-चाँदी के आभूषणों से उनकी पूजा क्यों करते हैं ?**

**उत्तर** परमात्मा की प्रतिमा पर आभूषण चढ़ाने से परमात्मा रागी नहीं बन जाते हैं ।

आभूषणों से उनकी पूजा, हम हमारी धन की मूर्च्छा को दूर करने के लिए करते हैं ।

**प्रश्न 263. प्रभु का प्रक्षाल-जल अपनी आँखों पर कब लगाना चाहिए ?**

**उत्तर** मंदिर में से बाहर निकलते समय प्रभु का प्रक्षाल-जल आँखों पर लगाना चाहिए । उस समय हृदय में यह भावना करे कि **'मेरी आँखें विकारमुक्त पवित्र बनें ।'**

**प्रश्न 264. पाँच तिथियों के दिन का हरी वनस्पति का त्याग क्यों करते हैं ?**

**उत्तर** हरी वनस्पतिजन्य आहार राग का पोषक है, अतः राग से बचने के लिए हरी वनस्पति का त्याग किया जाता है । संपूर्ण त्याग संभव न हो तो कम-से-कम बडी पाँच तिथियों के दिन उनका अवश्य त्याग करना चाहिए । पर्वतिथि के दिन आगामी भव के आयुष्य बंध की संभावना है, अतः उन दिनों में किया गया त्याग हमें विशेष लाभ करता है ।

**प्रश्न 265. क्या 24 तीर्थंकरों के यक्ष-यक्षिणी सम्यग्दृष्टि होते हैं ?**

**उत्तर** हाँ !

**प्रश्न 266. क्या चातुर्मास में पत्ता गोभी चलती है ?**

**उत्तर** नहीं ! चातुर्मास में वह अभक्ष्य है, क्योंकि उसमें जीवोत्पत्ति की संभावना है ।

**प्रश्न 267. दही का काल कैसे समझना चाहिए ?**

**उत्तर** दो रात्रि प्रसार होने के बाद दही अभक्ष्य हो जाता है । सोमवार को शाम को दूध में जामन डाला हो तो वह मंगल की रात्रि प्रसार हो तब तक भक्ष्य है । मंगलवार की रात्रि प्रसार हो जाने के बाद अभक्ष्य हो जाता है, अतः बुधवार के सूर्योदय के पूर्व छाछ बना देनी चाहिए ।

**प्रश्न 268. क्या धार्मिक पुस्तके रद्दी में बेच सकते हैं ?**

**उत्तर** धार्मिक या अधार्मिक किसी भी प्रकार की पुस्तकें रद्दी में नहीं बेच सकते हैं, उससे ज्ञान की आशातना होती है ।

**प्रश्न 269. नवकार के पहले चार पदों में 'सव्व' शब्द क्यों नहीं है ?**

**उत्तर** पाँचवें पद में रहा 'सव्व' पद उपर्युक्त सभी पदों को लागू पड़ता है ।

**प्रश्न 270. साधर्मिक भक्ति का क्या अर्थ है ? गरीब श्रावक को देना या सभी को ?**

**उत्तर** अपने समान धर्मी की आदरपूर्वक भक्ति करना, उसे साधर्मिक भक्ति कहते हैं ।

साधर्मिक यदि आर्थिक दृष्टि से कमजोर है तो उसका सम्मान बना रहे, इस ढंग से या गुप्त रीति से आर्थिक सहयोग करना वह भी साधर्मिक भक्ति है ।

**प्रश्न 271. मोक्षमाला कब पहिनाई जाती है ?**

**उत्तर** पहला, दूसरा, चौथा व छठा उपधान पूरा होने के बाद मोक्ष-माला पहिनाई जाती है ।

पहला उपधान - नवकार मंत्र का ।

दूसरा उपधान - इरियावहिय सूत्र का ।

चौथा उपधान - अरिहंत चेइयाणं का ।

छठा उपधान - पुक्खरवरदी, सिद्धाणं बुद्धाणं एवं वेयावच्चगराणं ।

पहला व दूसरा उपधान 18-18 दिन = 36 दिन ।

चौथा उपधान 4 दिन ।
छठा उपधान 7 दिन ।
= 47 दिन

मूल विधि से तप करे तो पहला व दूसरा उपधान 16 + 16 = 32 दिन में पूरे हो जाते हैं ।

**प्रश्न 272. 35 व 28 दिन का दूसरा व तीसरा उपधान किस-किस सूत्र का होता है ?**

**उत्तर** 35 दिन का शास्त्रीय तीसरा व प्रचलित दूसरा उपधान शक्रस्तव-नमुत्थुणं सूत्र का होता है ।

28 दिन का पाँचवाँ उपधान (प्रचलित तीसरा उपधान) लोगस्ससूत्र का होता है ।

**प्रश्न 273. धूप पूजा कहाँ खड़े होकर करनी चाहिए ?**

**उत्तर** धूप पूजा गर्भगृह (गभारे) के बाहर खड़े होकर करनी चाहिए । प्रभु के नाक के पास धूप नहीं ले जाना चाहिए ।

**प्रश्न 274. उपधान माला का उपवास कब तक करना चाहिए ?**

**उत्तर** मोक्षमाला पहिनने के बाद एक वर्ष तक प्रतिमास मोक्षमाला की तिथि के दिन उपवास करें और उसके बाद जीवन पर्यंत मोक्षमाला की वार्षिक तिथि के दिन उपवास करें ।

**प्रश्न 275. मुहपत्ति पडिलेहन के 50 बोल मन में क्यों बोलते हैं-यदि जोर से बोले जायें तो जिसे नहीं आता हो, उसे भी ख्याल आ सकता है ?**

**उत्तर** मन को शुभ भावों से भावित करने के लिए मुहपत्ति व वस्त्र पडिलेहन करते समय 50 व 25 बोल बोले जाते हैं । पडिलेहन की क्रिया मौनपूर्वक करने का विधान है, अतः वे बोल भी मन में ही बोले जाते हैं ।

**प्रश्न 276. सफेद रंग का क्या महत्त्व है ?**

**उत्तर** अरिहंत का वर्ण श्वेत है । श्वेतवर्ण शुक्ल ध्यान व शुक्ल लेश्या का भी प्रतीक है ।

24 व 170 तीर्थंकरों में भी कुछ का वर्ण श्वेत होता है ।

**प्रश्न 277. पर्युषण में बच्चे किसी दिन उपवास-एकासना करते हैं परंतु स्कूल के कारण दूसरे दिन नवकारसी नहीं कर पाते हैं, तो वह एकासना-उपवास चलता है या नहीं ?**

**उत्तर** श्रावक के लिए प्रतिदिन जघन्य पच्चक्खाण नवकारसी का होता है। उपवास-एकासने आदि के बाद भी दूसरे दिन नवकारसी करनी चाहिए। हाँ ! कोई भी उपवास एकासने आदि का पच्चक्खाण दूसरे दिन के सूर्योदय तक होता है, अतः स्कूल आदि के कारण संयोगवश नवकारसी न हो सके तो भी सूर्योदय पहले तो नहीं खाना चाहिए। सूर्योदय पूर्व वापरने से रात्रि- भोजन का भी दोष लगता है, वे बालक मुट्ठसी का पच्चक्खाण कर सकते हैं।

**प्रश्न 278. आरती के समय घंटनाद क्यों करते हैं ?**

**उत्तर** हृदय के आनंद को व्यक्त करने के लिए प्रभु आरती के समय घंटनाद आदि वाद्ययंत्र बजाए जाते हैं।

**प्रश्न 279. पौषध की अनुकूलता ही न हो तो पौषध उपवास की आलोचना कैसे उतार सकते हैं ?**

**उत्तर** एक उपवास कर स्वतंत्र 30 सामायिक करें !

**प्रश्न 280. प्रभुजी के खोले (खोखे) पर बादाम लवंग से आंगी कर सकते हैं क्या ?**

**उत्तर** बादाम आदि खाद्य सामग्री से नैवेद्य पूजा अग्रपूजा के रूप में कर सकते हैं। उसे प्रभुजी के खोखे पर नहीं चढ़ाना चाहिए।

**प्रश्न 281. पर्युषण में स्वप्न आदि के चढ़ावे की रकम 70% देवद्रव्य व 30% साधारण में ले जा सकते हैं क्या ?**

**उत्तर** नहीं ! जिस चढ़ावे की रकम देवद्रव्य में जाती है, वह 100% देवद्रव्य में ही ले जानी चाहिए। अपनी मर्जी मुजब कुछ भी परिवर्तन करने से देवद्रव्य के भक्षण का दोष लगता है, जो भयंकर पाप है।

**प्रश्न 282. M.C. वाली स्त्री ने भूल से साधु-साध्वी को गोचरी बहोरा दी हो तो क्या करना चाहिए ?**

**उत्तर** ख्याल आते ही साधु-साध्वी को सूचित कर दें ताकि वे उस वस्तु को न वापरें !

अपनी भूल का प्रायश्चित्त करना चाहिए।

**प्रश्न 283. शाक-सब्जी-चींटी में भी जीव है और गाय-बकरी में भी जीव है तो फिर मांसाहार में अधिक पाप क्यों ?**

**उत्तर** यद्यपि शाक-सब्जी में भी जीव है, पशु-पक्षी में भी जीव है और मनुष्य में भी, फिर भी जीवों के विकास की दृष्टि से जो जीव आगे है, उसकी हिंसा में अधिक दोष लगता है ।

कोई सामान्य व्यक्ति की हत्या करे और कोई प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति की हत्या करे, दोनों में मनुष्य की ही हत्या होने पर भी प्रधानमंत्री व राष्ट्रपति की हत्या करनेवाला बडा गुनहगार कहलाता है, उसी प्रकार एकेन्द्रिय जीव की हिंसा से
बेइन्द्रिय जीव की हिंसा में,
बेइन्द्रिय की अपेक्षा तेइन्द्रिय की हिंसा में,
तेइन्द्रिय की अपेक्षा चउरिन्द्रिय की हिंसा में,
चउरिन्द्रिय की अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच की हिंसा में,
तिर्यंच की अपेक्षा मनुष्य की हिंसा में अधिक पाप लगता है ।
– छोटे जीव की अपेक्षा बड़े जीव की हिंसा में अधिक क्रूरता, निर्दयता व हृदय की कठोरता होती है ।

`जीवन जीने के लिए आहार की अपेक्षा रहती है और आहार हेतु जीवहिंसा भी होती ही है । तो बुद्धिमत्ता इसी में है कि `कम-से-कम जीवों की हिंसा हो और अपने मानसिक परिणामों की रक्षा हो ।' इस Angle से भी मांसाहार सर्वथा त्याज्य है, क्योंकि मांसाहार हेतु पंचेन्द्रिय विकसित प्राणी का वध होता है ।

**प्रश्न 284. तीर्थंकर परमात्मा को प्रथम पारणा करानेवाले का मोक्ष कब होता है ?**

**उत्तर** उसी भव में अथवा तीसरे भव में ।

**प्रश्न 285. तीर्थंकरों का आयुष्य उस काल की अपेक्षा उत्कृष्ट आयुष्य होता है क्या ?**

**उत्तर** नहीं ! तीर्थंकर, चक्रवर्ती व बलदेव-वासुदेव के जीवन में वृद्धत्व नहीं होता है, अतः उनकी उम्र मध्यम वय की होती है ।

**प्रश्न 286. मंदिर में प्रक्षाल व पूजा के पीछे कितना व्यय किया जाता है-क्या वह योग्य है ?**

**उत्तर** दूध से बनी चॉकलेट आदि के पीछे कितना दूध चला जाता है । क्या वे चॉकलेट-केडबरी गरीबों के मुंह में जाती हैं ?

भारत में प्रतिवर्ष 3,57,000 करोड़ का Food-waste हो जाता है ।

बेंगलोर के 531 मेरेज हॉल में 943 टन जितना भोजन गटर में चला जाता है-जिसकी value 339 करोड़ हो जाती है ।

त्रिजगत्पूज्य ऐसे परमात्मा की भक्ति अपनी शक्ति के अनुसार मूल्यवान पदार्थों से करे तो वह उचित ही है । इसमें तर्क को कोई स्थान नहीं है ।

**प्रश्न 287. प्रभु के मंदिर के पीछे इतना खर्च क्यों ?**

**उत्तर** हर प्राणी रहने के लिए अपना घर बनाता है । पक्षी घोसले बनाते हैं, चूहा बिल बनाता है । मनुष्य भी अपना घर बनाता है । प्रभु का मंदिर बनाने का सौभाग्य सिर्फ मनुष्य को है ।

लग्न का प्रसंग 3 घंटे का होने पर भी कितनी सजावट करते हैं । लग्न के वस्त्र 1 दिन पहिनने के हैं, फिर भी कितने कीमती बनाते हैं ।

प्रभु तो जगत् उद्धारक हैं तो उनका स्थान भी श्रेष्ठ होना चाहिए । सादगी प्रशंसनीय है, परंतु जीवन में तो उदारता ही प्रशंसनीय है ।

**प्रश्न 288. मंदिर के पीछे करोड़ों का खर्च क्यों ?**

**उत्तर** मंदिरनिर्माण व मंदिर की सामग्री के पीछे हजारों-लाखों लोगों का पेट भरता है ।

मंदिर हेतु पाषाण, सीमेंट, चूना, ईंट आदि चाहिए, इससे उन सबको रोजगार मिलता है ।

पूजा के वस्त्र, चामर, धूप, दीप, बर्तन, घण्टा, आंगी की सामग्री व अनेक उपकरणों के पीछे अनेक को रोजी मिलती है ।

अमेरिका के राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की भारत की 7 दिन की

मुलाकात के पीछे उनकी सुरक्षा के लिए भारत सरकार 100 करोड़ का खर्च कर सकती है, क्या उसे Waste of Money कहते हैं ।

जो 5 वर्ष का राजा हो, ऐसे P.M. के 5-10 मिनिट के भाषण के पीछे भी करोड़ों का खर्च हो जाता है ।

तो फिर जो त्रिलोक के नाथ हैं, उनकी भक्ति के पीछे खर्च करे, उसे waste of money कैसे कह सकते हैं !

**प्रश्न 289. प्रभु की प्रतिमा तो जड़ है उसके पीछे इतना धन व्यय करने की क्या आवश्यकता ?**

**उत्तर** प्रभु की प्रतिमा भले ही पाषाण, स्वर्ण, रत्न या पाँच धातु की हो, परंतु उसके प्रति रही श्रद्धा तो जीवंत है ।

वि.संवत् 2053 में मेरा सायन में चातुर्मास था, ठीक 1 दिन पूर्व घाटकोपर में किसी ने अंबेडकर के statue के गले में जूतों का हार पहिना दिया, उसके बाद मात्र घाटकोपर में ही नहीं, पूरे मुंबई में हुल्लड़ मच गया ।

अंबेडकर के पुतले के किए गए अपमान के फलस्वरूप इतनी उत्तेजना पैदा हो सकती है तो जगत् के उद्धारक, तीन लोक के नाथ, देवाधिदेव, परमात्मा की प्रतिमा की की गई भक्ति क्या निष्फल जाएगी ? क्या उस भक्ति के स्वरूप हमारे अन्तर्मन में सद्भाव का प्रवाह पैदा नहीं होगा ?

अमूर्त ऐसे परमात्मा के पास पहुँचने का माध्यम मूर्त परमात्मा की उपासना ही है ।

T.V. के विज्ञापन में आनेवाली वस्तुएँ जड़ होने पर भी दर्शक के दिल में अपूर्व आकर्षण पैदा कर देती हैं तो प्रभु की प्रतिमा हमें प्रभु की ओर आकर्षित क्यों नहीं करेगी !

मूर्ति की पूजा कोई जड़ क्रिया नहीं है, परंतु प्रभु के निकट जाने का मार्ग ही है ।

गोशाले को साक्षात् भगवान मिले, फिर भी उसका कल्याण नहीं

हुआ, जबकि अनुपमादेवी को प्रतिमा रूप में भगवान मिले, तो भी उसका कल्याण हो गया ।

कंस को प्रत्यक्ष कृष्ण मिले और मीरा को कृष्ण की प्रतिमा ही मिली फिर भी कंस का उद्धार नहीं हुआ, मीरा का विकास हो गया । कैकेयी को प्रत्यक्ष राम मिले और वाल्मिकी व तुलसीदास को परोक्ष राम मिले !

अयोग्यता / अपात्रता हो तो प्रत्यक्ष प्रभु भी लाभ नहीं कर पाते हैं और योग्यता / पात्रता हो तो प्रत्यक्ष और परोक्ष प्रभु लाभ कर देते हैं ।

**प्रश्न 290. जगत् की समस्या Globle warming के निवारण में जैन साधु का क्या योगदान है ?**

**उत्तर** वैज्ञानिकों के निष्कर्ष के अनुसार आज का इंसान वाहन और बिजली के उपयोग द्वारा वातावरण में 2 टन कार्बन की वृद्धि करता है, जिससे वातावरण दूषित होता है ।

सामायिक व्रत स्वीकार करनेवाला एक श्रावक प्रतिदिन एक सामायिक कर दो घड़ी के लिए वाहन और बिजली का सर्वथा त्यागकर वातावरण को शुद्ध बनाने में कितना बड़ा योगदान करता है ।

यद्यपि सामायिक का मुख्य उद्देश्य आत्मा की शुद्धि है न कि वातावरण की शुद्धि, परंतु सामायिक की प्रतिज्ञा के अन्तर्गत वाहन व बिजली का सर्वथा त्याग होने से वातावरण को शुद्ध बनाने का कार्य स्वतः हो जाता है ।

जैन भागवती दीक्षा धर्म का जीवनपर्यंत पालन करनेवाले जैन मुनि वातावरण को प्रदूषित होने से बचाते हैं ।

आत्मकल्याण के उद्देश्य से की गई इस साधना का परोक्ष लाभ वातावरण को शुद्ध बनाने में भी हो जाता है ।

वर्तमान युग के मानवी को अन्य किसी वस्तु का त्याग कदाचित् संभव हो परंतु वाहन और बिजली का त्याग तो असंभवसी घटना है ।

जैन साधु Hospital में जाकर किसी दर्दी की सेवा नहीं करते हैं, परंतु आहार-संयम व आहार-विवेक के उपदेश द्वारा अनेक को अनेक रोगों से ही बचा देते हैं ।

**प्रश्न 291. चौथी नरक में उत्कृष्ट स्थिति कितनी है ?**

**उत्तर** 10 सागरोपम ।

**प्रश्न 292. निगोद जीव के एक मुहूर्त में कितने भव होते हैं ?**

**उत्तर** 65,536

**प्रश्न 293. कंस के श्वसुर का क्या नाम था ?**

**उत्तर** जरासंध ।

**प्रश्न 294. एक अहोरात्रि में कितने प्रहर होते हैं ?**

**उत्तर** आठ

**प्रश्न 295. सिंह मरकर कौनसी नरक में जा सकता है ?**

**उत्तर** चौथी नरक तक ।

**प्रश्न 296. भगवती सूत्र में कितने प्रश्नों के उत्तर हैं ?**

**उत्तर** 36000 प्रश्नों के ।

**प्रश्न 297. बलदेव की माता कितने उत्तम स्वप्न देखती है ?**

**उत्तर** चार ।

**प्रश्न 298. श्रावक का गुणस्थान कौनसा होता है ?**

**उत्तर** चौथा या पांचवाँ ।

**प्रश्न 299. सौधर्म देवलोक में उत्कृष्ट आयुष्य कितना है ?**

**उत्तर** दो सागरोपम ।

**प्रश्न 300. द्रव्य दीक्षा बिना किसने मोक्ष प्राप्त किया ?**

**उत्तर** मरुदेवा माता ने ।

**प्रश्न 301. समकित के कितने अतिचार हैं ?**

**उत्तर** पांच ।

**प्रश्न 302. भगवान महावीर के निर्वाण के कितने वर्ष बाद गौतम स्वामी का निर्वाण हुआ ?**

**उत्तर** आठ वर्ष बाद ।

**प्रश्न 303. 24 घंटे में कितनी सामायिक हो सकती है ?**

**उत्तर** 30।

**प्रश्न 304. महावीर प्रभु ने** 15 उपवास का तप कितनी बार किया ?

**उत्तर** 72 बार।

**प्रश्न 305. तेइन्द्रिय जीव का उत्कृष्ट आयुष्य कितना होता है ?**

**उत्तर** 49 अहो रात्र।

**प्रश्न 306. दशवैकालिक आगम सूत्र की रचना किसने की ?**

**उत्तर** चौदह पूर्वधर स्वयंभवसूरिजी म. ने।

**प्रश्न 307. सगर चक्रवर्ती के कितने पुत्र थे ?**

**उत्तर** 60,000।

**प्रश्न 308. पेथडशा ने कितनी उम्र में ब्रह्मचर्यव्रत लिया था ?**

**उत्तर** 32 वर्ष में।

**प्रश्न 309. पार्श्वनाथ प्रभु का दीक्षापर्याय कितने वर्ष का था ?**

**उत्तर** 70 वर्ष का।

**प्रश्न 310. गौतम स्वामी के कितने केवली शिष्य थे ?**

**उत्तर** 50,000।

**प्रश्न 311. गौतम स्वामी का कुल आयुष्य कितना था ?**

**उत्तर** 92 वर्ष।

**प्रश्न 312. भगवान के जन्म-समय मेरु पर्वत पर नौ ग्रैवेयक और पाँच अनुत्तर के देवता क्यों नहीं आते हैं ?**

**उत्तर** देवलोक में देवताओं के दो प्रकार हैं-

**1) कल्पोपपन्न और कल्पातीत !**

जो बाह्य व्यवहार-आचार मर्यादा आदि से सर्वथा मुक्त होते हैं, वे कल्पातीत कहलाते हैं। नौ ग्रैवेयक व पाँच अनुत्तर के देव कल्पातीत होने से वे प्रभु के जन्म आदि कल्याणक प्रसंगों में कहीं भी आते नहीं हैं।

भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी और वैमानिक तथा नौ लौकांतिक देव कल्पोपपन्न कहलाते हैं। वहाँ छोटे बड़े आदि का व्यवहार होता है।

प्रभु के जन्म आदि कल्याणक प्रसंगों पर कल्पोपपन्न देव ही आते हैं ।

**प्रश्न 313. स्नात्र पूजा में जो त्रिगडा रखा जाता है, उसका आकार कैसा होना चाहिए ?**

**उत्तर** स्नात्र पूजा यह देवताओं के द्वारा मेरु पर्वत पर किए गए प्रभु के जन्म कल्याणक महोत्सव का प्रतीक है अतः त्रिगडा में समवसरण के तीन गढ़ न बनाकर मेरु पर्वत के तीन गढ़ बनाने चाहिए । बारहव्रत, भागवती-दीक्षा, उपधान आदि के प्रसंग में जो तीन गढ़ रखे जाते हैं, वह समवसरण का प्रतीक है, अतः वहाँ समवसरण के प्रतीक रूप तीन गढ़ बनाने चाहिए ।

**प्रश्न 314. सम्यक्त्व की उपस्थिति में आत्मा कौन से आयुष्य का बंध करती है ?**

**उत्तर** सम्यक्त्व की उपस्थिति में देवता व नारक के जीव मनुष्य आयुष्य का बंध करते हैं तथा मनुष्य व तिर्यंच सम्यक्त्व की उपस्थिति में वैमानिक देव गति के आयुष्य का ही बंध करते हैं ।

**प्रश्न 315. शुद्ध निश्चय नय सम्यक्त्व कौनसे गुणस्थान में होता है ?**

**उत्तर** सातवें अप्रमत्त गुणस्थान में निश्चय नय से सम्यक्त्व होता है ।

**प्रश्न 316. सिद्ध भगवंत तो निराकार-अशरीरी होते हैं, तो फिर मंदिर में परिकर रहित प्रतिमा को सिद्ध अवस्था की प्रतिमा क्यों कहते हैं ?**

**उत्तर** यद्यपि सिद्ध भगवंत निराकार होते हैं, परंतु उनकी पूजा-भक्ति के लिए आकार में ही सिद्धों की स्थापना की जाती है ।

सभी तीर्थंकर भी जब मोक्ष में जाते हैं तब सिद्ध ही कहलाते हैं फिर भी अरिहंत व सिद्ध की अवस्था को याद करने के लिए उनकी प्रतिमा में भेद किया जाता है, परिकर युक्त हो उसे अरिहंत की प्रतिमा व परिकर रहित हो तो सिद्ध की प्रतिमा कहते हैं । यद्यपि महावीर स्वामी तीर्थंकर हुए हैं, परंतु परिकर रहित उनकी प्रतिमा हो तो वह महावीर प्रभु की सिद्धावस्था की प्रतिमा कहलाती है ।

**प्रश्न 317. नवपद ओली में असज्झाय कब से कब तक होती है ?**

**उत्तर** चैत्र सुदी पंचमी के मध्याह्न से वैशाख (शास्त्रीय) वदी-2 के सूर्योदय तक ।

आसो सुदी पंचमी के मध्याह्न से कार्तिक (शास्त्रीय) वदी-2 के सूर्योदय तक ।

**प्रश्न 318. साधु को भी संज्वलन कषाय होते हैं तो फिर उन्हें पंचिंदिय सूत्र में 'चउविह कसायमुक्को' क्यों कहा गया है ?**

**उत्तर** संज्वलन कषाय में कषायों की तीव्रता नहीं होती है, संज्वलन कषायों में मंदता होती है, अतः गुरुपद की व्याख्या में `कषायों से मुक्त कहा है ।' व्यवहार में अल्प धनवाले को भी निर्धन कहा जाता है, उसी प्रकार अल्प कषायवाले को भी कषायमुक्त कहा जाता है ।

**प्रश्न 319. क्या साध्वीजी द्वादशांगी का अभ्यास कर सकती हैं ?**

**उत्तर** प्राचीनकाल में भी स्त्रियों के लिए दृष्टिवाद अर्थात् 14 पूर्वों के अभ्यास का निषेध था, वर्तमान में भी **'नमोऽस्तु वर्धमानाय'** आदि पूर्वगत सूत्र होने से स्त्रियों के लिए उसके स्वाध्याय का निषेध है ।

वज्रस्वामीजी ने पालने में झूलते-झूलते साध्वीजी म. के मुख से सुन-सुनकर ग्यारह अंग कंठस्थ कर लिये थे ।

कालक्रम से वर्तमान में साध्वीजी म. को सिर्फ एक ही अंग (आचारांग) की अनुज्ञा हैं-शेष अंगों के स्वाध्याय का निषेध है ।

**प्रश्न 320. चतुर्दशी आदि पर्व तिथि या पर्युषण में प्रभुजी को फल पूजा में हरा-पका फल अर्पण कर सकते हैं क्या ?**

**उत्तर** हरे व पके फल में जीवात्मा को आसक्ति ज्यादा होती है, अतः उस आसक्ति को तोड़ने के लिए हर रोज हरे फल आदि का त्याग न कर सके तो भी कम-से-कम पर्व तिथि व पर्वदिनों में हरी वनस्पति व फलों का अवश्य त्याग करना चाहिए ।

पर्वदिनों में भी प्रभु-भक्ति में हरे व पके हुए फलों का ही उपयोग करना चाहिए ।

प्रभु की फलपूजा भी फल आदि की आसक्ति को तोड़ने के लिए ही है ।

पर्वदिनों में श्रावक के लिए सचित्त जलपान का निषेध है, फिर भी प्रभु का प्रक्षालन-अभिषेक तो सचित्त जल से ही करने का विधान है, उसी प्रकार स्व उपभोग के लिए फल का निषेध होने पर भी प्रभुभक्ति में तो हरे फल व पके फल से ही प्रभु की फल पूजा करने का विधान है ।

**प्रश्न 321. क्या घर में धार्मिक पुस्तकें रखने से आशातना होती है ?**

**उत्तर** श्रावक रत्नत्रयी का उपासक अर्थात् श्रमणोपासक कहलाता है, उसके घर में तो मोह को जीतने के लिए जिनमंदिर के साथ प्रभु के मार्ग रूप रत्नत्रयी का मंदिर भी होना चाहिए ।

ज्ञान तो दीपक तुल्य है, उसी से मार्ग का ख्याल आता है, अतः घर में ज्ञान की पुस्तकें रखने से नहीं, लेकिन नहीं रखने से महा आशातना होती है ।

रुपयों पर आगे-पीछे लिखा होता है, उसके बढ़ने पर आशातना का भय नहीं लगता है । नोट बढ़ जाए तो बाहर नहीं निकाल देते हैं-परंतु धार्मिक पुस्तकों में आशातना का डर लगता है । ज्ञानवृद्धि का साधन ही पुस्तक है । उसके प्रति भी आदर-बहुमान होना चाहिए । पुस्तक पर पैर आदि न लगे उसका ख्याल रखना चाहिए ।

**प्रश्न 322. भौतिक सुखों को छोड़कर दीक्षा लेना क्या जरूरी है ?**

**उत्तर** संसार के भौतिक सुख दूसरों को दुःख दिए बिना प्राप्त नहीं होते हैं ।

दूसरों को दुःख देंगे तो पाप का बंध होगा और फिर उस पाप के उदय से भविष्य में दुःख आएगा ।

सुख भोगकर फिर पुनः दुःख होना, इससे तो बेहतर है, उस सुख का ही त्याग कर देना ।

**जहर के लड्डू खाकर भूख का दुःख मिटाना और फिर मौत**

**का दुःख खड़ा करना, इससे तो ज्यादा समझदारी जहर का लड्डू छोड़कर भूख के दुःख को सहन कर लेना ।**

मोक्ष में जो सुख है, उसमें पाप का ही सर्वथा अभाव है ।

संसार में जो भी सुख है, उसके भोग में राग का पाप रहा हुआ है ।

संसार के भौतिक सुख में पर-पीड़ा अर्थात् हिंसा रही हुई है । भोजन के सुख के पीछे असंख्य जीवों की विराधना का पाप जुड़ा हुआ है, अतः उस सुख के त्याग में ही बुद्धिमत्ता है ।

Pure वस्तु चाहिए तो नकली वस्तु छोड़नी ही पड़ती है ।

मोक्ष में Pure सुख है, अतः उसे पाने के लिए नाशवंत-क्षणिक भौतिक सुख का त्याग जरूरी है ।

भौतिक सुखों के त्याग बिना आत्मिक-आध्यात्मिक वास्तविक सच्चे सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती है ।

अतः मोक्ष के साधनभूत दीक्षा के लिए भौतिक सुखों का त्याग खूब जरूरी है ।

**प्रश्न 323. 99% से भी अधिक लोग संसार में रहे हुए हैं और शादी करते हैं, 1% भी लोग दीक्षा नहीं लेते हैं तो क्या 99% लोगों का मार्ग गलत है ? क्या वे सब गलती कर रहे हैं ?**

**उत्तर** (1) सत्य का संबंध संख्याबल से नहीं है । संख्याबल ज्यादा हो वहाँ सब सत्य ही है, ऐसा एकांत नहीं है ।

हजारों मृग हों परंतु सिंह अकेला ही हो, फिर भी बलवान तो सिंह ही कहलाता है ।

बाजार में शाक-सब्जी की हजारों दुकानें होती हैं, परंतु रत्नों के व्यापारी तो थोड़े ही होते हैं, फिर भी कीमती तो रत्न ही कहलाते हैं ।

सेना में सेनापति एक ही होता है, जबकि सैनिक अनेक होते हैं, फिर भी बलवान तो सेनापति ही कहलाता है ।

दुनिया में गरीब लाखों-करोड़ों हैं, जबकि धनवान तो थोड़े ही होते हैं, फिर भी शक्तिशाली धनवान ही कहलाता है ।

दुनिया में बुद्धिशाली कम ही होते हैं, मूर्खों की ही भीड़ होती है। अतः संख्याबल कम हो जाने से साधु की कीमत कम नहीं हो जाती है।

(2) संयम-जीवन बाह्य दृष्टि से कष्टप्रद है, उसमें सहजतया दुःखों का स्वीकार और सुखों का त्याग है। संसार में अधिकांश जीव सुख के रागी हैं, वे इस सुख को छोड़ नहीं सकते हैं-इस कारण भी संयम का स्वीकार करनेवाले कम हैं।

**प्रश्न 324. गृहस्थ जीवन में रहकर धर्म नहीं कर सकते हैं ?**

**उत्तर** गृहस्थ को अपने जीवन-निर्वाह के लिए इच्छा अनिच्छा से भी पाप करने ही पड़ते हैं।

गृहस्थ के रसोड़े में छह काय के जीवों की विराधना है।

साधु के लिए भिक्षा भूषण है, किंतु गृहस्थ के लिए भिक्षा से जीवन निर्वाह करना दूषण ही है अतः गृहस्थ को जीवनयापन के लिए हिंसा आदि पाप करने ही पड़ते हैं।

संपूर्ण निष्पाप जीवन जीना हो तो साधुजीवन के सिवाय दूसरा कोई विकल्प नहीं है।

ऊँचे से ऊँचा बारह व्रतधारी श्रावक भी अपने जीवन में आंशिक पापों का त्याग कर सकता है, संपूर्ण पापों का त्याग उसके जीवन में संभव ही नहीं है।

इन सब कारणों से निष्पाप जीवन जीने के लिए संयम का स्वीकार अनिवार्य हो जाता है।

**प्रश्न 325. तरबूज, पपीता आदि फल पहले दिन सुधारकर (काटकर) दूसरे दिन उपयोग में ले सकते हैं क्या ?**

**उत्तर** नहीं ! फल को सुधारने के बाद एक रात्रि व्यतीत होने पर उसमें जीवोत्पत्ति हो जाती है। ऐसे फल बासी कहलाते हैं, अतः अभक्ष्य हो जाते हैं।

**प्रश्न 326. मंदिर में घंट कब बजाना चाहिए ?**

**उत्तर** प्रभुपूजा के आनंद की अभिव्यक्ति के लिए पूजा करने के बाद जिनालय में से बाहर निकलते समय घंट बजाना चाहिए।

**प्रश्न 327. पूजा के रेशमी वस्त्रों में सामायिक कर सकते हैं क्या ?**

**उत्तर** नहीं ! प्रभुपूजा में भक्ति की प्रधानता है, वहाँ बहुमूल्य वस्त्र व आभूषण चल सकते हैं ।

सामायिक में त्याग की प्रधानता है, अतः मूल्यवान वस्त्रों व आभूषणों का त्याग होता है ।

पूजा के वस्त्रों का उपयोग सिर्फ पूजा दरम्यान ही करना चाहिए । सामायिक के वस्त्रों में भी प्रभु की अंगपूजा (स्पर्शकर) नहीं कर सकते हैं ।

**प्रश्न 328. द्रव्यानुयोग किसे कहते हैं ?**

**उत्तर** जैन दर्शन के अनुसार समस्त विश्व षड् द्रव्यात्मक है । द्रव्य अर्थात् जिसमें गुण व पर्याय हैं । ऐसे षड् द्रव्यों का चिंतन-विचार जिसमें हो, उसे द्रव्यानुयोग कहते हैं ।

**प्रश्न 329. उमास्वाति वाचक क्या उपाध्याय थे ?**

**उत्तर** वर्तमान में वाचक-पाठक आदि शब्द उपाध्याय के पर्यायवाची रूप में आते हैं ।

परंतु नंदी सूत्र आदि आगम के अनुसार जो पूर्वगत सूत्र को पढ़ाते हैं, वे वाचक कहलाते हैं । अर्थात् जो पूर्वधर हों, उन्हें भी वाचक कहा जाता है ।

**प्रश्न 330. क्या आम का रस दूसरे दिन चलता है ?**

**उत्तर** नहीं, वह बासी हो जाने से अभक्ष्य हो जाता है ।

**प्रश्न 331. क्या गुरु भगवंत के आगे गहुँली में सिद्धशिला कर सकते हैं ?**

**उत्तर** हाँ ! वहाँ भी सिद्धशिला अवश्य करनी चाहिए । जो फल प्रभु से चाहिए, वही फल गुरु से भी माँगा जाता है ।

**प्रश्न 332. प्रतिक्रमण में अब्भुट्ठिओ अड्ढाइजेसु तथा सामायिक पारते समय हाथ की मुद्रा कैसी होनी चाहिए ?**

**उत्तर** (1) अब्भुट्ठिओ बोलते समय हाथ का पंजा उल्टा रखना चाहिए ।

(2) अड्ढाइजेसु में भी अब्भुट्ठिओ की तरह हाथ की मुद्रा होनी चाहिए ।

(3) पच्चक्खाण पारते समय एवं सामायिक पारते समय हाथ की मुट्ठी बंद कर चरवले पर रखनी चाहिए ।

**प्रश्न 333. वर्षीतप में तीन चौमासी को छट्ठ करना चाहिए ?**

**उत्तर** हाँ ! अनुकूलता हो तो त्रयोदशी-चतुर्दशी और शक्य न हो तो चतुर्दशी पूर्णिमा का भी छट्ठ कर सकते हैं ।

**प्रश्न 334. A.C. में बैठकर सामायिक कर सकते हैं क्या ?**

**उत्तर** नहीं ।

**प्रश्न 335. टी.वी. पर गुरु भगवंतों के प्रवचन सुन सकते हैं क्या ?**

**उत्तर** नहीं !

◆ गुरु भगवंत का प्रवचन विनय बहुमानपूर्वक सुनने की विधि है । उपाश्रय में प्रवचन गुरुवंदन करके सुनने की विधि हैं । T.V. के प्रवचन में कोई वंदन विधि नहीं होती है ।

◆ उपाश्रय में गुरु के सम्मुख भूमि पर बैठकर प्रवचन-श्रवण की विधि है ।

T.V. पर प्रवचन सोफासेट पर बैठकर जूठे मुँह, चलते-फिरते, बातें करते या नाश्ता-भोजन करते-करते भी सुना जाता है । यह सब अविनय जुड़ा होने से T.V. पर प्रवचन सुनने में नुकसान है ।

◆ T.V. पर प्रवचन सुनने में संतोष मानने वाला गुरु के प्रत्यक्ष संपर्क से दूर हो जाता है ।

उपाश्रय में प्रवचन सुनने के लिए आनेवाले को गुरुभक्ति आहार-पानी-औषध आदि का भी लाभ मिलता है । ये लाभ T.V. पर गुरु का प्रवचन सुननेवाले को नहीं मिलते हैं ।

**प्रश्न 336. सामूहिक भोजन में श्रीखंड के साथ उड़द या चने के ढोकले आदि खाने से क्या दोष लगता है ?**

**उत्तर** हाँ, कच्चे दूध, दही, श्रीखंड, छाछ के साथ दलहन की बनी वस्तुओं का मिश्रण होने से उसमें असंख्य बेइन्द्रिय जीव पैदा हो जाते हैं, अतः वह अभक्ष्य हो जाता है ।

**प्रश्न 337. आज कई संघों के स्नेह-सम्मेलन आदि में रात्रि-भोजन व अभक्ष्य-भक्षण होता है तो वह पाप किसे लगता है ?**

**उत्तर** जैन धर्म के मर्म को जानने-समझनेवाला न तो ऐसे कार्यक्रमों का स्वयं आयोजन करता है और न ही ऐसे आयोजनों में भाग लेता है ।

घर में कोई रात्रिभोजन करे तो उतना ही दोष लगता है, परंतु सामूहिक रात्रिभोजन का आयोजन करे तो सभी का पाप उस आयोजक को लगता है। अतः पापभीरु, दुर्गतिभीरु आत्मा को ऐसे आयोजन से सर्वथा दूर ही रहना चाहिए।

**प्रश्न 338. क्या साधारण खाते में से अजैन व्यक्ति को आर्थिक मदद कर सकते हैं ?**

**उत्तर** नहीं ! अजैन व्यक्ति को साधारण खाते में से नहीं बल्कि सर्व साधारण खाते में से मदद कर सकते हैं। साधारण खाते में से साधर्मिक को ही मदद कर सकते हैं।

**प्रश्न 339. राइ प्रतिक्रमण में सीमंधर स्वामी का चैत्यवंदन ईशानकोण दिशा के सम्मुख क्यों करना चाहिए ?**

**उत्तर** भरत क्षेत्र से सीमंधरस्वामी, महाविदेह क्षेत्र में ईशान दिशा में रहे होने से उस दिशा में मुँह करके चैत्यवंदन करना चाहिए।

**प्रश्न 340. रात्रि में साधु-भगवंत के उपाश्रय में बहनें व साध्वीजी के उपाश्रय में पुरुष जा सकते हैं क्या ?**

**उत्तर** नहीं ! बीमारी या अन्य कोई विशिष्ट अपवादिक कारण सिवाय साधुभगवंत के उपाश्रय में बहनों का एवं साध्वीजी के उपाश्रय में पुरुषों का जाना-आना सर्वथा निषिद्ध है।

**प्रश्न 341. कटासने का प्रमाण कितना होना चाहिए ?**

**उत्तर** सिद्धशिला के प्रतीक के रूप में 45 अंगुल प्रमाण सम-चौरस होना चाहिए।

कटासना ऊन का एवं सफेद होना चाहिए।

**प्रश्न 342. क्या 500 आयंबिल के चालू तप में नवपद या वर्धमान तप की ओली कर सकते हैं ?**

**उत्तर** हाँ !

**प्रश्न 343. अनादि मिथ्यादृष्टि जीव सर्वप्रथम कौनसा सम्यक्त्व प्राप्त करता है ?**

**उत्तर** कार्यग्रंथिक मत के अनुसार अनादि मिथ्यादृष्टि जीव सबसे पहले उपशम सम्यक्त्व ही प्राप्त करता है।

उपशम समकितवाली आत्मा सम्यक्त्व के अस्तित्व में तीन पुंज करती है, फिर समकित मोहनीय का उदय आ जाय तो वह क्षयोपशम सम्यक्त्व प्राप्त कर चौथे गुणस्थानक में रहती है । मिश्र पुंज उदय में आ जाय तो तीसरे गुणस्थानक में व मिथ्यात्व-पुंज उदय में आ जाय तो पहले गुणस्थानक में चली जाती है ।

**प्रश्न 344. तीर्थंकर नामकर्म निकाचित करनेवाली आत्मा भी नरक में जा सकती है क्या ?**

**उत्तर** तीर्थंकर नामकर्म की निकाचना के पूर्व नरक का आयुष्य बाँध लिया हो तो तीर्थंकर नाम कर्म की निकाचना करनेवाली आत्मा भी नरक में जा सकती है ।

**प्रश्न 345. खंडित क्षपक श्रेणी किसे कहते हैं ?**

**उत्तर** क्षपक श्रेणी पर चढ़ने के पहले ही किसी आत्मा ने नरक आयुष्य का बंध कर लिया हो तो वह आत्मा क्षपकश्रेणी का प्रारंभ कर अनंतानुबंधी चार कषाय और दर्शन मोहनीय की तीन प्रकृतियों का क्षयकर अर्थात् दर्शन क्षपक का क्षयकर रुक जाती हैं, उसे खंडित क्षपक श्रेणी कहते हैं ।

**प्रश्न 346. एक जीव अपने भवचक्र में कितनी बार क्षपक श्रेणी पर चढ़ सकता है ?**

**उत्तर** इस भवचक्र में जीव एक ही बार क्षपकश्रेणी पर चढ़कर घाति कर्मों का क्षयकर केवलज्ञान पाकर मोक्ष प्राप्त करता है ।

पूर्व में आयुष्य का बंधकर क्षपकश्रेणी पर कोई जीव चढ़ा हो तो वह खंडित क्षपकश्रेणी पर रुक जाता है, फिर दूसरे भव में पुनः क्षपक-श्रेणी पर चढ़कर सर्व कर्मों का क्षय कर मोक्ष प्राप्त करता है ।

**प्रश्न 347. क्षपकश्रेणी वाली आत्मा ग्यारहवें गुणस्थान पर चढ़ती है या नहीं ?**

**उत्तर** क्षपकश्रेणी वाली आत्मा दसवें में से सीधे बारहवें गुणस्थान में जाती है ।

उपशम श्रेणी पर चढ़ी हुई आत्मा ही ग्यारहवें गुणस्थान का स्पर्श करती है ।

**प्रश्न 348. ग्यारहवें गुणस्थान पर कौनसी आत्मा चढ़ती है ?**

**उत्तर** उपशम श्रेणी में रही हुई आत्मा ही ग्यारहवें `उपशांत मोह' गुणस्थानक तक चढ़ती है ।

**प्रश्न 349. दसवें गुणस्थानक के अंत में कौनसी आत्मा वीतराग बनती है ?**

**उत्तर** क्षपकश्रेणी पर चढ़ी हुई आत्मा दसवें गुणस्थानक के अंत में राग-द्वेष का सर्वथा क्षय कर वीतराग बन जाती है ।

उपशम श्रेणी में रही आत्मा को भी दसवें गुणस्थानक के अंत में राग-द्वेष उदय में नहीं होते हैं किंतु सत्ता में अवश्य होते हैं अतः वह वास्तव में वीतराग नहीं बनती है ।

**प्रश्न 350. कौनसे सम्यक्त्व में रहा जीव क्षपक श्रेणी प्रारंभ करता है ?**

**उत्तर** क्षयोपशम सम्यक्त्व में रही आत्मा ही क्षपक श्रेणी पर आरूढ़ होती है ।

हाँ ! पूर्वभव में क्षायिक सम्यक्त्व पाई हुई आत्मा हो तो वह क्षायिक सम्यक्त्व में भी क्षपक श्रेणी पर चढ़ती है ।

उपशम सम्यक्त्ववाली आत्मा क्षपकश्रेणी पर नहीं चढ़ सकती है ।

**प्रश्न 351. लोक किसे कहते हैं ?**

**उत्तर** जीव और पुद्गल जिस क्षेत्र सीमा में परिभ्रमण करते हैं उसे लोक कहते हैं ।

अर्थात् जीव और पुद्गल जहाँ रहते हैं उसे लोक कहते हैं । अजीव के एकदेश भाग आकाशास्तिकाय मात्र जहाँ है, उसे अलोक कहते हैं अथवा आकाश के जिस भाग में धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय आदि द्रव्य रहते हैं वह लोक कहलाता है ।

**प्रश्न 352. अलोक कितना बड़ा है ?**

**उत्तर** अलोक अनंत आकाशप्रदेशी है, इसका न कोई ओर है न छोर, यह अनंत व असीम है जिसका कोई निश्चित परिमाप नहीं है ।

**प्रश्न 353. लोक कितना बड़ा है ?**

**उत्तर** लोक 14 राज ऊँचा, ऊपर 1 रज्जू चौड़ा, ऊपरी मध्य भाग में 5 राज चौड़ा है । फिर घटते-घटते मध्य में 1 रज्जू चौड़ा रहता

है । तत्पश्चात् क्रमशः विस्तृत होता हुआ नीचे 7 राज चौड़ा है । इस प्रकार सम्पूर्ण लोक नीचे से ऊपर तक सीधा 14 राज लम्बा है और घनाकार माप से 343 राज परिमाण है । यानी सम्पूर्ण लोक के विषमस्थान को सम करने पर चौरस 7 राज लम्बा , 7 राज चौड़ा एवं 7 राज मोटा इस प्रकार 7 x 7 x 7 = 343 राज होते हैं । ऐसे लोक के 1 राज के लम्बे 1 राज के चौड़े व 1 राज के मोटे ऐसे समचौरस खंड किये जायें तो सम्पूर्ण लोक के 343 खण्ड होते हैं । जिनमें से 196 राज का अधोलोक एवं 147 राज का ऊर्ध्वलोक होता है ।

**प्रश्न 354. लोक के मुख्य कितने विभाग हैं ?**

**उत्तर** लोक के मुख्य तीन विभाग हैं– (1) अधोलोक (2) मध्यलोक (3) ऊर्ध्वलोक ।

**प्रश्न 355. अधोलोक की लम्बाई कितनी है ?**

**उत्तर** अधोलोक की लम्बाई 7 राजलोक से कुछ ज्यादा ।

**प्रश्न 356. मध्यलोक की लम्बाई कितनी है ?**

**उत्तर** 1800 योजन ।

**प्रश्न 357. ऊर्ध्वलोक की लम्बाई कितनी है ?**

**उत्तर** 7 राजलोक से कुछ कम ।

**प्रश्न 358. त्रस व स्थावर जीव लोक में कहाँ पर रहते हैं ?**

**उत्तर** 14 राज प्रमाण लोक में स्थावर जीव तो सर्वत्र व्याप्त हैं । त्रस जीव त्रसनाड़ी में रहते हैं ।

**प्रश्न 359. नरक स्थान कितने हैं एवं कौन-कौन से हैं ?**

**उत्तर** नरक स्थान सात हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं (1) रत्नप्रभा (2) शर्कराप्रभा (3) बालुकाप्रभा (4) पंकप्रभा (5) धूमप्रभा (6) तमप्रभा (7) तमस्तमप्रभा ।

**प्रश्न 360. सातों नरकों में कुल कितने नरकावास हैं ?**

**उत्तर**

| **नरक** | **नरकावास** |
|---|---|
| 1 | 30 ,00 ,000 |
| 2 | 25 ,00 ,000 |

| | |
|---|---|
| 3 | 15,00,000 |
| 4 | 10,00,000 |
| 5 | 3,00,000 |
| 6 | 99995 |
| 7 | 5 |

कुल 84 लाख नरकावास हैं ।

**प्रश्न 361. नारकी जीव कितने प्रकार की वेदना का अनुभव करते हैं ?**

**उत्तर** मुख्य रूप से तीन प्रकार की वेदना का अनुभव करते हैं ।
(1) क्षेत्रकृत वेदना (2) परमाधामी देवकृत वेदना
(3) परस्परोदीरित वेदना ।

**प्रश्न 362. नारकी जीवों को कितने रोग लगे रहते हैं ?**

**उत्तर** प्रत्येक नारकी जीव को 5 करोड़ 68 लाख 99 हजार 584 रोग लगे होते हैं ।

**प्रश्न 363. क्या नरक के जीव सर्वदा कुम्भियों में ही रहते हैं ?**

**उत्तर** नहीं । उत्पन्न कुम्भियों में होते हैं । तत्पश्चात् अन्तर्मुहूर्त में उनका शरीर फूल जाता है । कुम्भियों का पेट बड़ा एवं मुँह छोटा होता है जिससे वे बाहर निकल नहीं पाते हैं तब परमाधामी देवता उन जीवों को खींचकर बाहर निकालते हैं जिससे उनका शरीर पारे के समान बिखर जाता है, परन्तु क्षणभर में वह वापस मिल जाता है, फिर प्रतर के मध्य वाले एक हजार योजन के पोले भाग में जीवन पर्यन्त वेदना का वेदन करते हैं । प्रथम 3 नरक तक परमाधामी देव निकालते हैं, आगे वे स्वयं निकल जाते हैं, क्योंकि आगे वे देव नहीं जाते हैं ।

**प्रश्न 364. नारकी जीवों की उम्र कितनी होती है ?**

**उत्तर**

| नारकी | जघन्य | उत्कृष्ट |
|---|---|---|
| 1 | 10,000 वर्ष | 1 सागरोपम |
| 2 | 1 सागरोपम | 3 सागरोपम |
| 3 | 3 सागरोपम | 7 सागरोपम |
| 4 | 7 सागरोपम | 10 सागरोपम |

| | | |
|---|---|---|
| 5 | 10 सागरोपम | 17 सागरोपम |
| 6 | 17 सागरोपम | 22 सागरोपम |
| 7 | 22 सागरोपम | 33 सागरोपम |

**प्रश्न 365. क्या तीर्थंकर गोत्र बाँधने वाला जीव नरक में जा सकता है ?**

**उत्तर** हाँ ! तीर्थंकर गोत्र का बंधन करने के बाद भी जीव यदि पूर्व में नरकायु का बंध हो गया हो तो नरक में जा सकता है, लेकिन तीसरे नरक तक ही जा सकते हैं, आगे के नरकों में नहीं जाते ।

**प्रश्न 366. नरक से निकलकर जीव कितनी गतियों मे जा सकता है ?**

**उत्तर** दो गतियों में = (1) मनुष्य गति और (2) तिर्यंच गति ।

**प्रश्न 367. निगोद को नरक से निकृष्ट क्यों कहा गया है ?**

**उत्तर** नरक के जीव तो जघन्य 10,000 वर्ष एवं उत्कृष्ट 33 सागरोपम काल तक वहीं रहते हैं, जबकि निगोद के जीव नाड़ी के एक खटके में 17½ बार जन्म-मरण कर भारी वेदना का अनुभव करते हुए अनंतकाल तक वहाँ रहते हैं यानी स्थान कम और जीव ज्यादा होते हैं । इन सब कारणों से ही निगोद को नरक से निकृष्ट कहा गया है ।

**प्रश्न 368. दस भवनपति देवों के इन्द्र कितने हैं ?**

**उत्तर** दस भवनपति देवों के 20 इन्द्र हैं । 10 दक्षिण दिशावर्ती एवं 10 उत्तर दिशावर्ती । उनके नाम इस प्रकार हैं ।

| **दक्षिण दिशावर्ती** | **उत्तर दिशावर्ती** |
|---|---|
| 1. चमरेन्द्रजी | 1. बलेन्द्रजी |
| 2. धरणेन्द्रजी | 2. भूतेन्द्रजी |
| 3. वेणुदेवजी | 3. वेणुदालीजी |
| 4. हरिकान्तजी | 4. हरिशिखजी |
| 5. अग्निशिखजी | 5. अग्निमानवजी |
| 6. पूरणेन्द्रजी | 6. विशिष्टेन्द्रजी |
| 7. जलकान्तजी | 7. जलप्रभजी |
| 8. अमितगतिजी | 8. अमितवाहनजी |

| | |
|---|---|
| 9. वेलम्बनजी | 9. प्रभंजनजी |
| 10. घोषजी | 10. महाघोषजी |

**प्रश्न 369. भवनपति देवों के भवन कितने हैं ?**

**उत्तर** कुल 7 करोड़ 72 लाख भवन हैं। दक्षिण में 4 करोड़ 6 लाख, उत्तर में 3 करोड़ 66 लाख।

**प्रश्न 370. परमाधामी देव सम्यग्दृष्टि होते हैं या मिथ्यादृष्टि ? वे क्या वेदना पहुँचाते हैं ?**

**उत्तर** ये एकान्त मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं।

नरक में 15 परमाधामी की भयंकर वेदना

| | | |
|---|---|---|
| 1. | अंब | 500 योजन उछाले। |
| 2. | अंबरिस | छुरे से टुकड़ा करे। |
| 3. | श्याम | यष्टि-मुष्टि से प्रहार करे (मुट्ठी का प्रहार)। |
| 4. | सबल | आँत-हृदय को फाड़े। |
| 5. | रौद्र | भाला-बरछी से बिंधे। |
| 6. | महारौद्र | अंगोपांग छेदे। |
| 7. | काल | उबलते तेल में डाले। |
| 8. | महाकाल | मांस के टुकड़े खिलावे। |
| 9. | ईसिपत्र | तलवार से टुकडे करे |
| 10. | धनुष | बाणों से नाक, कान भेदे। |
| 11. | कुंभ | कुंभीपाक में पकावे। |
| 12. | बालुका | तपी हुई रेती में भूंजे। |
| 13. | वैतरणी | तपे हुए सीसे में डाले। |
| 14. | खरस्वर | काँटेवाले वृक्षों से रगड़े |
| 15. | महाघोष | पशुओं के समान बाड़े में डाले। |

**प्रश्न 371. तिर्छालोक कितना लम्बा-चौड़ा-मोटा एवं ऊँचा-नीचा है ?**

**उत्तर** तिर्छालोक। एक राज प्रमाण लम्बा-चौड़ा है एवं 1,800 योजन की मोटाईवाला है। समतल भूमि से 900 योजन नीचे तक एवं समतल भूमिसे 900 योजन ऊपर तक, यों कुल 1,800 योजन मोटा तिर्छालोक है।

**प्रश्न 372. तिर्छालोक की विशिष्टता क्या है ?**

**उत्तर** वैशिष्ट्य : 1) 63 शलाका पुरुषों की अवतरण भूमि व कर्मभूमि है।

2) तीर्थंकर महाप्रभु यहाँ तीर्थ का प्रवर्तन कर मोक्षमार्ग प्रशस्त करते हैं।

3) भव्य जीव तिर्छालोक से ही मुक्त होते हैं।

4) ज्योतिषी देवों का प्रकाश तिर्छालोक में ही है।

5) दिन-रात आदि काल का व्यवहार तिर्छालोक में ही है।

**प्रश्न 373. तिर्छालोक की क्या रचना है ?**

**उत्तर** तिर्छालोक के बीचों बीच वृत्ताकार `जम्बु' नामक द्वीप है। उसके चारों तरफ वलयाकार एक समुद्र है। उसके चारों तरफ वलयाकार एक द्वीप है। उसके चारों तरफ वलयाकर एक समुद्र है। इस प्रकार इस तिर्छालोक में एक द्वीप-एक समुद्र, एक द्वीप-एक समुद्र यों असंख्याता द्वीप, असंख्याता समुद्र हैं।

**प्रश्न 374. तिर्छालोक के समुद्रों का पानी कैसा है ?**

**उत्तर** लवण समुद्र का पानी नमक जैसा खारा है, वरुण समुद्र का पानी मदिरा जैसा है, क्षीर समुद्र का पानी क्षीर (दूध) जैसा है, घृत समुद्र का पानी घी जैसा है। कालोदधिसमुद्र का पानी साधारण पानी जैसा है, पुष्कर समुद्र का पानी साधारण पानी जैसा है, स्वयंभू-रमण समुद्र का पानी साधारण पानी जैसा है, शेष असंख्यात समुद्रों का पानी इक्षुरस जैसा है।

**प्रश्न 375. भरत क्षेत्र के कितने खंड हैं ?**

**उत्तर** भरत क्षेत्र के छह खंड हैं।

**प्रश्न 376. भरत क्षेत्र के छह खंड कैसे होते हैं ?**

**उत्तर** वैताढ्य पर्वत के बीच में आ जाने से भरत क्षेत्र के दो विभाग होते है–

1) दक्षिणार्द्ध भरत और 2) उत्तरार्द्ध भरत।

पुनः चूलहिमवंत पर्वत के पद्म द्रह से दो नदियाँ गंगा-सिंधु निकलकर उत्तरार्द्ध भरत में आती हैं। फिर वैताढ्य पर्वत के

नीचे से आती हुई दक्षिणार्द्ध भरत में प्रवाहित होती है, जिससे दोनों भरत क्षेत्रों के पुनः तीन-तीन विभाग हो जाते हैं। जिससे भरत क्षेत्र के कुल 6 खंड हो जाते हैं।

**प्रश्न 377. पांडुक वन कितना चौड़ा है ?**

**उत्तर** पांडुक वन 494 योजन का वलयाकार चौड़ा है।

**प्रश्न 378. पांडुक वन के बीच में क्या है ?**

**उत्तर** पांडुक वन के बीच में मेरु पर्वत की चूलिका है।

**प्रश्न 379. मेरु पर्वत की चोटी पर स्थित पांडुक वन की विशेष रचना क्या है ?**

**उत्तर** पांडुक वन में चारों दिशाओं में चार अभिषेक शिलाएँ हैं-1) पूर्व में पांडु शिला 2) दक्षिण में पांडु कंबल शिला 3) पश्चिम में रक्त शिला 4) उत्तर में रक्तकंबल शिला।

**प्रश्न 380. शिलाओं के ऊपर क्या है ?**

**उत्तर** उत्तर-दक्षिण वाली शिलाओं पर एक-एक सिंहासन है एवं पूर्व पश्चिम वाली शिलाओं पर दो-दो सिंहासन हैं।

**प्रश्न 381. सिंहासन पर कौन बैठता है ?**

**उत्तर** तीर्थंकर भगवन्तों का जन्म-महोत्सव मनाने आनेवाले इन्द्र सिंहासन पर बैठकर भगवान के बाल रूप को गोद में लेते हैं।

**प्रश्न 382. जम्बू द्वीप के 32 विजयों मे से उत्कृष्ट कितने विजयों में तीर्थंकर हो सकते हैं ?**

**उत्तर** सभी विजयों में हो सकते है।

**प्रश्न 383. जंबूद्वीप के महाविदेह में तीर्थंकर का विच्छेद पड़ता है या नहीं ?**

**उत्तर** नहीं ! महाविदेह में कभी भी तीर्थंकर भगवान का विच्छेद नहीं पड़ता है। कम-से-कम चार तीर्थंकर तो हर समय विराजमान रहते ही हैं।

**प्रश्न 384. चार तीर्थंकर किस-किस विजय में होते हैं ?**

**उत्तर** पूर्व महाविदेह एवं पश्चिम महाविदेह प्रत्येक के दो-दो खंड हैं। इन चारो में 8-8 विजय हैं। उन आठों में से किसी एक-एक में

एक-एक तीर्थंकर अवश्य होते हैं यानी (1-8) विजय में से किसी एक में (9-16) विजय मे से किसी एक में (17-24) विजय में से किसी एक में (25-32) विजय में से किसी एक में, यों चार तीर्थंकर महाविदेह में हर समय विराजमान होते हैं ।

**प्रश्न 385. वर्तमान में जम्बू द्वीप के महाविदेह में कितने विहरमान विराजमान हैं एवं वे कहाँ-कहाँ हैं ?**

**उत्तर** जम्बूद्वीप के महाविदेह में वर्तमान में चार विहरमान विराजमान हैं जो इन विजयों में हैं-8वीं विजय में सीमंधर स्वामी 25वीं विजय में युगमंधर स्वामी, 9वीं विजय में बाहुस्वामी, 24वीं विजय में सुबाहुस्वामी ।

**प्रश्न 386. इन्हें विहरमान क्यों कहते हैं ? इनकी उम्र, अवगाहना एवं केवली, साधु-साध्वी का परिवार कितना-कितना होता है ? अरिहंतों का बल कितना होता है ?**

**उत्तर** क्योंकि महाविदेह क्षेत्र में तीर्थंकर महाप्रभु का निरन्तर विहरण (विचरण) होता रहता है, इसलिए इन्हें विहरमान कहते हैं ।

विहरमान का संक्षिप्त परिचय–

| | | |
|---|---|---|
| उम्र | – | 84 लाख पूर्व |
| गृहस्थकाल | – | 83 लाख पूर्व |
| दीक्षा पर्याय | – | 1 लाख पूर्व |
| दीक्षा के बाद छद्मस्थ काल | – | 1 मास |
| केवली | – | 10 लाख |
| साधु | – | 100 करोड़ |
| साध्वी | – | 100 करोड़ |

**प्रश्न 388. जम्बूद्वीप की जगति के बाहर क्या है ?**

**उत्तर** जम्बूद्वीप की जगति के बाहर लवण समुद्र है ।

**प्रश्न 388. लवण समुद्र का माप क्या है ?**

**उत्तर** लवण समुद्र की चौड़ाई (विष्कम्भ) 2 लाख योजन की है । परिधि 15 लाख 81 हजार 739 योजन से थोड़ी कम है ।

**प्रश्न 389. लवण समुद्र का पानी कैसा है ?**

**उत्तर** लवण समुद्र का पानी स्वाद में नमक से भी खारा और तेल जैसा चिकना है। अस्वच्छ है रजमय है, भारी है। किसी भी मनुष्य, पशु-पक्षी के पीने योग्य नहीं है। सिर्फ उसमें उत्पन्न हुए जीव ही उसे पी सकते हैं।

**प्रश्न 390. क्या कारण है कि लवण समुद्र का पानी जम्बूद्वीप को जल-मग्न नहीं करता ?**

**उत्तर** जम्बूद्वीप में जो तीर्थंकर, केवली, चक्रवर्ती, वासुदेव, बलदेव प्रतिवासुदेव, साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका, समदृष्टि 14 नदियों की देवियाँ, प्रकृति से भद्र, विनीत, उपशान्त मनुष्य, महर्द्धिक देव-देवी, विद्याधर आदि रहते हैं, उनके पुण्य के प्रभाव से लवण समुद्र जम्बूद्वीप को जलमग्न नहीं करता है।

**प्रश्न 391. लवण समुद्र का मालिक कौन है ?**

**उत्तर** लवण समुद्र का मालिक सुस्थित नामक देव है।

**प्रश्न 392. वह देव कहाँ रहता है ?**

**उत्तर** लवण समुद्र की पश्चिम दिशा में गौतम नामक द्वीप है, उस द्वीप पर सुस्थित देव निवास करता है।

**प्रश्न 393. धात की खंड की कौन-कौन सी आठ विजयों में तीर्थंकर विराजमान हैं ?**

**उत्तर** पूर्व धात की खंड की आठवी, नवमी, चौबीसवीं, पच्चीसवीं विजय में और पश्चिम धातकीखंड की आठवीं, नवमी, चौबीसवीं, पच्चीसवीं, विजय में तीर्थंकर विराजमान हैं।

**प्रश्न 394. कालोदधि समुद्र कितना चौड़ा है ?**

**उत्तर** 8 लाख योजन की वलयाकार चौड़ाई में है।

**प्रश्न 395. इस समुद्र का पानी कैसा है ?**

**उत्तर** इसके पानी का रंग काला है एवं स्वाद में सामान्य पानी जैसा स्वादिष्ट एवं पुष्टिकारक है।

**प्रश्न 396. मानुषोत्तर पर्वत कहाँ पर है ?**

**उत्तर** मानुषोत्तर पर्वत पुष्करवर द्वीप के बीचों-बीच अवस्थित है ।

**प्रश्न 397. अर्द्ध-पुष्कर द्वीप की कौन-कौन सी विजय में विहरमान विचरण कर रहे हैं ?**

**उत्तर**

| | |
|---|---|
| पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीप की 8 वीं विजय में | चन्द्रबाहु स्वामी । |
| पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीप की 25 वीं विजय में | भुजंग स्वामी । |
| पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीप की 9 वीं विजय में | ईश्वर स्वामी । |
| पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीप की 24 वीं विजय में | नेमप्रभु स्वामी । |
| पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीप की 8 वीं विजय में | वीरसेन स्वामी । |
| पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीप की 25 वीं विजय में | महाभद्र स्वामी । |
| पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीप की 9 वीं विजय में | देवयश स्वामी । |
| पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीप की 24 वीं विजय में | अजितवीर्य स्वामी विराजमान हैं । |

**प्रश्न 398. 45 लाख योजन में द्वीप-समुद्र कितने हैं ?**

**उत्तर** 45 लाख योजन में ढ़ाई द्वीप एवं दो समुद्र हैं ।

**प्रश्न 399. समय क्षेत्र के पर्यायवाची शब्द क्या हैं ?**

**उत्तर** 1 मनुष्य क्षेत्र, 2 ढ़ाई द्वीप ।

**प्रश्न 400. ज्योतिषीदेव कितने हैं ?**

**उत्तर** ज्योतिषी देव पाँच हैं-चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, तारा ।

**प्रश्न 401. सम्पूर्ण ढाई द्वीप में कितने ज्योतिषी देव हैं ?**

**उत्तर** सम्पूर्ण ढाई द्वीप में 132 चन्द्रमा, 132 सूर्य, 11,676 ग्रह एवं 88,40,700 कोड़ाकोड़ी तारे हैं ।

**प्रश्न 402. एक-एक चंद्र-सूर्य का परिवार कितना है ?**

**उत्तर** एक-एक चंद्र व सूर्य के 88 ग्रह, 28 नक्षत्र व 66, 975 कोड़ा-कोड़ी तारा हैं ।

**प्रश्न 403. ऊर्ध्वलोक में कौन रहते हैं ?**

**उत्तर** ऊर्ध्वलोक में मुख्यतया वैमानिक देव रहते हैं ।

**प्रश्न 404. देवों के संतान होती है या नहीं ?**

**उत्तर** नहीं / देवताओं के संतान नहीं होती । वे तो स्वयं ही देवशय्या

में उत्पन्न हो जाते हैं। जब तक आयुष्य पूर्ण नहीं करते तब तक उस शय्या में दूसरा देव उत्पन्न नहीं होता है।

**प्रश्न 405. उनका पालन-पोषण कौन करता है ?**

**उत्तर** अन्तर्मुहूर्त में ही वे 32 वर्ष के युवा के समान बन जाते हैं, अतः पालन-पोषण की आवश्यकता नहीं होती है।

**प्रश्न 406. देवता कौनसा आहार करते हैं ?**

**उत्तर** देवता वैक्रिय पुद्गलों का आहार करते हैं।

**प्रश्न 407. क्या सभी देवता सम्यग्दृष्टि ही होते हैं ?**

**उत्तर** 5 अनुत्तर विमानवासी देव एकान्त सम्यग्दृष्टि होते हैं, किन्तु शेष सभी देवलोक के देवताओं में तीनों दृष्टियाँ हो सकती हैं। सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि एवं मिश्रदृष्टि। 15 परमाधामी, 31 किल्विषी एकांत मिथ्यादृष्टि होते हैं।

**प्रश्न 408. अनुत्तर विमान से ऊपर क्या है ?**

**उत्तर** अनुत्तर विमान से ऊपर सिद्धशिला है।

**प्रश्न 409. सिद्धशिला व अनुत्तर विमान में कितना अन्तर है ?**

**उत्तर** सर्वार्थसिद्ध विमान से 12 योजन ऊपर सिद्धशिला है।

**प्रश्न 410. सिद्धशिला कितनी लम्बी है ?**

**उत्तर** सिद्धशिला 45 लाख योजन लम्बी है।

**प्रश्न 411. सिद्धशिला का आकार कैसा है ?**

**उत्तर** सिद्धशिला का आकार उल्टे छत्र के आकार का है।

**प्रश्न 412. सिद्धशिला की परिधि कितनी है ?**

**उत्तर** सिद्धशिला की परिधि 1 करोड़ 42 लाख 30 हजार 49 योजन से कुछ ज्यादा है।

**प्रश्न 413. सिद्धशिला से लोकांत कितनी दूर है ?**

**उत्तर** 1 योजन।

**प्रश्न 414. सिद्धशिला किस चीज की बनी हुई है ?**

**उत्तर** पृथ्वीकाय की बनी हुई है।

**प्रश्न 415. सिद्धशिला के ऊपर कौन रहते हैं ?**

**उत्तर** सिद्ध भगवान।

**प्रश्न 416. क्या सिद्ध भगवान सिद्धशिला को स्पर्श करके विराजमान हैं ?**

**उत्तर** नहीं । सिद्धशिला के ऊपर जो 1 योजन है । उस एक योजन के ऊपर वाले एक कोस के छठे भाग में लोकान्त का स्पर्श करते हुए सिद्ध भगवान विराजमान रहते हैं ।

**प्रश्न 417. सिद्ध भगवान की अवगाहना कितनी होती है ?**

**उत्तर** सिद्ध भगवान की अवगाहना जघन्य 1 हाथ 8 अंगुल, मध्यम 4 हाथ 16 अंगुल, उत्कृष्ट 333 धनुष 32 अंगुल की है ।

**प्रश्न 418. कितनी अवगाहना वाले मनुष्य सिद्ध होते हैं ?**

**उत्तर** जघन्य 2 हाथ, मध्यम 7 हाथ, उत्कृष्ट 500 धनुष्य की अवगाहना वाले मनुष्य सिद्ध हो सकते हैं ।

**प्रश्न 419. किस-किस गति से जीव सिद्ध हो सकता है ?**

**उत्तर** मात्र मनुष्य गति से ।

**प्रश्न 420. शरीर को छोड़ने के बाद कितने समय में जीव लोकाग्र मे पहुँच जाता है ?**

**उत्तर** एक समय में ।

**प्रश्न 421. शरीर से मुक्त हुआ जीव किस दिशा में गति करता है ?**

**उत्तर** जिस स्थान से जीव मुक्त होता है, उसके बिल्कुल सीधी रेखा में ही गति करता है ।

**प्रश्न 422. सिद्ध भगवान लोक के बाहर क्यों नहीं जाते ?**

**उत्तर** जीव और पुद्गल दोनों धर्मास्तिकाय के आधार से गमन करते हैं । धर्मास्तिकाय लोक के अंदर-अंदर ही है, बाहर नहीं अतः सिद्ध भगवान लोक के बाहर नहीं जाते ।

**प्रश्न 423. लोक के बाहर क्या है ?**

**उत्तर** लोक के बाहर अलोक है, जहाँ छह द्रव्यों में से मात्र आकाशास्तिकाय एक है ।

**प्रश्न 424. सिद्धशिला की मोटाई क्या है ?**

**उत्तर** सर्वार्थसिद्ध के मध्य में वह आठ योजन स्थूल (मोटी) है । फिर

क्रमशः पतली होती-होती अन्तिम भाग मे मक्खी के पंख से भी अधिक पतली हो जाती है ।

**प्रश्न 425. सिद्ध भगवान की अवगाहना कितनी है ?**

**उत्तर** जीव चरम भव में जिस शरीर को धारण करता है उसकी जितनी अवगाहना होती है, उसका त्रिभाग न्यून सिद्धावस्था की अवगाहना होती है ।

**प्रश्न 426. ज्योतिषी देवों में लेश्या कौनसी होती है ?**

**उत्तर** तेजोलेश्या ।

**प्रश्न 427. अष्टमी, चतुर्दशी व महापर्व आदि के दिनों में पके फल आदि मंदिर में चढ़ा सकते हैं क्या ?**

**उत्तर** अष्टमी-चतुर्दशी आदि पर्व दिनों में स्वयं को त्याग करना है, अतः उन दिनों में सचित्त जल, सचित्त फल आदि खाने-पीने का निषेध है, परंतु प्रभु-भक्ति में तो सचित्त फल व अभिषेक में सचित्त जल का ही उपयोग करने का है ।

मंदिर में चढ़ाए फल जैनधर्म नहीं पाए हुए अजैनों को ही दिए जाते हैं, अतः सचित्त फल चढ़ाने में कोई दोष नहीं है ।

प्रभु भक्ति में उत्तम से उत्तम द्रव्यों का ही उपयोग करना चाहिए ।

**प्रश्न 428. श्रुतदेवता व श्रीदेवी किस निकाय के देवता हैं ?**

**उत्तर** भवनपति निकाय के हैं ।

**प्रश्न 429. मांसाहार त्याज्य क्यों है ?**

**उत्तर** मांसाहार तामसी आहार है, जो क्रोध व क्रूरता पैदा करता है । पंचेन्द्रिय की हत्या के बिना मांस पैदा नहीं होता है और उसमें उसी वर्ण के निगोद के जीव पैदा होते रहते हैं ।

**प्रश्न 430. मांसाहार में हिंसा है तो क्या शाकाहार में हिंसा नहीं है ?**

**उत्तर** शाकाहार या अन्नाहार में बिल्कुल हिंसा नहीं है, ऐसा तो नहीं कह सकते हैं, परंतु हिंसा के परिमाण में बहुत बड़ा अन्तर है ।

संपूर्ण अहिंसा तो सिद्धावस्था में ही `है इसीलिए उसी की प्राप्ति के लिए अल्प-से–अल्प हिंसा हो, ऐसा जीवन जीने की प्रेरणा दी जाती हैं ।

मांसाहार में पंचेन्द्रिय विकसित संज्ञी प्राणी की हिंसा है जबकि अन्नाहार में एकेन्द्रिय जीवों की हिंसा है ।

एक सामान्य व्यक्ति की हत्या और एक प्रधान मंत्री की हत्या ! हत्या दोनों में समान होने पर भी प्रधान मंत्री की हत्या बड़ा अपराध गिना जाता है ।

बड़े पशु को काटते या मारते समय उन्हें जो भयंकर वेदना होती है, उसका अनुभव तो उसी को होता है, फिर भी कोई अपने हाथ-पाँव या पेट में छुरी भोंक दे तो जो पीड़ा होती है उससे हम पशु की पीड़ा का ज्ञान कर सकेंगे ।

अन्न को पकाते या पीसते समय हृदय में क्रूरता-कठोरता नहीं आती हैं, परंतु बड़े प्राणी की हत्या के समय तो हृदय अति-अति कठोर बने बिना नहीं रहेगा !

**प्रश्न 431. क्या सिर्फ शाकाहार पर दुनिया टिक सकती है ?**

**उत्तर** इसका प्रति प्रश्न है-क्या मांसाहार पर सारी दुनिया टिक सकती है ? कदापि नहीं ।

–मांसाहारी को भी शाकाहार व अन्नाहार तो करना ही पड़ता है ।

–मांसाहार किए बिना हजारों लाखों व्यक्ति अपना जीवन-निर्वाह आराम से कर सकते हैं-परंतु सिर्फ मांसाहार पर टिकना किसी के लिए संभव नहीं है ।

–दुनिया में सभी अहिंसक, सत्यवादी या ब्रह्मचारी बन जाएंगे यह कभी संभव नहीं है । परंतु हितोपदेश के रुप में तो अहिंसक, सत्यवादी व ब्रह्मचारी बनने की ही प्रेरणा होगी ।

सारी दुनिया अहिंसक बने या न बने, हम अपने आपको तो अहिंसक बना सकते हैं ।

–मांसाहार से दाँत पीले हो जाते हैं और मसूड़े सड़ जाते हैं। मुँह से भी दुर्गंध आती है।

**प्रश्न 432. क्या कामकुंभ, कामधेनु आदि वर्तमान में उपलब्ध होते हैं ?**

**उत्तर** अंतिम पूर्वधर देवर्द्धि गणी क्षमाश्रमण के बाद 63 वस्तुओं का विच्छेद हो गया है, अतः चिंतामणिरत्न, कामकुंभ, प्रत्यक्ष देव का आगमन आदि नहीं है।

**प्रश्न 433. आत्मा का साक्षात्कार कब होता है ?**

**उत्तर** चार घातिकर्मों का क्षय होने पर आत्मा प्रत्यक्ष देखी जा सकती है।

**प्रश्न 434. रात्रि में पूजा का तिलक मस्तक पर रखना चाहिए या नहीं ?**

**उत्तर** तिलक में चंदन का अंश होने से सर्प के आगमन व सर्पदंश की संभावना होने से स्वयं के द्वारा ही तिलक को साफ करने की परंपरा चली आ रही है।

**प्रश्न 435. कच्चा पानी पीने में जितने जीव मरते हैं, उससे अधिक पानी को उबालने में मरते हैं तो गृहस्थ को अचित्त जलपान का विधान क्यों ?**

**उत्तर** (1) सचित्त जलपान से मन के परिणाम निष्ठुर बनते हैं अतः अचित्तजलपान का विधान है।

(2) सचित्त आहार-पानी कामवर्धक भी है, अतः काम को जीतने के लिए भी अचित्त आहार-पानी का विधान है।

(3) पानी को अच्छी तरह से उबाल देने पर वह आषाढ़ चातुर्मास में तीन, कार्तिक चातुर्मास में चार व फागुण चातुर्मास में पाँच प्रहर तक अचित्त रहता है, अतः उसमें उतने समय तक जीवोत्पत्ति नहीं होती है। कच्चे पानी में सतत जीवोत्पत्ति चालू रहती है।

**प्रश्न 436. द्वादशावर्त वंदन के बाद पुनः गुरुवंदन जरूरी है क्या ?**

**उत्तर** कई लोग `राइ मुहपत्ति' (द्वादशावर्तवंदन के बाद पुनः गुरु-

वंदन करते हैं । वास्तव में द्वादशावर्त वंदन (राइ-मुहपत्ति) में गुरुवंदन आ ही जाता है । अलग से पुनः वंदन की जरूरत नहीं है ।

**प्रश्न 437. यशोविजयजी उपाध्याय के ग्रंथों का प्रारंभ 'ऐं' अक्षर से क्यों होता है ?**

**उत्तर** पू. यशोविजयजी ने गंगातट पर 16 दिन सरस्वती का 'ऐँ' का जाप किया था । 'ऐं' सरस्वती का बीज मंत्र भी है, अतः उसी की स्मृति में कृतज्ञता रूप में उन्होंने अपने ग्रंथों का प्रारंभ 'ऐं' से किया है ।

**प्रश्न 438. तीर्थंकर बनने की इच्छा से बीस स्थानक तप कर सकते हैं क्या ?**

**उत्तर** 'जगत्' के जीव मात्र के कल्याण की कामना से तीर्थंकर बनने की इच्छा करे तो वह दोष रूप नहीं है, परंतु तीर्थंकर की ऋद्धि-समृद्धि देखकर उसे पाने की भावना से करे तो वह निदान रूप होने से निषिद्ध है ।

**प्रश्न 439. प्रभु को डंख देनेवाले साँप का नाम 'चंडकौशिक' था ?**

**उत्तर** नहीं ! साँप का कोई नाम नहीं होता है । परंतु वह सर्प पूर्व भव में 'कौशिक नाम का तापस था । उग्र स्वभाव होने से उसे 'चंडकौशिक' कहते थे ।

महावीर प्रभु ने उसे पूर्वभव के नाम से संबोधित किया था । वह नाम सुनते ही उसे जातिस्मरण ज्ञान हुआ और प्रतिबोध को पाया ।

**प्रश्न 440. सह शिक्षण से क्या नुकसान है ?**

**उत्तर** अनादि काल से आत्मा में मैथुन संज्ञा रही हुई है । योग्य निमित्त पाकर वह संज्ञा जागृत होती है । बालक का जीवन निर्दोष होता है, अतः बालक बालिकाएँ साथ में पढ़ें तो भी गलत चेष्टाएं देखने को नहीं मिलती हैं परंतु युवावस्था में प्रवेश के साथ ही मैथुन संज्ञा जागृत होने लगती है, अतः उस वय में सहशिक्षण से भयंकर नुकसान ही होता है ।

वर्तमान में देश में बलात्कार आदि की जो घटनाएँ हो रही हैं, उनमें मुख्य हिस्सा सहशिक्षण का ही है ।

मोम को यदि सुरक्षित रखना है तो उसे आग से बचाना ही चाहिए । आग के संपर्क में रहे और मोम न पिघले, यह शक्य नहीं है, उसी प्रकार स्त्री का निमित्त मिले तो पुरुष के अन्तर्मन में कामवासना को उत्तेजना मिलती ही है ।

**प्रश्न 441. बिल्ली चूहे को मार रही हो तो क्या चूहे को बचाने में दोष लगता है ?**

**उत्तर** नहीं ! ऐसे संयोगों में अपनी जीवदया की भावना ही पुष्ट होती है । चूहे को न बचाएँ तो व्यक्ति की क्रूरता बढ़ती है । दया तो सबसे बड़ा धर्म है, अतः अपने हृदय की कोमलता के रक्षण के लिए जीवदया की प्रवृत्ति करनी ही चाहिए ।

**प्रश्न 442. कोई मांसाहारी तर्क देता है कि मूंग के एक दाने में भी एक जीव है और भेड़-बकरी आदि पशु में भी एक जीव है, तो 100-200 मूंग के जीवों को मारकर खाने के बजाय एक बड़े प्राणी पशु को मारने में ज्यादा दोष क्यों ?**

**उत्तर** जीवत्व की दृष्टि से सभी जीव एक समान तो सिर्फ मोक्ष में है । संसार में जितने भी जीव हैं, उन सबके साथ एक समान व्यवहार नहीं कर सकते हैं ।

संसार में पुण्य व गुणों से जो बढ़कर है, उसकी कीमत अधिक ही आँकी जाती है ।

कोई व्यक्ति चींटी को मार डाले और कोई व्यक्ति हाथी को मार डाले तो हाथी को मारनेवाला ही बड़ा गुनहगार कहलाएगा । कोई पशु की हत्या करे और कोई मनुष्य की हत्या कर दे तो मनुष्य का हत्यारा ही बड़ा गुनहगार कहलाएगा ।

कोई सामान्य पागल व्यक्ति का खून कर दे और कोई प्राइम मिनिस्टर की हत्या कर दे तो प्राइम मिनिस्टर की हत्या करने वाला बड़ा गुनहगार कहलाता है ।

विकास की दृष्टि से जो आगे है, उसकी अधिक कीमत आँकी जाती है ।

मूंग में और भेड़ में जीवत्व की दृष्टि से एक समान जीव होने पर भी जीवत्व के विकास की दृष्टि में बहुत बड़ा अंतर है, अतः छोटे जीव की अपेक्षा बड़े जीव की हत्या में विशेष पाप है ।

वनस्पतिकाय में दुःख-दर्द की अभिव्यक्ति नहीं है, जबकि पंचेन्द्रिय प्राणी की हत्या करते समय उसके दुःख-दर्द की वेदना, हमारे लिए प्रत्यक्ष है । अतः अन्नाहार की अपेक्षा मांसाहार में पाप ज्यादा है ।

**प्रश्न 443. तीर्थंकर परमात्मा खड़े-खड़े आहार क्यों लेते हैं ?**

**उत्तर** तीर्थंकर परमात्मा केवलज्ञान न हो, तब तक कभी चैन से बैठते नहीं हैं, अतः आहार खड़े-खड़े लेते हैं । उनके पास तो वह अतिशय होता है कि उनकी आहारक्रिया चर्म चक्षु से किसी को दिखती नहीं है ।

केवलज्ञान होने के बाद वे छद्मस्थ मुनि के द्वारा लाया आहार बैठकर ही करते हैं ।

**प्रश्न 444. कच्चे पानी को अभक्ष्य न कहा और बर्फ को अभक्ष्य कहा, ऐसा क्यों ?**

**उत्तर** साधु के लिए तो कच्चा पानी भी सदैव अभक्ष्य अपेय ही है । परंतु गृहस्थ को कच्चा पानी अभक्ष्य-अपेय नहीं कहा, क्योंकि उसके बिना जीवन जीना मुश्किल है ।

2) शास्त्र में कहा है, `जत्थ जलं तत्थ वणं' जहाँ पानी पड़ा रहता है, वहाँ अनंतकाय साधारण वनस्पति पैदा हो जाती है ।

अतः बर्फ के भक्षण में अप्काय की जीवविराधना के साथ अनंत जीवों की भी हिंसा है ।

3) बर्फ आरोग्य की दृष्टि से भी घातक है । बर्फ भक्षण से जठराग्नि मंद हो जाती है, जिससे अनेक रोग पैदा होते हैं ।

4) सचित्त वस्तु विकारवर्धक है । सचित्त जल से भी बर्फ की विकारक शक्ति ज्यादा है ।

5) सर्वज्ञ कभी अहितकर बात नहीं करते हैं, अतः उन्होंने निषेध किया है तो अब किसी तर्क को अवकाश नहीं होना चाहिए । परम हितैषी ऐसे उनकी बात आंख मूंदकर मान लेनी चाहिए ।

**प्रश्न 445. साधु-साध्वीजी प्रभु की वासक्षेप पूजा करते हैं क्या ?**

**उत्तर** द्रव्य (धन) के त्यागी होने से साधु-साध्वी के लिए द्रव्यपूजा का निषेध है, वे वासक्षेप पूजा नहीं करते हैं ।

परंतु अंजनशलाका, प्रतिष्ठा, अठारह अभिषेक तथा विशेष प्रसंगों पर विधि-विधान के अनुसार वास (सुगंधित चूर्ण) का क्षेप करते हैं ।

**प्रश्न 446. नवकार महामंत्र में गणधरों को किस पद से नमस्कार किया जाता है ?**

**उत्तर** गणधर भगवंत विद्यमान होते हैं, तब गण-नायक आचार्य होने से नवकार के तीसरे पद से नमस्कार करते हैं तथा मोक्ष में जाने के बाद `नमो सिद्धाणं' पद से नमस्कार करते हैं ।

**प्रश्न 447. उजई का दोष कब नहीं लगता है ?**

**उत्तर** सूर्य के प्रकाश में दीपक की ज्योत (अग्नि की ज्वाला) आदि सचित्त होने पर भी उसका प्रकाश अचित्त हो जाता है अतः उस प्रकाश की उजई नहीं लगती है ।

खिड़की आदि में पारदर्शक काच न हो अर्थात् दूधियाकाच या रंगीन काच हो तो भी Light या दीपक के प्रकाश की उजई नहीं लगती है ।

**प्रश्न 448. उत्कृष्ट तप कितना करने का विधान है ?**

**उत्तर** आदिनाथ प्रभु के शासन में 1 वर्ष, बाईस तीर्थंकरों के शासन में (अजितनाथ से पार्श्वनाथ तक) 8 मास व प्रभु महावीर के शासन में 6 मास का उत्कृष्ट तप कहा है ।

**प्रश्न 449. वासुदेव मरकर कहाँ जाते हैं ?**

**उत्तर** पूर्वभव में नियाणा करके आए होने के कारण सभी वासुदेव मरकर नरक में ही जाते हैं ।

**प्रश्न 450. क्या रात्रि में गृहस्थ को चंदन-केसर का तिलक निकाल देना चाहिए ?**

**उत्तर** प्रभु की आज्ञा तो 24 घंटे वहन करने की है, फिर भी रात्रि में सोते समय चंदन की सुगंध से सर्प का उपद्रव न हो, इस आशंका से रात्रि में तिलक दूर किया जाता है ।

**प्रश्न 451. रात्रि में प्रतिक्रमण बाद मंदिर जाने की विधि क्या है ?**

**उत्तर** उत्सर्ग मार्ग से तो संध्या समय ही आरती मंगलदीप के बाद मंदिर मांगलिक कर दिया जाता है, फिर भी पर्युषण आदि में प्रभुजी की विशिष्ट आंगी आदि के दर्शन का प्रसंग हो तो प्रतिक्रमण बाद भी मंदिर जा सकते हैं ।

**प्रश्न 452. पौषध में पड़िलेहन की विधि का क्या क्रम है ?**

**उत्तर** पौषध में सुबह पहले खेश फिर वेष तथा शाम को प्रथम संथारा कर फिर अन्य वस्त्रों का पड़िलेहन किया जाता है ।

**प्रश्न 453. गुरु-प्रतिमा को तथा संध्या समय वंदन करते समय गृहस्थ को 'भातपाणीनो लाभ देजोजी' बोलना चाहिए या नहीं ?**

**उत्तर** सूत्र को अखंड रखने के लिए गृहस्थ को `भात पाणीनो लाभ देजोजी ।' भी अवश्य बोलना चाहिए ।

जैसे कि रात्रि में साधु-साध्वीजी को गोचरी जाने का विधान न होने पर भी सिर्फ पाठ को अखंड रखने के लिए सुबह के प्रतिक्रमण में श्रमण सूत्र बोलते समय `पडिक्कमामि गोअर चरियाए...।' पाठ भी अवश्य बोला जाता है ।

**प्रश्न 454. अंजीर का फल भक्ष्य है या अभक्ष्य ?**

**उत्तर** अंजीर बहुबीजा होने से अभक्ष्य है ।

**प्रश्न 455. प्रभु वीर की अंतिम देशना रात्रि में भी चालू थी क्या ?**

**उत्तर** हाँ ! निर्वाण के पूर्व प्रभु महावीर ने 16 प्रहर (48 घंटे) तक निरंतर देशना दी थी । प्रभु की देशना रात्रि में भी चालू थी ।

**प्रश्न 456. सामायिक में गुरुवंदन कर सकते हैं क्या ?**

**उत्तर** सामायिक में स्वाध्याय की प्रधानता है फिर भी गुरु से गाथा, वाचना लेनी है या व्याख्यान-श्रवण करना हो तो गुरुवंदन कर सकते हैं ।

**प्रश्न 457. क्या नवकार में नवपद है ?**

**उत्तर** नवकार व नवपद में पंच परमेष्ठी तो समान ही हैं । नवपद में जो सम्यग् दर्शन आदि चार पद हैं, वे गुणस्वरूप हैं । गुण, गुणी को छोड़कर स्वतंत्र नहीं रहते हैं अतः जहाँ पंच परमेष्ठी हैं, वहाँ सम्यग्दर्शन आदि पद भी हैं ही ।

**प्रश्न 458. कुमारगिरि पर्वत पर आचार्य सुस्थितसूरिजी म. की निश्रा में हुई आगमवाचना का श्रेय किस राजा को जाता है ?**

**उत्तर** महाराजा खारवेल को !

**प्रश्न 459. कल्याणमंदिर के रचयिता 'सिद्धसेनसूरि' को दिवाकर की पदवी किसने दी थी ?**

**उत्तर** महाराजा विक्रमादित्य ने ।

**प्रश्न 460. आ. जगच्चन्द्रसूरिजी को 'तपा' का विरुद किस राजा ने दिया था ?**

**उत्तर** आयड़ के महाराजा 'जैत्र सिंह' ने ।

**प्रश्न 461. कालिकाचार्य की बहन सरस्वती साध्वी का अपहरण किस राजा ने किया था ?**

**उत्तर** गर्दभिल्ल राजा ने ।

**प्रश्न 462. मानतुंगसूरिजी को किस राजा ने 44 बेड़ियों में जकड़ा था ?**

**उत्तर** भोज राजा ने ।

**प्रश्न 463. किस राजा के पुत्र को निर्यामणा कराते समय सोने का मंदिर बनाने की इच्छा हुई थी ?**

**उत्तर** कुमारपाल महाराजा ।

प्रवचन प्रभावक परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय **रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.**

द्वारा आलेखित 210 पुस्तकों में से प्राप्य हिन्दी भाषा में जैन धर्म का अमूल्य खजाना

| Sr. No. | पुस्तक क्र. | पुस्तक का नाम | मूल्य |
|---|---|---|---|
| | | **अध्यात्मयोगी पूं.पं.श्री पंन्यासजी म. का साहित्य** | |
| 1 | 100 | बीसवी सदी के महान योगी | 300/- |
| 2. | 161 | अजातशत्रु अणगार | 100/- |
| 3. | 201 | महान् योगी पुरुष | 85/- |
| 4. | 146 | आध्यात्मिक पत्र | 60/- |
| 5. | 178 | परम-तत्व की साधना भाग-2 | 150/- |
| 6. | 179 | परम-तत्व की साधना भाग-3 | 160/- |
| 7. | 183 | आत्म-उत्थान का मार्ग-भाग-1 | 125/- |
| 8. | 186 | आत्म-उत्थान का मार्ग-भाग-2 | 175/- |
| 9. | 193 | आत्म-उत्थान का मार्ग-भाग-3 | 150/- |
| 10. | 207 | मंत्राधिराज प्रवचन सार | 80/- |
| | | **जैन धर्म का पाठ्यक्रम** | |
| 1. | 107 | पंच-प्रतिक्रमण (भाग-1) | 100/- |
| 2. | 120 | पंच-प्रतिक्रमण (भाग-2) | 100/- |
| 3. | 132 | पंच-प्रतिक्रमण (भाग-3) | 125/- |
| 4. | 133 | पंच-प्रतिक्रमण (भाग-4) | 135/- |
| 5. | 123 | जीव विचार विवेचन | 60/- |
| 6. | 122 | नव तत्त्व-विवेचन | 60/- |
| 7. | 135 | दंडक सूत्र | 50/- |
| 8. | 194 | लघु संग्रहणी (जैन भूगोल) | 100/- |
| 9. | 127 | तीन भाष्य (चैत्यवंदन भाष्य, गुरुवंदन व पच्चक्खाण) | 150/- |
| 10. | 102 | कर्मग्रंथ-पहला (हिन्दी विवेचन) | 100/- |
| 11. | 196 | कर्मग्रंथ-दूसरा-तीसरा (हिन्दी विवेचन) | 70/- |
| 12. | 197 | चौथा-कर्मग्रंथ (हिन्दी विवेचन) | 55/- |
| 13. | 204 | पाँचवाँ-कर्मग्रंथ | 100/- |
| 14. | 205 | छठा-कर्मग्रन्थ | 160/- |
| 15. | 144 | आओ संस्कृत सीखें भाग-1 | 100/- |
| 16. | 164 | आओ ! प्राकृत सीखें भाग-1 | 125/- |
| 17. | 165 | आओ ! प्राकृत सीखें भाग-2 | 85/- |
| | | **वैराग्य पोषक ग्रंथ** | |
| 18. | 140 | वैराग्य शतक | 80/- |
| 19. | 156 | इन्द्रिय पराजय शतक | 50/- |
| 20. | 191 | संबोह-सित्तरि | 70/- |
| | | **जीवन-उपयोगी साहित्य** | |
| 21. | 13-14 | शांत सुधारस-हिन्दी विवेचना-भाग-1-2 | 140/- |
| 22. | 18-19 | जैन-महाभारत | 130/- |
| 23. | 34-35 | आग और पानी-भाग-1-2 | 115/- |
| 24. | 36 | शत्रुंजय यात्रा (तृतीय आवृत्ति) | 40/- |
| 25. | 42 | भक्ति से मुक्ति (पांचवी आवृत्ति) | 40/- |
| 26. | 84 | प्रभु दर्शन सुख संपदा | 60/- |
| 27. | 53 | श्रावक का गुण सौंदर्य | 125/- |
| 28. | 203 | प्रेरक-प्रवचन | 80/- |
| 29. | 97 | पर्युषण अष्टाह्निका प्रवचन | 100/- |
| 30. | 109 | आओ ! उपधान पौषध करें ! | 55/- |
| 31. | 128 | विविध-तपमाला | 100/- |
| 32. | 55 | विविध-देववंदन | 60/- |
| 33. | 200 | अमृत रस का प्याला | 300/- |
| 34. | 202 | बारह चक्रवर्ती | 64/- |
| 35. | 190 | संस्मरण | 50/- |
| 36. | 206 | Celibacy | 70/- |
| 37. | 61 | Panch Pratikraman Sootra | 60/- |
| 38. | 172 | रत्न-संदेश-भाग-1 | 150/- |
| 39. | 174 | रत्न-संदेश-भाग-2 | 150/- |
| 40. | 170 | आओ ! दुर्ध्यान छोड़े !! भाग-2 | 70/- |
| 41. | 134 | श्रीपाल-रास और जीवन-चरित्र | 160/- |
| 42. | 208 | श्रमण-क्रिया के मुख्य सूत्र | 200/- |
| 43. | 209 | मोक्ष-मार्ग के कदम | 120/- |
| 44. | 210 | शंका-समाधान (भाग-4) | 60/- |

Shubhay 98338 35899